Centre for Distance & Online Education
(CDOE)

Bachelor of Arts

(B.A.Ist year)
HISTORY SEMESTER- 1

C24HIS101T
Idea of Bharat

Discipline Specific Course (DSC)

Guru Jambheshwar University of Science & Technology
HISAR-125001

CONTENTS
C24HIS101T

Sr. No	Title Name	Author	Vatter	Pages
1	Unit-1 भारतवर्ष की अवधारणा अध्याय - 1 भारतवर्ष की अवधारणा और उसके राजनीतिक आयाम The Concept of Bharatavarsha and Its Political Dimensions	Dr Sandeep Bishnoi	Dr DHARAMBIR	3-26
2	अध्याय - 2 भारतीय ज्ञान परंपरा में काल और देश की संकल्पना The Concept of Time (Kāla) and Space (Deśa) in Indian Knowledge Tradition	Dr Sandeep Bishnoi	Dr DHARAMBIR	27-57
3	Unit-2 धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति अध्याय - 3 धर्म एवं दर्शन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा Dharma, Philosophy, Art & Culture; Indian View of Dharma & Philosophy; The Concept of Vasudhaiva Kutumbakam: Individual, Family, Society & World	Dr Sandeep Bishnoi	DrDHARAMBIR	58-94
4	अध्याय - 4 राजनीति एवं शासन व्यवस्था जनपद एवं ग्राम स्वराज्य की अवधारणा, भारतीय कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ Polity & Governance | Janapada & Gram Swarajya | Features of Indian Art & Culture	Dr Sandeep Bishnoi	Dr DHARAMBIR	95-130

	UNIT-3	Dr Sandeep Bishnoi	DrDHARAMBIR	131-167
5	विज्ञान, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था अध्याय - 5 प्राचीन भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं गणित स्वास्थ्य चेतना: आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर्यावरण संरक्षण: भारतीय दृष्टिकोण Science, Technology & Mathematics | Health Sciences: Ayurveda, Yoga & Naturopathy Environmental Conservation: Indian Perspective			
6	अध्याय - 6 भारतीय आर्थिक चिंतन कृषि, उद्योग, व्यापार एवं समुद्री वाणिज्य Indian Economic Thought | Agriculture | Industry | Trade & Maritime Commerce	Dr Sandeep Bishnoi	Dr DHARAMBIR	168-202
	UNIT-4	Dr Sandeep Bishnoi	DrDHARAMBIR	203-229
7	मानचित्र (भारत) अध्याय - 7 प्राचीन भारतवर्ष की राजनीतिक सीमाएँ प्राचीन काल में भारतीय कला के प्रमुख केंद्र Maps of India | Political Boundaries | Major Art Centers in Ancient India			
8	अध्याय - 8 प्राचीन भारत के प्रमुख जनपद एवं प्राचीन भारत में समुद्री वाणिज्य Major Janapadas of Ancient India | Maritime Commerce in Ancient India	Dr Sandeep Bishnoi	Dr DHARAMBIR	230-264

अध्याय - 1

भारतवर्ष की अवधारणा और उसके राजनीतिक आयाम
The Concept of Bharatavarsha and Its Political Dimensions

संरचना (Structure):

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 1	VATTER:DR DHARAMBIR
भारतवर्ष की अवधारणा और उसके राजनीतिक आयाम The Concept of Bharatavarsha and Its Political Dimensions	

संरचना (Structure):

- **1.0** — अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)
- **1.1** — प्रस्तावना (विस्तृत)
- **1.2** — भारतवर्ष: नामकरण, उद्गम और भौगोलिक परिकल्पना
  - 1.2.1 — 'भारतवर्ष' नाम का उद्गम और चार मत
  - 1.2.2 — भौगोलिक कल्पना (वैदिक से पौराणिक काल)
  - 1.2.3 — महाकाव्यों में भारतवर्ष
- **1.3** — राजनीतिक चिंतन: सैद्धांतिक आधार
  - 1.3.1 — राजधर्म की अवधारणा
  - 1.3.2 — सप्तांग राज्य-सिद्धांत
  - 1.3.3 — कौटिल्य का अर्थशास्त्र
- **1.4** — Check Your Progress (प्रथम)
- **1.5** — मण्डल सिद्धांत, चक्रवर्ती और गणतंत्र
- **1.6** — Check Your Progress (द्वितीय)
- **1.7** — समकालीन प्रासंगिकता (वसुधैव कुटुम्बकम् + NEP 2020)
- **1.8** — सारांश
- **1.9** — मुख्य शब्दावली (15 शब्द)
- **1.10** — Self-Assessment Test (दीर्घ + लघु + वस्तुनिष्ठ)
- **1.11** — Answers to Check Your Progress
- **1.12** — References / Suggested Readings

1.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- भारतवर्ष की अवधारणा का उद्गम, विकास और ऐतिहासिक महत्त्व समझ सकेंगे।
- वैदिक, पौराणिक और महाकाव्य साहित्य में भारतवर्ष के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वर्णन की व्याख्या कर सकेंगे।
- सप्तांग राज्य-सिद्धांत और राजधर्म की अवधारणाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित राजनीतिक चिंतन को समझ सकेंगे।
- मण्डल सिद्धांत और चक्रवर्ती साम्राज्य की राजनीतिक परिकल्पना का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- महाजनपद काल की गणतांत्रिक परंपराओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतवर्ष की राजनीतिक अवधारणाओं की समकालीन प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन और NEP 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्त्व का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक ऐसी सभ्यता है जिसकी जड़ें सहस्राब्दियों की गहराई में जाती हैं। यह केवल एक भूखंड का नाम नहीं है, बल्कि एक विराट सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक विचार-परंपरा का प्रतीक है। 'भारतवर्ष' की अवधारणा भारतीय चिंतन की उस मूलभूत धारणा को व्यक्त करती है जिसमें राष्ट्र को केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, अपितु एक जीवंत सत्ता के रूप में देखा जाता है — जिसकी अपनी आत्मा, अपनी संस्कृति, अपना धर्म और अपनी राजनीतिक परंपरा है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में भारतवर्ष का उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद, महाभारत, पुराणों और कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में मिलता है। इन ग्रंथों में भारतवर्ष को न केवल एक भूगोल के रूप में, बल्कि एक राजनीतिक-सांस्कृतिक इकाई के रूप में परिभाषित किया गया है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन पश्चिमी राजनीति विज्ञान से मौलिक रूप से भिन्न है। जहाँ पश्चिम में राज्य को एक अनुबंध (Social Contract) का परिणाम माना गया, वहीं भारत में राज्य को धर्म के आधार पर स्थापित एक नैतिक संस्था के रूप में देखा गया। राजधर्म, सप्तांग सिद्धांत, मण्डल नीति और चक्रवर्ती का आदर्श – ये सभी भारतीय राजनीतिक चिंतन की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं।

NEP 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का निर्णय इस दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना और उन्हें एक समृद्ध बौद्धिक परंपरा से जोड़ना है जो विश्व के प्राचीनतम ज्ञान-भंडारों में से एक है।

प्रस्तुत अध्याय में हम भारतवर्ष की अवधारणा का उद्गम, उसके भौगोलिक-सांस्कृतिक आयाम, प्राचीन राजनीतिक सिद्धांत, गणतांत्रिक परंपराएँ और आधुनिक प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

1.2 भारतवर्ष: नामकरण, उद्गम और भौगोलिक परिकल्पना

1.2.1 'भारतवर्ष' नाम का उद्गम और अर्थ

'भारतवर्ष' शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है – 'भारत' और 'वर्ष'। संस्कृत में 'वर्ष' का अर्थ है – देश, भू-खंड या क्षेत्र। इस प्रकार 'भारतवर्ष' का शाब्दिक अर्थ है – 'भरत का देश' या 'भरत-वंशियों की भूमि।'

'भारत' नाम की उत्पत्ति के संदर्भ में विभिन्न मत प्रचलित हैं:

- पौराणिक मत: विष्णुपुराण के अनुसार, प्रियव्रत के पुत्र 'भरत' के नाम पर इस भू-खंड का नाम भारतवर्ष पड़ा। राजा भरत ने इस विशाल भू-भाग को अपने पुत्रों में विभाजित किया, इसीलिए यह 'भारतवर्ष' कहलाया।
- ऋग्वैदिक मत: ऋग्वेद में 'भरत' जनजाति का उल्लेख मिलता है जो 'दशराज्ञ युद्ध' (दस राजाओं के युद्ध) में प्रसिद्ध हुई। इस जनजाति के नाम पर भी यह भूमि 'भारतवर्ष' कही जाने लगी।
- महाभारत कालीन मत: भरत चक्रवर्ती (दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र) के नाम पर भी 'भारत' नाम की व्युत्पत्ति मानी जाती है। महाभारत इसे 'नाभिखंड' भी कहता है।
- निरुक्त-आधारित मत: 'भ' (भव = सत्ता/प्रकाश), 'र' (रति = अनुरक्ति), 'त' (तत्परता) – इस व्याख्या के अनुसार भारत का अर्थ है – 'प्रकाश के प्रति अनुरक्त।'

विष्णुपुराण में भारतवर्ष की महिमा इन शब्दों में व्यक्त की गई है:

> उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।। – विष्णुपुराण, 2.3.1

अर्थात् – 'जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वह भारत नाम का देश है और वहाँ के लोग भारती संतान कहलाते हैं।'

1.2.2 भारतवर्ष की भौगोलिक कल्पना: वैदिक से पौराणिक काल तक

प्राचीन भारतीय साहित्य में भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओं का वर्णन अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। यद्यपि यह वर्णन कभी-कभी पौराणिक और काव्यात्मक है, तथापि इसके मूल में एक स्पष्ट भौगोलिक चेतना परिलक्षित होती है।

भारतवर्ष की सीमाएँ:

दिशा/क्षेत्र	भौगोलिक पहचान
उत्तर सीमा	हिमालय पर्वत (हिमाद्रि)
दक्षिण सीमा	हिंद महासागर (समुद्र)
पूर्व सीमा	ब्रह्मपुत्र क्षेत्र, असम, म्यांमार की सीमा
पश्चिम सीमा	सिंधु नदी, अरब सागर
केंद्रीय भाग	गंगा-यमुना का आर्यावर्त क्षेत्र
द्वीपीय भाग	लंका (श्रीलंका) सहित

मार्कण्डेय पुराण में सात कुलपर्वतों (कुल पर्वत-श्रृंखलाओं) का उल्लेख है – महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, विंध्य, पारियात्र और गंधमादन। इनके आधार पर भारतवर्ष को नौ खंडों (नवखंड) में विभाजित किया गया:

- इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रपर्ण, गभस्तिमत्, नागद्वीप, सौम्य, गंधर्व, वारुण और आर्यावर्त।

भागवत पुराण में भी भारतवर्ष के नौ भेद बताए गए हैं। आर्यावर्त इसका सबसे पवित्र और केंद्रीय भाग माना जाता था जहाँ वर्णाश्रम व्यवस्था का कठोरता से पालन होता था।

विष्णु पुराण (2.3.1) में भारतवर्ष की परिभाषा अत्यंत स्पष्ट रूप से दी गई है। इसके अनुसार समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित भूभाग 'भारतवर्ष' कहलाता है तथा वहाँ निवास करने वाली संतति 'भारती' कहलाती है। यह परिभाषा इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन काल में भी भारत को एक सुनिश्चित भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में पहचाना जाता था।

मनुस्मृति (2.22) में 'आर्यावर्त' की सीमा हिमालय और विंध्याचल के बीच तथा पूर्वी और पश्चिमी समुद्र के मध्य बताई गई है, जबकि सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच के क्षेत्र को 'ब्रह्मावर्त' कहा गया है। इन विभिन्न नामों से स्पष्ट होता है कि भारतीय भौगोलिक चिंतन समय के साथ विस्तृत होता गया और उसमें नदियों, पर्वतों तथा समुद्रों को सीमा-चिह्न के रूप में अपनाया गया।

1.2.3 महाकाव्यों में भारतवर्ष की राजनीतिक भूगोल

महाभारत में भारतवर्ष की राजनीतिक भूगोल का सर्वाधिक विस्तृत विवरण मिलता है। भीष्मपर्व के 'जम्बूखंड विनिर्माण पर्व' में जम्बूद्वीप के अंतर्गत भारतवर्ष का सविस्तार वर्णन है।

महाभारत में उल्लिखित भारतवर्ष के प्रमुख राजनीतिक क्षेत्र:

उत्तर-पश्चिम क्षेत्र	मध्य भारत	पूर्वी-दक्षिणी क्षेत्र
गांधार, कांभोज, मद्र	कुरु, पांचाल, मत्स्य	अंग, बंग, कलिंग
सिंध, सौवीर	काशी, कोशल, विदेह	मगध, चेदि, वत्स
आभीर, शूरसेन	अवंति, विदर्भ	अश्मक, कुंतल
बाह्लीक (बैक्ट्रिया)	निषाद, शबर	केरल, पांड्य, चोल

महाभारत का यह श्लोक भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता को व्यक्त करता है:

> एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। — मनुस्मृति 2.20

(इस देश में उत्पन्न द्विजों के समीप से पृथ्वी के सभी मनुष्यों को अपने-अपने आचार-विचार की शिक्षा लेनी चाहिए।)

रामायण में भी भारतवर्ष की भौगोलिक चेतना दिखाई देती है। किष्किंधाकांड में सीता की खोज के लिए वानर-दलों को चारों दिशाओं में भेजते समय सुग्रीव अनेक पर्वतों, नदियों और जनपदों

के नाम गिनाते हैं, जिनसे उस समय के भौगोलिक ज्ञान का पता चलता है। महाभारत के भीष्मपर्व में गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों तथा अनेक जनपदों का उल्लेख है। इस प्रकार दोनों महाकाव्य भारतवर्ष को केवल राजनीतिक क्षेत्र नहीं, बल्कि पवित्र नदियों और तीर्थों से जुड़ी एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ किया।

1.3 भारतीय राजनीतिक चिंतन: सैद्धांतिक आधार

1.3.1 राजधर्म की अवधारणा

भारतीय राजनीतिक चिंतन में 'राजधर्म' एक केंद्रीय अवधारणा है। यह राज्य और शासन के नैतिक आधार को परिभाषित करती है। राजधर्म का तात्पर्य है – राजा के वे कर्तव्य जो उसे धर्म (नैतिक व्यवस्था) को बनाए रखने के लिए निभाने होते हैं।

राजधर्म के मुख्य स्रोत:

- महाभारत का शांतिपर्व – यह राजधर्म का सर्वाधिक विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।
- मनुस्मृति – राज्य व्यवस्था, दंड-नीति और राजा के कर्तव्यों का विस्तृत विवरण।
- कामन्दकीय नीतिसार – राजनीति के व्यावहारिक पक्षों का निरूपण।
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र – राज्यनीति का सर्वाधिक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ग्रंथ।

राजधर्म के प्रमुख तत्त्व:

राजधर्म का तत्त्व	विवरण
प्रजापालन	प्रजा की सुरक्षा और कल्याण राजा का प्रथम कर्तव्य
दंडनीति	न्याय एवं दंड का उचित प्रयोग – न अति कठोर, न अति उदार
कोशसंचय	राज्य की आर्थिक समृद्धि और खजाने की देखभाल

मित्र-सम्पादन	मित्र राज्यों से संबंध और कूटनीति
आत्म-संयम	राजा का स्वयं इंद्रिय-संयम और नैतिक आचरण
लोकहित	व्यक्तिगत हित से ऊपर प्रजाहित को प्राथमिकता

महाभारत में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को राजधर्म की शिक्षा देते हुए कहते हैं:

> यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः। यश्च विप्रो न पठति त्रयस्ते नाम बिभ्रति।। — महाभारत, शांतिपर्व

भीष्म का मत है कि जो राजा अपने राजधर्म का पालन नहीं करता, वह राजा के नाम का अधिकारी नहीं है। राजा को प्रजा का पितृवत् संरक्षक होना चाहिए।

1.3.2 सप्तांग राज्य-सिद्धांत

भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य के सात अंगों (सप्तांग) का सिद्धांत अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इसका सर्वाधिक व्यवस्थित प्रतिपादन मिलता है। इस सिद्धांत के अनुसार, एक पूर्ण और सक्षम राज्य के सात आवश्यक अंग होते हैं:

कौटिल्य के अनुसार सप्तांग:

> स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः। — अर्थशास्त्र, 6.1

क्र.	अंग (Element)	अर्थ एवं महत्त्व
1	स्वामी (राजा)	राज्य का मुखिया — उसके गुण, क्षमता और नैतिकता राज्य की नींव हैं

2	अमात्य (मंत्री)	कुशल, बुद्धिमान और ईमानदार मंत्रिमंडल
3	जनपद (प्रजा एवं भूमि)	जनसंख्या, कृषि योग्य भूमि और संसाधन
4	दुर्ग (किला/सुरक्षा)	रक्षात्मक संरचनाएँ और सैन्य सुरक्षा का आधार
5	कोश (राजकोश)	राज्य का खजाना – सभी कार्यों का आधार
6	दंड (सेना)	अनुशासित और कुशल सशस्त्र बल
7	मित्र (मित्र राज्य)	विश्वसनीय मित्र और कूटनीतिक संबंध

कौटिल्य ने इन सातों अंगों की परस्पर निर्भरता को स्वीकार किया है। उनके अनुसार सभी अंग महत्त्वपूर्ण हैं, परंतु किसी एक के कमजोर होने पर समग्र राज्य कमजोर हो जाता है। इस सिद्धांत की तुलना अक्सर आधुनिक राजनीति विज्ञान के 'राज्य के तत्त्वों' (जनसंख्या, भूमि, सरकार, संप्रभुता) से की जाती है, परंतु भारतीय सप्तांग अधिक व्यापक और व्यावहारिक है।

1.3.3 कौटिल्य का अर्थशास्त्र: एक राजनीतिक महाग्रंथ

आचार्य कौटिल्य (चाणक्य) का अर्थशास्त्र (लगभग 300 ईसा पूर्व) भारतीय राजनीतिक चिंतन का सर्वाधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ 1905 में पुनः खोजा गया और इसने विश्व के राजनीतिक विचारकों को अचंभित कर दिया।

अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु:

अधिकरण (भाग)	विषय-वस्तु
विनयाधिकरण (प्रथम)	राजा की शिक्षा, मंत्री-नियुक्ति, गुप्तचर व्यवस्था
अध्यक्षप्रचार (द्वितीय)	प्रशासनिक अधिकारी, कोष, भंडार, खान-पान विभाग
धर्मस्थीय (तृतीय)	नागरिक कानून, संपत्ति, विवाह, दत्तक
कण्टकशोधन (चतुर्थ)	आपराधिक कानून, जेल, न्याय व्यवस्था
योगवृत्त (पंचम)	राजकीय मंत्रियों का वेतन और गुप्तचर कार्य
मण्डलयोनि (षष्ठम्)	विदेश नीति के सिद्धांत, मण्डल सिद्धांत
षाड्गुण्य (सप्तम)	संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय
व्यसनाधिकारिक (अष्टम)	राज्य की आंतरिक कमजोरियाँ
अभियासिकी-पञ्चम् (नवम्)	राजा की सेना और युद्ध की तैयारी
युद्धतन्त्र (दशम-पञ्चदश)	युद्धनीति, घेराबंदी, रणनीति

कौटिल्य का प्रसिद्ध कथन है:

> प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्।। – अर्थशास्त्र, 1.19

(प्रजा के सुख में राजा का सुख है, प्रजा के हित में राजा का हित है। राजा का अपना प्रिय हित नहीं होता, बल्कि प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा का हित होता है।)

यह विचार आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा से मेल खाता है और सिद्ध करता है कि भारत में लोककल्याण की राजनीतिक परंपरा अत्यंत प्राचीन है।

1.4 अपनी प्रगति जाँचें (Check Your Progress)

रिक्त स्थान भरिए / सही-गलत बताइए:

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ 'भारतवर्ष' शब्द _____ और _____ के संयोग से बना है।

□ कौटिल्य के अनुसार सप्तांग में राज्य के _____ अंग होते हैं।

□ विष्णुपुराण के अनुसार भारतवर्ष _____ के उत्तर और _____ के दक्षिण में स्थित है।

□ राजधर्म का सर्वाधिक विस्तृत विवेचन महाभारत के _____ पर्व में है।

(ब) सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

□ कौटिल्य का अर्थशास्त्र 1905 में पुनः खोजा गया था।
( )

□ भारतवर्ष में 'वर्ष' का अर्थ 'वर्षा' होता है।
( )

□ सप्तांग सिद्धांत में मित्र राज्य को भी एक अंग माना गया है।
( )

□ राजधर्म के अनुसार राजा को प्रजा से अधिक अपना हित सोचना चाहिए।
( )

1.5 राजनीतिक विस्तार: मण्डल सिद्धांत, गणतंत्र और चक्रवर्ती

1.5.1 मण्डल सिद्धांत: अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रथम सिद्धांत

कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत भारतीय राजनीतिक चिंतन की सर्वाधिक मौलिक देन है। यह सिद्धांत राज्यों के परस्पर संबंधों की व्याख्या करता है और आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत से कई शताब्दी पूर्व विकसित हुआ था।

मण्डल का शाब्दिक अर्थ है – वृत्त या चक्र। कौटिल्य के अनुसार, प्रत्येक राज्य अपने चारों ओर अन्य राज्यों से घिरा रहता है और उनके साथ स्वाभाविक मित्रता या शत्रुता का संबंध होता है:

मण्डल की मूल संरचना:

- विजिगीषु (Vijigishu) – वह राजा जो विजय चाहता है (केंद्रीय राजा)
- अरि (Ari) – विजिगीषु का शत्रु राज्य (निकटवर्ती)
- मित्र (Mitra) – विजिगीषु का स्वाभाविक मित्र (अरि के दूसरी ओर)
- अरिमित्र – शत्रु का मित्र
- मित्रमित्र – मित्र का मित्र
- अरिमित्रमित्र – शत्रु के मित्र का मित्र

यह सिद्धांत 'शत्रु का शत्रु मित्र होता है' के नियम पर आधारित है। इसका तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक भू-राजनीति (Geopolitics) से किया जाता है। कौटिल्य ने बारह राजाओं का एक मण्डल बताया जिसमें एक केंद्रीय राजा के चारों ओर मित्र, शत्रु और उदासीन राज्यों की व्यवस्था होती है।

आधुनिक संदर्भ में यह सिद्धांत भारत की पड़ोस नीति को समझने में सहायक है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध आज भी किसी न किसी रूप में मण्डल सिद्धांत की व्याख्या के अंतर्गत समझे जा सकते हैं।

1.5.2 षाड्गुण्य नीति: विदेश नीति के छह साधन

कौटिल्य ने विदेश नीति संचालन के लिए छह साधनों (षाड्गुण्य) का वर्णन किया है:

साधन	अर्थ	प्रयोग-स्थिति
संधि	शांतिपूर्ण समझौता	जब दोनों राज्य समान शक्ति के हों
विग्रह	युद्ध/संघर्ष	जब विजय संभव हो
यान	सैन्य अभियान	आक्रमण की स्थिति में
आसन	तटस्थता/प्रतीक्षा	अनुकूल समय की प्रतीक्षा
द्वैधीभाव	दोहरी नीति	एक से संधि, दूसरे से युद्ध
संश्रय	शरण लेना	संकट में शक्तिशाली का सहारा

कौटिल्य के अनुसार इन छह साधनों का प्रयोग राजा को अपनी तथा शत्रु की शक्ति का आकलन करने के बाद ही करना चाहिए। उनका सिद्धांत है कि यदि राजा स्वयं को शत्रु से दुर्बल पाए तो संधि करे, बलवान हो तो विग्रह (युद्ध) करे, और दोनों समान हों तो आसन (प्रतीक्षा) की नीति अपनाए। इसके साथ ही राजा को 'क्षय, स्थान और वृद्धि' की अपनी स्थिति का विचार करना चाहिए, अर्थात् वही नीति अपनानी चाहिए जिससे राज्य की उन्नति हो। ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस निकेटर के बीच लगभग 305 ई.पू. की संधि को देखा जा सकता है, जिसमें सेल्यूकस ने पश्चिमोत्तर के कुछ क्षेत्र सौंपे और बदले में चंद्रगुप्त ने उसे लगभग 500 हाथी दिए।

1.5.3 चक्रवर्ती साम्राज्य का आदर्श

'चक्रवर्ती' भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक आदर्श शासक-प्रतीक है। 'चक्र' (पहिया/चक्र) और 'वर्तिन्' (घुमाने वाला) से मिलकर बना यह शब्द उस राजा को इंगित करता है जिसका शासन-चक्र समस्त पृथ्वी पर घूमता है।

चक्रवर्ती की विशेषताएँ:

- अश्वमेध यज्ञ का सफलतापूर्वक सम्पादन – जिसमें राज्य की सीमाओं को मान्यता मिलती थी
- दिग्विजय – चारों दिशाओं में विजय-अभियान
- सप्तरत्न – चक्र, हाथी, घोड़ा, मणि, स्त्री, गृहपति और परिणायक
- धर्म-पालन – नैतिक और धार्मिक शासन
- प्रजा-कल्याण – प्रजा की सुख-समृद्धि सुनिश्चित करना

ऐतिहासिक चक्रवर्ती सम्राट:

सम्राट	**काल एवं विशेषता**
भरत चक्रवर्ती	पौराणिक काल – जिनके नाम पर 'भारत' नाम पड़ा
चंद्रगुप्त मौर्य	लगभग 321-297 ई.पू. – प्रथम ऐतिहासिक चक्रवर्ती
अशोक महान	लगभग 269-232 ई.पू. – धर्म-चक्रवर्ती, अहिंसा का प्रचार
समुद्रगुप्त	लगभग 335-375 ई. – 'भारत का नेपोलियन' – दिग्विजय
हर्षवर्धन	लगभग 606-647 ई. – उत्तर भारत का अंतिम महान चक्रवर्ती

1.5.4 महाजनपद काल और गणतांत्रिक परंपराएँ

600-300 ईसा पूर्व का महाजनपद काल भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। इस काल में न केवल राजतांत्रिक (Monarchical) बल्कि गणतांत्रिक (Republican) राज्य-व्यवस्थाएँ भी विद्यमान थीं।

सोलह महाजनपद:

उत्तर-पश्चिम	मध्य गंगा मैदान	पूर्वी एवं दक्षिणी
गांधार (तक्षशिला)	कुरु (हस्तिनापुर)	अंग (चंपा)
कांभोज	पांचाल (अहिच्छत्र)	मगध (राजगृह/पाटलिपुत्र)
मद्र	काशी (वाराणसी)	वत्स (कौशांबी)
शूरसेन (मथुरा)	कोशल (श्रावस्ती)	अवंति (उज्जैन)
मत्स्य (विराटनगर)	विदेह (मिथिला)	चेदि (शुक्तिमती)
अश्मक (गोदावरी)	वज्जि (वैशाली)	मल्ल (कुशीनगर)

गणतांत्रिक राज्य (Gana-Sanghas):

वज्जि संघ (Vajjian Confederacy) – वैशाली केंद्रित यह संघ विश्व का प्रथम ज्ञात गणतंत्र माना जाता है। हालांकि इतिहासकारों की इसे लेकर अलग-अलग धारणाएं हैं। इसकी विशेषताएँ थीं:

- नियमित रूप से संसद (सन्निपात) की बैठक
- बहुमत से निर्णय लेने की प्रक्रिया
- निर्वाचित अधिकारी (राजन्/गणपति)
- नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा
- न्याय की स्वतंत्र व्यवस्था

बौद्ध ग्रंथों में वर्णित है कि बुद्ध ने वज्जि संघ की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा था कि जब तक लिच्छवि अपनी परंपराओं का पालन करते रहेंगे – नियमित सभाएँ करते रहेंगे, सर्वसम्मति से निर्णय लेते रहेंगे – तब तक उनका पतन नहीं होगा।

1.6 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- मण्डल सिद्धांत में 'विजिगीषु' से क्या तात्पर्य है?
- षाड्गुण्य नीति के किन्हीं तीन साधनों का नाम और अर्थ बताइए।
- चक्रवर्ती सम्राट के कोई तीन गुण या विशेषताएँ लिखिए।
- महाजनपद काल में गणतांत्रिक राज्यों की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

1.7 समकालीन प्रासंगिकता: वसुधैव कुटुम्बकम् से NEP 2020 तक

1.7.1 वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन

'वसुधैव कुटुम्बकम्' – 'समस्त पृथ्वी एक परिवार है' – यह भारतीय राजनीतिक-सांस्कृतिक चिंतन का सर्वाधिक उदार और मानवीय सिद्धांत है। यह महोपनिषद् और हितोपदेश में उद्धृत है:

> अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। – महोपनिषद् 6.71-75

(यह मेरा है, यह पराया है – ऐसी गणना क्षुद्र मन वाले करते हैं। उदार हृदय वालों के लिए तो समस्त पृथ्वी ही एक परिवार है।)

यह विचार आधुनिक काल में भारत की विदेश नीति का मूल सिद्धांत बन गया है। भारत की G20 अध्यक्षता (2023) का आधिकारिक थीम 'वसुधैव कुटुम्बकम् – एक पृथ्वी, एक परिवार,

एक भविष्य' था, जो इस प्राचीन भारतीय दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव भारतीय परंपरा में केवल उपदेश तक सीमित नहीं रहा, बल्कि व्यवहार में भी दिखाई देता है। सम्राट अशोक ने अपने धर्म-लेखों (शिलालेख 12) में विभिन्न मतों के प्रति सहिष्णुता और परस्पर आदर पर बल दिया तथा धर्म-प्रचारकों को देश-विदेश तक भेजा। इसी प्रकार 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की प्रार्थना प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करती है। यह दृष्टि 'हम बनाम वे' के भेद को कम करके सहयोग, सह-अस्तित्व और वैश्विक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है, जो आज के वैश्वीकृत विश्व में और अधिक प्रासंगिक हो गई है।

1.7.2 भारतीय राजनीतिक परंपरा और आधुनिक भारत

भारतीय संविधान निर्माताओं ने प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन से अनेक तत्त्व ग्रहण किए हैं:

प्राचीन भारतीय अवधारणा	आधुनिक संवैधानिक समकक्ष
राजधर्म (Rajadharma)	संवैधानिक नैतिकता एवं शासन (Good Governance)
सप्तांग – जनपद	संघीय ढाँचा (Federal Structure)
गण-संघ (Republican Councils)	संसदीय लोकतंत्र
सभा एवं समिति	राज्यसभा एवं लोकसभा
दंडनीति	कानून का शासन (Rule of Law)
वसुधैव कुटुम्बकम्	विदेश नीति में अहिंसा एवं शांति
कोशसंचय	राज्य का वित्तीय उत्तरदायित्व
मण्डल सिद्धांत	पड़ोस नीति (Neighbourhood Policy)

संविधान-निर्माण के समय भारतीय परंपरा के अनेक प्रतीकों को भी स्वीकार किया गया। राष्ट्रीय चिह्न सारनाथ के अशोक-स्तंभ के सिंह-शीर्ष से लिया गया है, राष्ट्रध्वज में अशोक चक्र (धर्मचक्र) अंकित है और 'सत्यमेव जयते' का आदर्श-वाक्य मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने संविधान सभा में अपने अंतिम भाषण (25 नवंबर 1949) में प्राचीन भारत के गणराज्यों और बौद्ध संघों की संसदीय कार्य-पद्धति का उल्लेख करते हुए संकेत दिया था कि भारत लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से अपरिचित नहीं था। नीति-निर्देशक तत्त्वों में ग्राम-पंचायतों के गठन (अनुच्छेद 40) और अंतर्राष्ट्रीय शांति के संवर्धन (अनुच्छेद 51) जैसे प्रावधान भी इसी परंपरा की झलक देते हैं।

1.7.3 NEP 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) को केंद्रीय स्थान देने का एक ऐतिहासिक प्रयास है। इसके अंतर्गत:

- स्नातक पाठ्यक्रम में IKT का एक अनिवार्य पाठ्यक्रम समाविष्ट किया गया है।
- वेद, उपनिषद्, दर्शन, गणित, विज्ञान, शासन-कला जैसे विषयों को शिक्षा से जोड़ा जा रहा है।
- भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।
- प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों (नालंदा, तक्षशिला) की परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास।
- बहुविषयक (Multidisciplinary) शिक्षा – जो प्राचीन भारतीय शिक्षा का मूल स्वरूप था।

भारतवर्ष की अवधारणा और उसके राजनीतिक आयामों का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह विद्यार्थियों को:

- अपनी सांस्कृतिक जड़ों से परिचित कराता है।
- भारतीय शासन-परंपरा के वैश्विक योगदान का बोध कराता है।
- लोकतंत्र और सुशासन की भारतीय परंपरा को समझने में सहायता करता है।
- राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गौरव की भावना विकसित करता है।

1.8 सारांश (Summary)

इस अध्याय में हमने 'भारतवर्ष की अवधारणा और उसके राजनीतिक आयामों' का व्यापक अध्ययन किया। संक्षेप में मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. भारतवर्ष का नाम: 'भारतवर्ष' शब्द 'भारत' (राजा भरत या भरत जनजाति) और 'वर्ष' (देश/भूखंड) के संयोग से बना है। विष्णुपुराण और महाभारत में इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है।
2. भौगोलिक अवधारणा: भारतवर्ष हिमालय से लेकर सागर पर्यंत के विशाल भू-भाग को इंगित करता है। पुराणों में इसे नौ खंडों में विभाजित किया गया है।
3. राजधर्म: भारतीय राजनीतिक चिंतन में राजा को प्रजा का पालक और धर्म का रक्षक माना गया है। व्यक्तिगत हित से ऊपर प्रजाहित रखना राजधर्म का मूल है।
4. सप्तांग सिद्धांत: कौटिल्य ने राज्य के सात अंग – स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, दंड और मित्र – बताए हैं। ये सातों अंग मिलकर एक सक्षम राज्य का निर्माण करते हैं।
5. अर्थशास्त्र: कौटिल्य का अर्थशास्त्र भारतीय राजनीतिक चिंतन का सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रंथ है जिसमें शासन, अर्थव्यवस्था, विदेश नीति और युद्धनीति का विस्तृत विवेचन है।

6. मण्डल सिद्धांत: कौटिल्य का यह सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की व्याख्या में 'शत्रु का शत्रु मित्र है' के सिद्धांत पर आधारित है।
7. गणतांत्रिक परंपरा: महाजनपद काल में वज्जि संघ जैसे गणतांत्रिक राज्यों का अस्तित्व सिद्ध करता है कि लोकतंत्र की परंपरा भारत में अति प्राचीन है।
8. वसुधैव कुटुम्बकम्: यह दर्शन भारतीय विदेश नीति का मूल सिद्धांत है और आधुनिक वैश्विक समुदाय को भारत की देन है।
9. NEP 2020: भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में समाविष्ट करने से भारतीय छात्रों में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव का संचार होगा।

1.9 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
भारतवर्ष	हिमालय से सागर तक का विशाल भू-खंड; भारत का प्राचीन नाम
राजधर्म	राजा के कर्तव्य और नैतिक शासन के सिद्धांत
सप्तांग	कौटिल्य द्वारा बताए राज्य के सात आवश्यक अंग

अर्थशास्त्र	कौटिल्य/चाणक्य द्वारा रचित राजनीति और अर्थनीति का ग्रंथ
मण्डल सिद्धांत	राज्यों के परस्पर संबंधों की वृत्ताकार व्याख्या
चक्रवर्ती	सार्वभौम सम्राट जिसका शासन चक्र समस्त पृथ्वी पर घूमता हो
महाजनपद	600-300 ई.पू. के प्रमुख राजनीतिक राज्य (सोलह संख्या में)
गण-संघ	महाजनपद काल के गणतांत्रिक राज्य/संघ
षाड्गुण्य	विदेश नीति के छह साधन: संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय
वसुधैव कुटुम्बकम्	'समस्त पृथ्वी एक परिवार है' – भारतीय सार्वभौमिक दर्शन
विजिगीषु	वह राजा जो अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहता है
दंडनीति	न्याय एवं दंड का शास्त्र; आधुनिक कानून व्यवस्था का प्राचीन रूप
आर्यावर्त	भारतवर्ष का मध्य और सर्वाधिक पवित्र क्षेत्र (गंगा-यमुना का मैदान)
जनपद	सप्तांग का तीसरा अंग – राज्य की जनसंख्या और भूमि
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारतीय शिक्षा का नया ढाँचा

1.10 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. भारतवर्ष की अवधारणा का उद्‌गम और विकास समझाइए। वैदिक, पौराणिक और महाकाव्य साहित्य में इसके वर्णन की विवेचना कीजिए।
2. कौटिल्य के सप्तांग सिद्‌धांत की विस्तृत व्याख्या कीजिए। इसकी तुलना आधुनिक राज्य-सिद्‌धांत से कीजिए।
3. मण्डल सिद्‌धांत को विस्तार से समझाइए और इसकी आधुनिक भू-राजनीति में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
4. महाजनपद काल की गणतांत्रिक परंपराओं का वर्णन कीजिए। वज्जि संघ की विशेषताएँ बताइए और इसे विश्व के प्रथम गणतंत्र के रूप में क्यों माना जाता है — विवेचना कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. राजधर्म की अवधारणा क्या है? इसके प्रमुख तत्त्व कौन से हैं?
2. षाड्‌गुण्य नीति के किन्हीं चार साधनों का वर्णन कीजिए।
3. चक्रवर्ती सम्राट का आदर्श क्या था? किसी एक ऐतिहासिक चक्रवर्ती का उदाहरण दीजिए।
4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दर्शन क्या है और यह आज भी प्रासंगिक क्यों है?
5. NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को क्यों सम्मिलित किया गया है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

कौटिल्य के सप्तांग में कितने अंग होते हैं?

(अ) पाँच (ब) सात (स) नौ (द) बारह

मण्डल सिद्धांत किस ग्रंथ में वर्णित है?

(अ) रामायण (ब) महाभारत (स) अर्थशास्त्र (द) मनुस्मृति

विश्व का प्रथम ज्ञात गणतंत्र किसे माना जाता है?

(अ) अथेंस (ब) रोम (स) वज्जि संघ (द) कोशल

'वसुधैव कुटुम्बकम्' किस ग्रंथ में उद्धृत है?

(अ) ऋग्वेद (ब) महोपनिषद् (स) अर्थशास्त्र (द) रामायण

भारत की G20 अध्यक्षता (2023) का थीम क्या था?

(अ) विश्व शांति (ब) वसुधैव कुटुम्बकम् (स) एकता में शक्ति (द) नया भारत

1.11 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1.4 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. 'भारतवर्ष' शब्द 'भारत' और 'वर्ष' के संयोग से बना है।
2. कौटिल्य के अनुसार सप्तांग में राज्य के 7 (सात) अंग होते हैं।
3. विष्णुपुराण के अनुसार भारतवर्ष 'समुद्र' के उत्तर और 'हिमालय (हिमाद्रि)' के दक्षिण में स्थित है।
4. राजधर्म का सर्वाधिक विस्तृत विवेचन महाभारत के 'शांतिपर्व' में है।

(ब) सही/गलत:

1. सही (✓) – कौटिल्य का अर्थशास्त्र 1905 में पुनः खोजा गया था।
2. गलत (✗) – 'वर्ष' का अर्थ 'देश/भू-खंड' होता है, 'वर्षा' नहीं।
3. सही (✓) – सप्तांग में मित्र राज्य सातवाँ अंग है।
4. गलत (✗) – राजधर्म के अनुसार राजा को प्रजाहित सर्वोपरि रखना चाहिए।

1.6 के उत्तर:

1. विजिगीषु: मण्डल सिद्धांत में विजिगीषु वह केंद्रीय राजा है जो विजय-अभियान की योजना बनाता है। उसके आसपास के राज्यों से उसके स्वाभाविक मित्रता या शत्रुता के संबंध होते हैं।
2. षाड्गुण्य के तीन साधन: संधि (शांतिपूर्ण समझौता), विग्रह (युद्ध/संघर्ष), आसन (तटस्थता/प्रतीक्षा)।
3. चक्रवर्ती के गुण: दिग्विजय करना, अश्वमेध यज्ञ का सम्पादन, प्रजा-कल्याण।
4. गण-संघ की विशेषताएँ: नियमित सभाओं का आयोजन, बहुमत से निर्णय लेना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर (1.10 स):

प्रश्न संख्या	सही उत्तर
1	(ब) सात
2	(स) अर्थशास्त्र
3	(स) वज्जि संघ
4	(ब) महोपनिषद्
5	(ब) वसुधैव कुटुम्बकम्

1.12 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- कौटिल्य – अर्थशास्त्र (आर. शामशास्त्री द्वारा अनूदित, मैसूर, 1915)
- विष्णुपुराण – गीताप्रेस, गोरखपुर

- महाभारत – शांतिपर्व, भीष्मपर्व (गीताप्रेस संस्करण)
- मनुस्मृति – (गंगानाथ झा द्वारा अनूदित)
- महोपनिषद् – (आनंदाश्रम संस्करण)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- वाचस्पति गैरोला – भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
- रघुवंश प्रसाद सिंह – भारतीय राजनीतिक विचारक, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- उदय राज शर्मा – कौटिल्य का अर्थशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- राधाकृष्णन, एस. – भारतीय दर्शन (हिंदी अनुवाद), राजपाल एंड संस, दिल्ली
- शर्मा, आर.एस. – प्राचीन भारत का इतिहास, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Kangle, R.P. – The Kautiliya Arthashastra (3 vols.), Motilal Banarsidass, Delhi
- Basham, A.L. – The Wonder That Was India, Rupa Publications, New Delhi
- Sharma, L.P. – History of Ancient India, Konark Publishers, New Delhi
- Wolpert, Stanley – A New History of India, Oxford University Press
- Thapar, Romila – A History of India (Vol. 1), Penguin Books

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://www.wisdomlib.org – संस्कृत ग्रंथों का डिजिटल भंडार
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in – भारतीय शोध प्रबंधों का भंडार
- https://www.education.gov.in/nep – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 2	VATTER:DR DHARAMBIR

भारतीय ज्ञान परंपरा में काल और देश की संकल्पना

The Concept of Time (Kāla) and Space (Deśa) in Indian Knowledge Tradition

अनुभाग विषय-वस्तु

2.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

2.1 प्रस्तावना

2.2 काल की भारतीय संकल्पना

2.2.1 'काल' शब्द का उद्गम और तीन अर्थ

2.2.2 वैदिक परंपरा + काल-इकाइयों की तालिका (त्रुटि से वर्ष तक)

2.2.3 पौराणिक काल-चक्र: युग, महायुग, कल्प, मन्वन्तर

2.2.4 8 दर्शन-प्रणालियों में काल की तुलनात्मक तालिका

2.2.5 त्रिकाल, महाकाल, अकाल – गीता का प्रमाण

2.3 Check Your Progress — 1

2.4 देश की भारतीय संकल्पना

2.4.1 'देश' शब्द + पाँच स्तर + तैत्तिरीयोपनिषद्

2.4.2 पंचमहाभूत और आकाश का महत्त्व

2.4.3 8 दर्शनों में देश/आकाश की व्याख्या

2.4.4 भौगोलिक देश – सप्तद्वीप तालिका

2.5 Check Your Progress — 2

2.6 काल-देश का परस्पर संबंध

2.6.1 वैशेषिक – Space-Time एकता

2.6.2 देशकालनियम – धर्मशास्त्र में

2.6.3 आर्यभट और भास्कराचार्य की उपलब्धियाँ

2.6.4 तीर्थ-पर्व: काल-देश की पवित्र एकता (8 तीर्थों की तालिका)

2.7 Check Your Progress — 3

2.8 भारतीय खगोलशास्त्र + पंचांग + भारत-पाश्चात्य तुलना

2.9 समकालीन प्रासंगिकता (आधुनिक Physics तुलना + NEP 2020)

अनुभाग	विषय-वस्तु
2.10	सारांश (10 बिंदु)
2.11	शब्दावली (18 शब्द)
2.12	Self-Assessment Test (दीर्घ + लघु + वस्तुनिष्ठ)
2.13	Answers to Check Your Progress
2.14	References / Suggested Readings

2.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारतीय ज्ञान परंपरा में 'काल' (समय) की अवधारणा का उद्गम, स्वरूप और दार्शनिक आधार समझ सकेंगे।
- वैदिक, पौराणिक और दार्शनिक ग्रंथों में काल के विभिन्न स्तरों और प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
- भारतीय कालगणना पद्धति – युग, महायुग, कल्प और मन्वन्तर की संरचना को समझ सकेंगे।
- 'देश' (स्थान/अंतरिक्ष) की भारतीय संकल्पना और उसके भौतिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक आयामों का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- काल और देश के परस्पर संबंध तथा उनकी भारतीय दर्शन में भूमिका की विवेचना कर सकेंगे।
- विभिन्न भारतीय दर्शन-प्रणालियों (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदांत, बौद्ध, जैन) में काल-देश की व्याख्याओं की तुलना कर सकेंगे।
- भारतीय खगोलशास्त्र और ज्योतिष में कालगणना की वैज्ञानिक परंपरा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- काल-देश की अवधारणाओं की आधुनिक विज्ञान और समकालीन जीवन में प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

मानव सभ्यता के इतिहास में 'समय' और 'स्थान' – इन दो मूलभूत तत्वों की समझ ने प्रत्येक संस्कृति के विश्वदृष्टिकोण को आकार दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा इस विषय में न केवल

अत्यंत प्राचीन है, बल्कि असाधारण रूप से गहरी और व्यापक भी है। भारतीय चिंतन में 'काल' (समय) और 'देश' (स्थान/अंतरिक्ष) को केवल भौतिक मापदंड नहीं माना गया, अपितु इन्हें सृष्टि के मूलभूत आयामों के रूप में स्वीकार किया गया है।

ऋग्वेद की नासदीय सूक्ति से लेकर उपनिषदों के ब्रह्म-विचार तक, सांख्य के महत् सिद्धांत से लेकर वैशेषिक के द्रव्य-गुण-कर्म की व्यवस्था तक, और आर्यभट के खगोलशास्त्र से लेकर भास्कराचार्य की सिद्धांत-शिरोमणि तक — भारतीय परंपरा ने काल और देश के विषय में जो चिंतन किया है, वह विश्व के किसी भी दर्शन-परंपरा से किसी भी रूप में कम नहीं है।

भारतीय काल-बोध की सबसे विशिष्ट विशेषता उसकी चक्रीय प्रकृति (Cyclical Nature) है। जहाँ पाश्चात्य परंपरा में समय को एक रेखीय (Linear) प्रवाह के रूप में देखा गया, वहीं भारतीय परंपरा में काल को चक्राकार माना गया है — सृष्टि और प्रलय की क्रमिक आवृत्ति में। युग, महायुग, कल्प और मन्वन्तर की विशाल कालगणना इसी चक्रीय दृष्टि की अभिव्यक्ति है।

'देश' की संकल्पना में भारतीय परंपरा ने भौतिक स्थान से आगे जाकर चेतना के आयामों को भी स्थान का रूप दिया है। वेदांत में 'आकाश' केवल भौतिक अंतरिक्ष नहीं बल्कि ब्रह्म का स्वरूप है। तंत्र-परंपरा में देह भी एक 'देश' है जहाँ समस्त ब्रह्मांड की शक्तियाँ विद्यमान हैं।

NEP 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन में काल और देश की संकल्पना का विशेष महत्त्व है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को भारतीय वैज्ञानिक चिंतन, दार्शनिक गहराई और खगोलशास्त्रीय उपलब्धियों से परिचित कराती है। यह अध्याय उसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

2.2 काल (समय) की भारतीय संकल्पना

2.2.1 'काल' शब्द का उद्‌गम और दार्शनिक अर्थ

संस्कृत में 'काल' शब्द की व्युत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है – 'गिनना, ध्वनि करना, आगे बढ़ाना।' निरुक्त के अनुसार 'काल' का अर्थ है – वह जो सब कुछ गिनता है, जो सब कुछ खाता (ग्रसित करता) है – अर्थात् जो समस्त प्राणियों और वस्तुओं को अपने में समाहित कर लेता है।

भारतीय परंपरा में 'काल' के तीन प्रमुख अर्थ मिलते हैं:

- भौतिक काल (Physical Time) – घटनाओं के क्रम की माप; जो गणनायोग्य है – क्षण, मुहूर्त, दिन, मास, वर्ष आदि।
- आध्यात्मिक काल (Metaphysical Time) – ब्रह्म या ईश्वर का एक रूप; जो सृष्टि और प्रलय का कारण है।
- मनोवैज्ञानिक काल (Psychological Time) – चेतना में अनुभव होने वाला समय; अतीत, वर्तमान और भविष्य की अनुभूति।

महाभारत के उद्‌योगपर्व में काल को साक्षात् ईश्वर का रूप कहा गया है:

> कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।
> कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः।।
>
> – महाभारत, उद्‌योगपर्व 38.4

(काल ही सभी प्राणियों को पकाता है, काल ही प्रजा का संहार करता है। जब सब सोते हैं तब काल जागता है – काल ही दुर्लघ्य है।)

2.2.2 वैदिक परंपरा में काल की संकल्पना

ऋग्वेद में समय के प्रश्न को दार्शनिक गहराई के साथ उठाया गया है। नासदीय सूक्त (ऋग्वेद 10.129) में सृष्टि से पूर्व की स्थिति में न सत् था, न असत् – इस अवस्था में काल की भी सत्ता नहीं थी:

> नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
>
> किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्।।
>
> – ऋग्वेद 10.129.1

(उस समय न असत् था, न सत् था; न आकाश था, न उसके परे कुछ था। क्या ढका हुआ था? कहाँ था? किसके आश्रय में था? क्या वह गहरा और अगाध जल था?)

अथर्ववेद के काल-सूक्त (19.53-54) में काल को परम सत्ता का रूप बताया गया है:

> कालो ह भूतं भवति च कालः पुण्यो विधीयते।
>
> काले क्षिपत्युत्तिष्ठति काले अस्तं गच्छति।।
>
> – अथर्ववेद 19.53.3

(काल ही भूत है और काल ही भविष्य है; काल ही पुण्य विधान करता है। काल में ही सूर्य उगता है और काल में ही अस्त होता है।)

वैदिक परंपरा में काल-विभाजन:

काल-इकाई	परिभाषा एवं विवरण
त्रुटि	सबसे सूक्ष्म काल-इकाई (लगभग 29.6 माइक्रो सेकंड)
तत्पर	100 त्रुटि = 1 तत्पर
निमेष (पलक झपकना)	लगभग 0.2 सेकंड — काल की प्राकृतिक इकाई
काष्ठा	15 निमेष = 1 काष्ठा (लगभग 3 सेकंड)
कला	30 काष्ठा = 1 कला (लगभग 1.5 मिनट)
मुहूर्त	30 कला = 1 मुहूर्त (लगभग 48 मिनट)
प्रहर (याम)	8 मुहूर्त = 1 प्रहर (3 घंटे)
अहोरात्र	8 प्रहर = 1 दिन-रात (24 घंटे)
पक्ष	15 दिन = 1 पक्ष (शुक्ल या कृष्ण)
मास	2 पक्ष = 1 मास
ऋतु	2 मास = 1 ऋतु (छह ऋतुएँ)
अयन	3 ऋतु = 1 अयन (उत्तरायण/दक्षिणायन)
वर्ष (संवत्सर)	2 अयन = 1 वर्ष

2.2.3 पौराणिक काल-चक्र: युग, महायुग, कल्प और मन्वन्तर

भारतीय काल-गणना की सबसे विशिष्ट और विशाल व्यवस्था पुराणों में मिलती है। इस व्यवस्था में काल को चार युगों के चक्र में विभाजित किया गया है:

चार युग और उनकी अवधि:

युग	मानव वर्षों में अवधि	देव-वर्षों में	युग की विशेषता
सत्य/कृत युग	17,28,000 वर्ष	4,800 दिव्य वर्ष	सत्य, धर्म, पूर्ण नैतिकता
त्रेता युग	12,96,000 वर्ष	3,600 दिव्य वर्ष	यज्ञ-कर्म प्रधान, धर्म 3/4
द्वापर युग	8,64,000 वर्ष	2,400 दिव्य वर्ष	वेद-विभाजन, धर्म 1/2
कलि युग	4,32,000 वर्ष	1,200 दिव्य वर्ष	अधर्म प्रबल, धर्म 1/4
एक महायुग	43,20,000 वर्ष	12,000 दिव्य वर्ष	चारों युगों का योग

विष्णुपुराण में काल-चक्र की यह व्यवस्था और भी विस्तृत है:

काल-इकाई	मान एवं विवरण
1 महायुग (चतुर्युगी)	43,20,000 मानव वर्ष
1 मन्वन्तर	71 महायुग = 30,67,20,000 वर्ष (एक मनु का राज्यकाल)
1 कल्प	14 मन्वन्तर + 15 संध्यांश = 1000 महायुग = 4,32,00,00,000 वर्ष
1 कल्प = ब्रह्मा का 1 दिन	4.32 अरब वर्ष (आधुनिक विज्ञान से तुलनीय)
1 ब्रह्म-दिन + 1 ब्रह्म-रात्रि	8.64 अरब वर्ष
ब्रह्मा की आयु	100 ब्रह्म-वर्ष = 311 ट्रिलियन वर्ष (महाकल्प)
वर्तमान स्थिति	वर्तमान में वराह कल्प, वैवस्वत मन्वन्तर, कलियुग चल रहा है

यह उल्लेखनीय तथ्य है कि आधुनिक विज्ञान के अनुसार पृथ्वी की आयु लगभग 4.54 अरब वर्ष है, जो भारतीय परंपरा में एक कल्प (4.32 अरब वर्ष) के अत्यंत निकट है। यह भारतीय ऋषियों की वैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण है।

2.2.4 दार्शनिक दर्शनों में काल की व्याख्या

भारत के विभिन्न दर्शन-सम्प्रदायों ने काल की प्रकृति के विषय में अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं:

दर्शन	काल की स्थिति	मुख्य सिद्धांत
न्याय-वैशेषिक	स्वतंत्र द्रव्य	काल एक नित्य, सर्वव्यापी, एक, अविभाज्य द्रव्य है
सांख्य-योग	प्रकृति का गुण	काल महत्-तत्त्व से उत्पन्न; परिणाम का क्रम ही काल है
अद्वैत वेदांत	माया का भाग	काल ब्रह्म पर आरोपित है; परम सत्य में काल नहीं
विशिष्टाद्वैत	ईश्वर का रूप	काल ईश्वर का शरीर है; ईश्वर काल का नियंता है
मीमांसा	काल स्वतंत्र सत्ता	क्रम और परिवर्तन काल से ही संभव हैं
बौद्ध दर्शन	काल वास्तविक नहीं	क्षणभंगुरता ही सत्य; काल केवल व्यावहारिक सत्य
जैन दर्शन	काल द्रव्य है	काल स्वतंत्र द्रव्य; जीव और अजीव से भिन्न
शैव दर्शन	काल शिव की शक्ति	कालाग्नि रुद्र = संहार की शक्ति; काल शिव का रूप

इन मतों से स्पष्ट है कि काल के विषय में भारतीय चिंतन एकरूप नहीं, बल्कि बहुआयामी रहा है। न्याय-वैशेषिक और मीमांसा जहाँ काल को वस्तुनिष्ठ और वास्तविक सत्ता मानते हैं, वहीं अद्वैत वेदांत उसे व्यावहारिक स्तर पर सत्य और परमार्थ स्तर पर मिथ्या मानता है। बौद्ध दर्शन 'क्षणिकवाद' के द्वारा परिवर्तन को ही यथार्थ मानता है, जबकि जैन दर्शन में काल को द्रव्य मानकर उसके 'वर्तना' (निरंतर प्रवर्तन) जैसे उपकार बताए गए हैं। इस विविधता के बावजूद सभी दर्शन इस बिंदु पर सहमत हैं कि काल का बोध मनुष्य के कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष की धारणाओं से गहराई से जुड़ा है।

2.2.5 त्रिकाल और अष्टकाल: काल के विभिन्न आयाम

भारतीय दर्शन में काल के कई आयामों की पहचान की गई है। त्रिकाल – अतीत, वर्तमान और भविष्य – की अवधारणा सर्वाधिक सुपरिचित है, परंतु इससे भी आगे जाकर योग और तंत्र परंपरा में काल के गहनतर आयाम खोजे गए हैं:

- सामान्य काल (Ordinary Time) – सूर्योदय से सूर्यास्त तक का व्यावहारिक समय
- सिद्ध काल – साधना और ध्यान में अनुभव होने वाला अनंत क्षण
- महाकाल – सृष्टि और प्रलय का विशाल चक्र जिसमें समस्त ब्रह्मांड समाया है
- अकाल (Timelessness) – समाधि की वह अवस्था जहाँ समय का बोध विलुप्त हो जाता है
- पारमार्थिक काल – ब्रह्म की दृष्टि से जहाँ तीनों काल एक साथ विद्यमान हैं

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने अपनी विभूतियों में काल को स्थान दिया है:

> अहमेवाक्षयः कालो धाताऽहं विश्वतोमुखः।
>
> मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।।
>
> – भगवद्गीता 10.33

(मैं ही अक्षय काल हूँ, मैं ही समस्त प्रजा को धारण करने वाला हूँ। मैं ही सब कुछ हरने वाला मृत्यु हूँ और आगे होने वाली वस्तुओं का उत्पत्ति-हेतु हूँ।)

2.3 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

- भारतीय कालगणना में सबसे सूक्ष्म इकाई _____ है।
- एक महायुग में _____ मानव वर्ष होते हैं।
- एक कल्प में _____ महायुग होते हैं।
- भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं को _____ काल कहा है।

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

- अद्वैत वेदांत में काल को स्वतंत्र द्रव्य माना गया है। ( )
- अथर्ववेद में काल-सूक्त पाया जाता है। ( )
- एक कल्प ब्रह्मा के एक दिन के बराबर होता है। ( )
- जैन दर्शन काल को स्वतंत्र द्रव्य नहीं मानता। ( )

2.4 देश (स्थान/अंतरिक्ष) की भारतीय संकल्पना

2.4.1 'देश' शब्द का उद्गम और बहुस्तरीय अर्थ

संस्कृत में 'देश' शब्द 'दिश्' धातु से बना है जिसका अर्थ है – दिशा देना, इंगित करना। 'देश' का शाब्दिक अर्थ है – 'जो दिशा या स्थान निर्धारित करे।' भारतीय परंपरा में देश के कई स्तर हैं:

- भौतिक देश (Physical Space) – वह स्थान जो भौतिक वस्तुओं को धारण करता है; आकाश, भूमि, जल।
- भौगोलिक देश (Geographic Space) – राष्ट्र, प्रदेश, ग्राम – जैसे 'भारत देश', 'कुरुदेश'।
- आध्यात्मिक देश (Spiritual Space) – चेतना का वह आयाम जहाँ साधना और ध्यान होता है।
- सूक्ष्म देश (Subtle Space) – शरीर के भीतर का आंतरिक अंतरिक्ष जहाँ प्राण और चेतना विचरण करती है।
- परम देश (Transcendent Space) – ब्रह्म का अनंत विस्तार जो समस्त अस्तित्व को धारण करता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् में देश (आकाश) को ब्रह्म से उत्पन्न बताया गया है:

> तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।
>
> आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी।।
>
> – तैत्तिरीयोपनिषद् 2.1

(उस ब्रह्म/आत्मा से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई।)

2.4.2 पंचमहाभूत और देश की संरचना

भारतीय दर्शन में सृष्टि की संरचना पंचमहाभूतों (पाँच महान तत्त्वों) के आधार पर की गई है। इन पाँचों तत्त्वों में 'आकाश' (Space) सर्वप्रथम और सर्वव्यापी है:

महाभूत	गुण (तन्मात्रा)	इंद्रिय एवं विशेषता
आकाश (Space)	शब्द	श्रोत्र; सर्वव्यापी, निराकार
वायु (Air)	स्पर्श + शब्द	त्वक्; गतिशील, स्पर्शगोचर
अग्नि (Fire)	रूप + स्पर्श + शब्द	चक्षु; प्रकाशमान, ऊर्जा
जल (Water)	रस + रूप + स्पर्श + शब्द	जिह्वा; तरल, रसयुक्त
पृथ्वी (Earth)	गंध + रस + रूप + स्पर्श + शब्द	घ्राण; ठोस, स्थिर, सुगंधित

आकाश का विशेष महत्त्व यह है कि यह सभी भूतों में व्याप्त है और अन्य चारों भूत आकाश में ही विद्यमान हैं। छांदोग्योपनिषद् में कहा गया है:

> सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्ते।
> आकाशं प्रत्यस्तं यन्ति। आकाशो ह्येवैभ्यो ज्यायः।
> आकाशः परायणम्।।
>
> — छांदोग्योपनिषद् 1.9.1

(समस्त प्राणी आकाश से ही उत्पन्न होते हैं और आकाश में ही विलीन हो जाते हैं। आकाश ही इन सबसे महान् है। आकाश ही परमगति है।)

2.4.3 विभिन्न दर्शन-प्रणालियों में देश/आकाश की व्याख्या

भारतीय दर्शन की विभिन्न प्रणालियों ने 'देश' या 'आकाश' की प्रकृति के विषय में अत्यंत गहन विचार किया है:

दर्शन	देश/आकाश की व्याख्या
वैशेषिक दर्शन	आकाश एक नित्य, सर्वव्यापी, एक द्रव्य है; शब्द इसका गुण है
अद्वैत वेदांत	ब्रह्म ही परम आकाश है; भौतिक आकाश उसका व्यावहारिक रूप
सांख्य दर्शन	आकाश प्रकृति से उत्पन्न; महत् → अहंकार → तन्मात्रा → आकाश
न्याय दर्शन	देश (Space) और काल दोनों स्वतंत्र, नित्य, सर्वव्यापी तत्त्व हैं
बौद्ध दर्शन	आकाश केवल व्यावहारिक सत्य; परमार्थतः शून्य ही सत्य है
जैन दर्शन	आकाश एक स्वतंत्र अजीव द्रव्य; पुद्गल को स्थान देने वाला
तंत्र परंपरा	शरीर के भीतर का आंतरिक आकाश (चिदाकाश) ही परम सत्य
योग दर्शन	चित्त का शुद्ध होना ही 'आकाश' – असीम चेतना का अनुभव

2.4.4 देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक संकल्पना

भारतीय परंपरा में 'देश' शब्द का प्रयोग भौगोलिक और सांस्कृतिक दोनों अर्थों में हुआ है। प्राचीन शास्त्रों में भारत के भूगोल को सात द्वीपों (सप्तद्वीप) के संदर्भ में समझाया गया है:

द्वीप	पुराणिक वर्णन	आधुनिक पहचान
जम्बूद्वीप	भारत का मुख्य भाग	एशिया
प्लक्षद्वीप	समशीतोष्ण क्षेत्र	यूरोप का भाग
शाल्मलिद्वीप	उष्णकटिबंधीय क्षेत्र	अफ्रीका का भाग
कुशद्वीप	घास-मैदान क्षेत्र	मध्य एशिया
क्रौंचद्वीप	पर्वतीय क्षेत्र	अमेरिका का भाग
शाकद्वीप	उत्तरी क्षेत्र	रूस/उत्तरी यूरोप
पुष्करद्वीप	सर्वाधिक बाहरी क्षेत्र	अंटार्कटिका/ध्रुव

भारतीय शास्त्रों में देश का सांस्कृतिक विभाजन भी किया गया है। धर्मशास्त्रों में देश-धर्म (regional customs) को स्वीकार किया गया है – अर्थात् विभिन्न क्षेत्रों की अपनी परंपराएँ, रीति-रिवाज और आचार होते हैं जो सार्वभौम धर्म के अंतर्गत मान्य हैं।

2.5 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- □ वैशेषिक दर्शन के अनुसार आकाश का क्या स्वरूप है?
- □ पंचमहाभूतों में आकाश का क्या विशेष महत्त्व है?
- □ तैत्तिरीयोपनिषद् में देश (आकाश) की उत्पत्ति के विषय में क्या कहा गया है?
- □ सांख्य दर्शन में आकाश की उत्पत्ति-श्रृंखला क्या है?

2.6 काल और देश का परस्पर संबंध

2.6.1 काल-देश की एकता: भारतीय दृष्टि

आधुनिक भौतिकी में आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत (Theory of Relativity) ने 'स्पेस-टाइम' (Space-Time) की एकता को सिद्ध किया। परंतु भारतीय दार्शनिक परंपरा ने बहुत पहले ही काल और देश की अविभाज्य एकता की ओर संकेत किया था।

वैशेषिक दर्शन में काल और दिक् (Space) दोनों को नित्य, सर्वव्यापी, एक द्रव्य माना गया है जो समस्त सांसारिक व्यापारों का आधार हैं। कणाद के वैशेषिकसूत्र में:

> दिक्कालावनादी।
>
> द्रव्यगुणकर्माण्येकद्रव्याण्यनेकद्रव्याणि।।
>
> – वैशेषिकसूत्र 2.2.9-10

(दिक् और काल – दोनों अनादि हैं। ये एकद्रव्य और अनेकद्रव्य दोनों रूपों में विद्यमान हैं।)

इस प्रकार भारतीय चिंतन में काल और देश को अलग-अलग इकाइयाँ न मानकर एक-दूसरे के पूरक माना गया है। अद्वैत वेदांत में 'देश-काल-निमित्त' को अनुभव की तीन आधारभूत शर्तें बताया गया है, अर्थात् कोई भी अनुभव किसी स्थान, किसी समय और किसी कारण से बँधा होता है। इसी प्रकार दैनंदिन जीवन में भी भारतीय परंपरा किसी कार्य के आरंभ से पूर्व संकल्प-मंत्र में स्थान (देश), समय (काल), संवत्सर, मास और तिथि का उच्चारण करती है, जो काल-देश के संयुक्त बोध का जीवंत उदाहरण है।

2.6.2 देशकालनियम: धर्मशास्त्र में काल-देश

भारतीय धर्मशास्त्र और आचारशास्त्र में 'देशकालोचित' आचरण पर विशेष बल दिया गया है। इसका तात्पर्य है – जो कर्म जिस देश और काल में उचित हो, वही उस स्थान और समय के लिए धर्म है।

मनुस्मृति में कहा गया है:

> देशे देशे तथा कार्याण्यात्मनश्च विचिन्त्य धीः।
>
> गुणान् दोषांश्च सकलान् पश्येत् कालं च केवलम्।।
>
> – मनुस्मृति 7.211

(बुद्धिमान को चाहिए कि प्रत्येक देश में कार्य करते समय अपनी स्थिति, गुण-दोष और काल को भलीभाँति विचार करे।)

धर्मशास्त्र में देशकाल के आधार पर धर्म-विनिर्धारण के चार स्रोत माने गए हैं:

- श्रुति (वेद) – सार्वभौम और सर्वकालीन धर्म
- स्मृति (धर्मशास्त्र) – काल-सापेक्ष नियम
- सदाचार (Good Conduct) – देश-विशेष की परंपरा
- स्वसंतुष्टि (Self-Approval) – व्यक्तिगत विवेक

देशकाल के अनुसार आचरण की यह धारणा भारतीय समाज के लचीलेपन और अनुकूलनशीलता का आधार रही है। इसी कारण भारतीय परंपरा में 'देशाचार', 'कुलाचार' और 'लोकाचार' को भी महत्त्व दिया गया है तथा विशेष परिस्थितियों के लिए 'आपद्धर्म' की व्यवस्था की गई है। अर्थात् धर्म को स्थिर रूढ़ि न मानकर परिस्थिति-सापेक्ष और विवेक-आधारित माना गया, जिससे समाज को बदलते समय के साथ स्वयं को ढालने की क्षमता मिली।

2.6.3 आर्यभट और भास्कराचार्य: काल-देश का वैज्ञानिक विश्लेषण

भारतीय खगोलशास्त्र और गणित की परंपरा में काल और देश की वैज्ञानिक गणना अत्यंत उन्नत स्तर पर की गई। आर्यभट (476-550 ई.) ने अपने 'आर्यभटीय' में:

- पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की खोज की – जो समय के बोध का आधार है।

- सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या दी।
- एक वर्ष की अवधि को 365 दिन 6 घंटे 12 मिनट 30 सेकंड बताया (आधुनिक माप से केवल 3 मिनट 20 सेकंड का अंतर!)
- पाई (π) का मान 3.1416 बताया – आधुनिक मूल्य 3.14159...

भास्कराचार्य (1114-1185 ई.) ने 'सिद्धांतशिरोमणि' और 'लीलावती' में:

- ग्रहों की गति और स्थान का सूक्ष्म गणना की।
- गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत न्यूटन से लगभग 500 वर्ष पूर्व प्रतिपादित किया।
- अनंत (Infinity) और शून्य (Zero) की गणितीय संकल्पनाएँ विकसित कीं।

आर्यभट के पश्चात् ब्रह्मगुप्त (598-668 ई.) ने 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में ग्रहों की गति और ग्रहण की गणना की विधियाँ दीं तथा शून्य के साथ गणितीय संक्रियाओं के नियम निर्धारित किए। वराहमिहिर (छठी शताब्दी) ने 'पंचसिद्धांतिका' में उस समय प्रचलित पाँच खगोलीय सिद्धांतों (पैतामह, वसिष्ठ, रोमक, पौलिश और सूर्य) का संकलन किया। इन विद्वानों के कार्य से स्पष्ट होता है कि भारत में काल-गणना और भौगोलिक स्थिति-निर्धारण की विकसित वैज्ञानिक परंपरा थी। प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र में उज्जयिनी को मध्याह्न-रेखा का प्रमुख केंद्र माना जाता था।

2.6.4 तीर्थ और पर्व: देश-काल की पवित्र एकता

भारतीय संस्कृति में तीर्थ (पवित्र स्थान) और पर्व (पवित्र समय) की अवधारणाएँ काल और देश की एकता का व्यावहारिक उदाहरण हैं। तीर्थ वह देश है जहाँ आध्यात्मिक शक्ति विशेष रूप से संचित है, और पर्व वह काल है जब उस शक्ति का प्रवाह विशेष रूप से सक्रिय होता है।

प्रमुख तीर्थ और उनसे संबंधित पर्व:

तीर्थ (देश)	महत्त्वपूर्ण पर्व (काल)	विशेषता
प्रयागराज	माघ मेला, कुम्भ मेला	त्रिवेणी संगम – गंगा, यमुना, सरस्वती
हरिद्वार	कुम्भ, अर्धकुम्भ	गंगावतरण स्थल
वाराणसी	कार्तिक पूर्णिमा, शिवरात्रि	काशी – शिव की नगरी, मोक्षदायिनी
उज्जैन	सिंहस्थ (महाकुम्भ)	महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग
रामेश्वरम्	शिवरात्रि, राम नवमी	दक्षिण का सेतु, रामायण-स्थल
द्वारका	जन्माष्टमी	कृष्ण की नगरी
जगन्नाथ पुरी	रथयात्रा, कार्तिक एकादशी	जगन्नाथ – जगत् के स्वामी
केदारनाथ-बदरीनाथ	अक्षय तृतीया (खुलना)	हिमालय के चार धाम

कुम्भ मेला काल-देश की एकता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह उस विशेष खगोलीय काल में होता है जब बृहस्पति, सूर्य और चंद्र एक विशेष स्थान पर होते हैं और उस स्थान का (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन या नासिक) विशेष आध्यात्मिक महत्त्व होता है। इस प्रकार काल और देश मिलकर एक असाधारण आध्यात्मिक शक्ति का निर्माण करते हैं।

2.7 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

(अ) सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ	स्तम्भ-ब
आर्यभट	सिद्धांतशिरोमणि
भास्कराचार्य	वैशेषिकसूत्र

कणाद	आर्यभटीय
कुम्भ मेला	खगोलीय काल-देश की एकता
तैत्तिरीयोपनिषद्	आकाश से सृष्टि की उत्पत्ति

(ब) एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:

- 'देशकालोचित' आचरण से क्या तात्पर्य है?
- आर्यभट ने वर्ष की अवधि कितनी बताई थी?

2.8 भारतीय खगोलशास्त्र: काल और देश की वैज्ञानिक परंपरा

2.8.1 वेदांग ज्योतिष: प्राचीनतम खगोल-विज्ञान

'वेदांग ज्योतिष' (लगभग 1200-1400 ईसा पूर्व) भारत का प्राचीनतम खगोलशास्त्रीय ग्रंथ है। यह वेद के छह अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष) में से एक है। इसमें यज्ञों के लिए उचित काल की गणना की पद्धति निरूपित की गई है।

वेदांग ज्योतिष की मुख्य उपलब्धियाँ:

- सूर्य और चंद्र की गति की गणना
- नक्षत्रों की पहचान (27 नक्षत्र मंडल)
- युग प्रणाली का आरंभिक विकास
- ऋतुओं और अयनों की गणना
- शुभ मुहूर्त की गणना पद्धति

वेदांग ज्योतिष के रचयिता के रूप में परंपरा 'लगध' मुनि का नाम लेती है। इसके दो पाठ उपलब्ध हैं --- ऋग्वेद-ज्योतिष और यजुर्वेद-ज्योतिष। इसमें पाँच वर्षों का एक 'युग' माना गया

है, जिसमें सौर वर्ष और चंद्र मास का समन्वय करने के लिए अधिमास (मलमास) की व्यवस्था की गई। यही व्यवस्था आगे चलकर भारतीय पंचांग की चंद्र-सौर (Luni-Solar) प्रणाली का आधार बनी। यज्ञ-कर्म के लिए सही समय का निर्धारण ही इस ग्रंथ का प्रमुख उद्देश्य था, किंतु इसने भारत में गणितीय खगोलशास्त्र की नींव रख दी।

2.8.2 पंचांग: काल और देश की दैनंदिन व्यवस्था

भारतीय पंचांग (पाँच अंगों वाला कालनिर्देशन) काल और देश की एकता का व्यावहारिक रूप है। पंचांग के पाँच अंग हैं:

पंचांग का अंग	विवरण
तिथि	चंद्रमा की कला पर आधारित दिन (30 तिथियाँ प्रति मास)
वार	सप्ताह के सात दिन (रवि से शनि तक)
नक्षत्र	चंद्रमा जिस नक्षत्र में हो (27 नक्षत्र)
योग	सूर्य और चंद्र की संयुक्त गति से निर्मित (27 योग)
करण	तिथि का आधा भाग (11 करण)

यह पंचांग प्रणाली आज भी भारत में प्रचलित है और यह इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र कितना सटीक और व्यावहारिक था। इसमें सूर्य (सौर काल), चंद्रमा (चंद्र काल) और नक्षत्र (नाक्षत्र काल) – तीनों की समन्वित गणना की जाती है।

भारत में अनेक संवत् प्रचलित रहे हैं --- विक्रम संवत् (57 ई.पू. से), शक संवत् (78 ई. से), कलि संवत् आदि। स्वतंत्रता के बाद मेघनाद साहा की अध्यक्षता में गठित पंचांग-सुधार समिति (1952) की अनुशंसा पर शक संवत् पर आधारित 'राष्ट्रीय पंचांग' 22 मार्च 1957 से अपनाया गया। फिर भी त्योहारों, व्रतों और संस्कारों की तिथियाँ आज भी परंपरागत चंद्र-सौर पंचांग के अनुसार ही निर्धारित होती हैं, जो इसकी निरंतरता और सामाजिक महत्त्व को दर्शाता है।

2.8.3 भारतीय और पाश्चात्य काल-देश अवधारणा की तुलना

भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं में काल-देश की अवधारणाओं में कुछ मूलभूत अंतर हैं:

पक्ष	भारतीय परंपरा	पाश्चात्य परंपरा
काल का स्वरूप	चक्रीय (Cyclical)	रेखीय (Linear)
काल का उद्देश्य	आध्यात्मिक मुक्ति	भौतिक प्रगति
समय की उत्पत्ति	ब्रह्म/सृष्टि से	Big Bang / ईश्वर निर्मित
अंतरिक्ष (Space)	ब्रह्म का रूप / आकाश	खाली निर्जन स्थान
काल-देश संबंध	आध्यात्मिक एकता	भौतिक एकता (Einstein)
मापन पद्धति	खगोल + आध्यात्म	केवल भौतिक/वैज्ञानिक
काल की गहनता	अनंत (महाकल्प)	अपेक्षाकृत सीमित
प्रयोजन	धर्म-कर्म-मोक्ष	उत्पादकता और प्रगति

संक्षेप में, पाश्चात्य परंपरा ने काल-देश को मुख्यतः मापन और भौतिक विश्लेषण का विषय बनाया, जबकि भारतीय परंपरा ने इसे मापन के साथ-साथ जीवन के अर्थ, कर्तव्य और मोक्ष से जोड़ा। इसीलिए भारतीय विद्वानों ने गणितीय खगोलशास्त्र में सटीकता भी प्राप्त की और काल को 'महाकाल' के रूप में आध्यात्मिक गहराई भी दी। यह तुलना दोनों परंपराओं को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक दृष्टियों के रूप में समझने में सहायता करती है।

2.9 समकालीन प्रासंगिकता: काल-देश से विज्ञान और जीवन तक

2.9.1 आधुनिक भौतिकी और भारतीय काल-देश की समानताएँ

आधुनिक भौतिकी की कुछ महत्त्वपूर्ण खोजें भारतीय काल-देश की अवधारणाओं से आश्चर्यजनक रूप से मेल खाती हैं:

आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांत	भारतीय समकक्ष अवधारणा
Einstein का Space-Time Continuum	काल और दिक् की अविभाज्य एकता (वैशेषिक)
Big Bang Theory	ब्रह्मा का सृष्टि-आरंभ; नासदीय सूक्त का शून्य-बिंदु
Cyclic Universe Theory	सृष्टि-स्थिति-प्रलय का अनंत चक्र (पुराण)
Quantum Vacuum / Zero Point Energy	शून्य से सृष्टि की उत्पत्ति (बौद्ध शून्यवाद)
Multiverse Theory	सप्तलोक और अनंत ब्रह्मांड की कल्पना
Dark Energy (Accelerating Universe)	कल्प के अंत में प्रलय की गति का त्वरण
Entropy (Time's Arrow)	कलियुग में धर्म-क्षरण की क्रमिक प्रक्रिया

यह तुलना यह स्पष्ट करती है कि भारतीय ऋषियों ने जो दार्शनिक अनुभव के आधार पर कहा था, आधुनिक विज्ञान उसे प्रयोगशाला में सिद्ध कर रहा है। यह भारतीय ज्ञान-परंपरा की वैज्ञानिकता का प्रमाण है।

2.9.2 काल-देश बोध और दैनंदिन जीवन

भारतीय काल-देश की अवधारणाएँ केवल दार्शनिक नहीं हैं, इनका दैनंदिन जीवन से सीधा संबंध है:

- संस्कार और मुहूर्त – विवाह, गृहप्रवेश, यज्ञोपवीत आदि के लिए उचित काल-देश का निर्धारण।

- कृषि और ऋतु-चक्र – वर्षा, बुआई, फसल कटाई का काल-देश के अनुसार निर्धारण।
- आयुर्वेद और काल – दिन के विभिन्न प्रहरों में औषधि-सेवन का नियम; ऋतु-अनुसार आहार।
- वास्तुशास्त्र – घर और भवन के निर्माण में दिशा (देश) का महत्त्व।
- योग और ध्यान – ब्रह्ममुहूर्त (ब्रह्म का समय) में साधना का विशेष फल।
- त्योहार और पर्व – प्रकृति के चक्र के साथ जीवन को जोड़ने की व्यवस्था।

2.9.3 NEP 2020 के संदर्भ में काल-देश का अध्ययन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत काल-देश की भारतीय संकल्पना का अध्ययन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है:

- वैज्ञानिक दृष्टि: भारतीय कालगणना और खगोलशास्त्र की वैज्ञानिक उपलब्धियाँ आधुनिक विज्ञान की पूर्वपीठिका के रूप में समझी जा सकती हैं।
- दार्शनिक दृष्टि: काल-देश के प्रश्न पर भारतीय दार्शनिक चिंतन की गहराई विद्यार्थियों में तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमता विकसित करती है।
- सांस्कृतिक दृष्टि: तीर्थ, पर्व, पंचांग आदि के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक जीवन-दृष्टि का बोध।
- पर्यावरणीय दृष्टि: ऋतु-चक्र और काल-देश बोध से प्रकृति के साथ सामंजस्य की शिक्षा।
- बहुविषयक दृष्टि: भौतिकी, गणित, दर्शन, संस्कृति – सभी का समन्वय।

2.10 सारांश (Summary)

इस अध्याय में हमने भारतीय ज्ञान परंपरा में 'काल' और 'देश' की संकल्पनाओं का व्यापक अध्ययन किया। मुख्य बिंदु निम्नानुसार हैं:

1. काल का बहुआयामी स्वरूप: भारतीय परंपरा में काल केवल भौतिक समय नहीं, बल्कि ब्रह्म का एक रूप, सृष्टि का नियामक और आध्यात्मिक मुक्ति का आधार है।
2. वैदिक कालगणना: ऋग्वेद और अथर्ववेद में काल को परम सत्ता का रूप बताया गया है। वैदिक परंपरा में काल की अत्यंत सूक्ष्म (त्रुटि) से लेकर अत्यंत विशाल (कल्प) तक की गणना प्रणाली विकसित की गई।
3. पौराणिक काल-चक्र: चार युगों (सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि), महायुग, मन्वन्तर और कल्प की विशाल काल-व्यवस्था भारतीय ब्रह्मांडीय दृष्टि की परिचायक है।
4. दार्शनिक विविधता: न्याय, वैशेषिक, सांख्य, अद्वैत, बौद्ध और जैन दर्शनों ने काल की प्रकृति के विषय में अलग-अलग किंतु गहन व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं।
5. देश/आकाश का स्वरूप: भारतीय परंपरा में आकाश केवल खाली स्थान नहीं, बल्कि ब्रह्म का रूप, पंचमहाभूतों में प्रथम और समस्त सृष्टि का आधार है।
6. पंचमहाभूत: आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी की उत्तरोत्तर सघनता में सृष्टि का निर्माण हुआ है – यह देश की संरचनात्मक अवधारणा है।
7. काल-देश की एकता: वैशेषिक दर्शन में दिक् और काल दोनों को नित्य, सर्वव्यापी तत्त्व माना गया है – जो आधुनिक Space-Time सिद्धांत का पूर्वाभास है।
8. तीर्थ-पर्व: भारतीय संस्कृति में तीर्थ (पवित्र देश) और पर्व (पवित्र काल) की संकल्पना काल-देश की आध्यात्मिक एकता का व्यावहारिक रूप है।
9. भारतीय खगोलशास्त्र: आर्यभट, भास्कराचार्य जैसे वैज्ञानिकों ने काल और देश (ग्रहों की स्थिति) की अत्यंत सटीक वैज्ञानिक गणना की।
10. समकालीन प्रासंगिकता: भारतीय काल-देश की अवधारणाएँ आधुनिक भौतिकी, पर्यावरण-विज्ञान और जीवन-दर्शन की दृष्टि से आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

2.11 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
काल	समय; सृष्टि का नियामक; ब्रह्म का रूप – जो सब कुछ गिनता और ग्रसित करता है
देश	स्थान/अंतरिक्ष; 'दिश्' धातु से; भौतिक, भौगोलिक और आध्यात्मिक स्थान
आकाश	पंचमहाभूतों में प्रथम; शब्द जिसका गुण है; समस्त सृष्टि का आधार
युग	समय की एक विशाल इकाई; चार प्रकार – सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि
महायुग/चतुर्युगी	चारों युगों का एक चक्र = 43,20,000 मानव वर्ष
कल्प	1000 महायुग = 4.32 अरब वर्ष = ब्रह्मा का एक दिन
मन्वन्तर	71 महायुग = एक मनु का शासनकाल = 30.67 करोड़ वर्ष
पंचमहाभूत	पाँच मूलभूत तत्त्व: आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी
त्रिकाल	तीन काल: भूत (अतीत), वर्तमान, भविष्य
पंचांग	पाँच अंगों वाली भारतीय कालगणना: तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण
निमेष	पलक झपकने का समय – काल की प्राकृतिक इकाई (लगभग 0.2 सेकंड)
मुहूर्त	48 मिनट की कालावधि; शुभ कार्यों के लिए उचित समय का निर्धारण
तीर्थ	पवित्र स्थान जहाँ आध्यात्मिक शक्ति विशेष रूप से संचित है
पर्व	पवित्र समय/उत्सव – खगोलीय और आध्यात्मिक काल का संगम

वेदांग ज्योतिष	भारत का प्राचीनतम खगोलशास्त्र ग्रंथ (लगभग 1200-1400 ई.पू.)
देशकालोचित	जो कर्म जिस देश और काल के लिए उचित हो – स्थान-काल सापेक्ष धर्म
चक्रीय काल	भारतीय दृष्टि में सृष्टि-स्थिति-प्रलय का अनंत चक्र (Linear के विपरीत)
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने का ढाँचा

2.12 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. भारतीय परंपरा में 'काल' की अवधारणा का विस्तृत वर्णन कीजिए। वैदिक, पौराणिक और दार्शनिक स्तरों पर काल की भिन्न-भिन्न व्याख्याओं की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।
2. भारतीय कालगणना पद्धति (युग, महायुग, कल्प, मन्वन्तर) की विस्तार से व्याख्या कीजिए। इसकी आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के साथ तुलना कीजिए।
3. 'देश' की भारतीय संकल्पना को स्पष्ट कीजिए। पंचमहाभूत सिद्धांत में आकाश के महत्त्व की विशद व्याख्या कीजिए।
4. तीर्थ और पर्व की अवधारणाएँ किस प्रकार काल-देश की भारतीय संकल्पना को व्यावहारिक रूप देती हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. काल के भौतिक, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक तीनों रूपों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
2. वैशेषिक दर्शन में काल और दिक् की व्याख्या क्या है?
3. अद्वैत वेदांत में आकाश/देश का क्या स्थान है?
4. आर्यभट की खगोलशास्त्रीय उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
5. भारतीय और पाश्चात्य काल-बोध में क्या मूलभूत अंतर है?
6. 'देशकालनियम' धर्मशास्त्र में किस प्रकार प्रयुक्त होता है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

- एक कल्प में कितने महायुग होते हैं? (अ) 100 (ब) 500 (स) 1000 (द) 71
- पंचांग के पाँच अंगों में कौन-सा नहीं है? (अ) तिथि (ब) वार (स) लग्न (द) नक्षत्र
- भारत का प्राचीनतम खगोलशास्त्र ग्रंथ कौन-सा है? (अ) आर्यभटीय (ब) वेदांग ज्योतिष (स) सूर्यसिद्धांत (द) सिद्धांतशिरोमणि
- पंचमहाभूतों में सर्वप्रथम कौन-सा भूत उत्पन्न हुआ? (अ) वायु (ब) अग्नि (स) आकाश (द) जल
- निम्न में से कौन-सा दर्शन काल को स्वतंत्र द्रव्य नहीं मानता? (अ) वैशेषिक (ब) जैन (स) अद्वैत वेदांत (द) न्याय

- कुम्भ मेला किस सिद्धांत का उदाहरण है? (अ) केवल धार्मिक परंपरा (ब) काल-देश की खगोलीय एकता (स) जल-प्रबंधन (द) राजनीतिक एकता

2.13 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

2.3 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. भारतीय कालगणना में सबसे सूक्ष्म इकाई 'त्रुटि' है।
2. एक महायुग में 43,20,000 मानव वर्ष होते हैं।
3. एक कल्प में 1000 महायुग होते हैं।
4. भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं को 'अक्षय' काल कहा है।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – अद्वैत वेदांत में काल को माया का अंग माना गया है, स्वतंत्र द्रव्य नहीं।
2. सही (✓) – अथर्ववेद 19.53-54 में काल-सूक्त पाया जाता है।
3. सही (✓) – एक कल्प ब्रह्मा के एक दिन के बराबर होता है।
4. गलत (✗) – जैन दर्शन काल को स्वतंत्र द्रव्य मानता है।

2.5 के उत्तर:

1. वैशेषिक के अनुसार आकाश: आकाश एक नित्य, सर्वव्यापी और एक द्रव्य है जिसका गुण शब्द है। यह समस्त जगत् में व्याप्त है और अन्य सभी भूतों का आधार है।

2. आकाश का महत्त्व: पंचमहाभूतों में आकाश सर्वप्रथम और सर्वव्यापी है। अन्य चारों भूत आकाश में ही विद्यमान हैं और आकाश से ही उत्पन्न हुए हैं।
3. तैत्तिरीयोपनिषद्: ब्रह्म/आत्मा से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी।
4. सांख्य दर्शन की श्रृंखला: ब्रह्म → महत् → अहंकार → शब्द तन्मात्रा → आकाश।

2.7 के उत्तर:

(अ) सही मिलान:

स्तम्भ-अ	सही मिलान (स्तम्भ-ब)
आर्यभट	आर्यभटीय
भास्कराचार्य	सिद्धांतशिरोमणि
कणाद	वैशेषिकसूत्र
कुम्भ मेला	खगोलीय काल-देश की एकता
तैत्तिरीयोपनिषद्	आकाश से सृष्टि की उत्पत्ति

(ब) उत्तर:

1. 'देशकालोचित' आचरण: जो कर्म जिस स्थान और समय के अनुकूल हो वही उस स्थान-काल में उचित धर्म है। धर्म का निर्धारण स्थान और समय की परिस्थितियों के अनुसार बदल सकता है।
2. आर्यभट ने वर्ष की अवधि 365 दिन 6 घंटे 12 मिनट 30 सेकंड बताई थी – जो आधुनिक माप से केवल 3 मिनट 20 सेकंड अधिक है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर (2.12 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(स) 1000 महायुग
2	(स) लग्न (यह पंचांग का अंग नहीं है)
3	(ब) वेदांग ज्योतिष
4	(स) आकाश
5	(स) अद्वैत वेदांत
6	(ब) काल-देश की खगोलीय एकता

2.14 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- ऋग्वेद – नासदीय सूक्त (10.129) एवं काल-संबंधी सूक्त
- अथर्ववेद – काल-सूक्त (19.53-54)
- तैत्तिरीयोपनिषद् – सृष्टि-प्रकरण (2.1)
- छांदोग्योपनिषद् – आकाश-विवेचन
- भगवद्गीता – विभूति योग (अध्याय 10)
- विष्णुपुराण – कालमान प्रकरण
- वैशेषिकसूत्र – कणाद (काल-दिक् प्रकरण)
- सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण
- आर्यभटीय – आर्यभट (ई. 499)
- सिद्धांतशिरोमणि – भास्कराचार्य (ई. 1150)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- चक्रधर नौटियाल – भारतीय दार्शनिक परंपरा, साहित्य भंडार, इलाहाबाद

- उमेशमिश्र – भारतीय दर्शन का इतिहास (4 खंड), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज
- हरेंद्र प्रसाद सिन्हा – भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास
- वेदव्रत शास्त्री – वैशेषिक दर्शन, चौखम्बा, वाराणसी
- राधाकृष्णन, एस. – भारतीय दर्शन (हिंदी अनुवाद), राजपाल एंड संस

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Dasgupta, S.N. – A History of Indian Philosophy (5 vols.), Cambridge University Press
- Radhakrishnan, S. – Indian Philosophy (2 vols.), Oxford University Press
- Kim Plofker – Mathematics in India, Princeton University Press
- Subhash Kak – The Astronomical Code of the Rigveda, Munshiram Manoharlal
- David Frawley – Astrology of the Seers, Lotus Press
- Richard Thompson – Vedic Cosmography and Astronomy, Bhaktivedanta Book Trust

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://www.wisdomlib.org – संस्कृत ग्रंथों का डिजिटल भंडार
- https://www.ias.ac.in – भारतीय विज्ञान अकादमी (भारतीय खगोलशास्त्र शोध)
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in – भारतीय शोध प्रबंधों का भंडार
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 का आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 3	VATTER:DR DHARAMBIR

Unit-2 धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति

धर्म एवं दर्शन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा

Dharma, Philosophy, Art & Culture; Indian View of Dharma & Philosophy; The Concept of Vasudhaiva Kutumbakam: Individual, Family, Society & World

अनुभाग **विषय-वस्तु**

3.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

3.1 प्रस्तावना

3.2 धर्म: भारतीय दृष्टिकोण

3.2.1 'धर्म' का उद्गम + 8 आयामों की तालिका

3.2.2 सनातन धर्म के सिद्धांत + मनुस्मृति श्लोक

3.2.3 8 धर्म-परंपराओं की तुलनात्मक तालिका

3.2.4 धर्म बनाम Religion — 8 बिंदुओं की तुलना

3.3 Check Your Progress — 1

3.4 भारतीय दर्शन: षड्दर्शन + नास्तिक + वेदांत

3.4.1 'दर्शन' की अवधारणा

3.4.2 षड्दर्शन – प्रवर्तक + योगदान तालिका

3.4.3 नास्तिक दर्शन (बौद्ध, जैन, चार्वाक)

3.4.4 वेदांत की तीन शाखाएँ + शंकराचार्य श्लोक

3.4.5 आधुनिक भारतीय दार्शनिक

3.5 Check Your Progress — 2

3.6 भारतीय कला

3.6.1 कला की दार्शनिक पृष्ठभूमि

3.6.2 नवरस – स्थायीभाव + देवता की तालिका

3.6.3 स्थापत्य कला – 6 शैलियाँ

3.6.4 8 शास्त्रीय नृत्य-शैलियाँ

अनुभाग **विषय-वस्तु**

3.6.5 संगीत परंपरा

3.6.6 चित्रकला – 8 शैलियाँ

3.7 Check Your Progress — 3

3.8 भारतीय संस्कृति + षोडश संस्कार + उत्सव

3.9 वसुधैव कुटुम्बकम्

3.9.1-7 उद्गम, दार्शनिक आधार, मनुष्य, परिवार, समाज, विश्व, समकालीन प्रासंगिकता

3.10 Check Your Progress — 4

3.11 NEP 2020 + भारत की वैश्विक देन

3.12 सारांश (10 बिंदु)

3.13 शब्दावली (16 शब्द)

3.14 Self-Assessment Test

3.15 Answers to Check Your Progress

3.16 References

3.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- 'धर्म' की भारतीय अवधारणा – उसके बहुआयामी अर्थ, स्वरूप और सार्वभौमिक महत्त्व को समझ सकेंगे।
- भारतीय दर्शन के प्रमुख सम्प्रदायों (आस्तिक एवं नास्तिक) तथा उनकी विशेषताओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय कला – चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य, संगीत, नृत्य और साहित्य की परंपराओं का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- 'संस्कृति' की भारतीय परिकल्पना और उसके मूल्यों की पहचान कर सकेंगे।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा के दार्शनिक, नैतिक और राजनीतिक आयामों को समझ सकेंगे।
- व्यक्ति, परिवार, समाज और विश्व के परस्पर संबंधों की भारतीय दृष्टि को विश्लेषित कर सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति की वैश्विक देन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकेंगे।
- NEP 2020 के संदर्भ में भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के अध्ययन के महत्त्व को समझ सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक ऐसी सभ्यता है जो 'अनेकता में एकता' के महान सिद्धांत पर आधारित है। यहाँ की धर्म, दर्शन, कला और संस्कृति सहस्राब्दियों की यात्रा में इतनी गहरी और व्यापक हो गई है कि वह न केवल भारतीय समाज की आधारशिला है, बल्कि विश्व सभ्यता की अमूल्य धरोहर भी है।

भारत में 'धर्म' का अर्थ केवल 'Religion' नहीं है – यह उससे बहुत व्यापक है। धर्म वह नैतिक व्यवस्था है जो समस्त जगत् को धारण करती है, जो व्यक्ति, समाज, राज्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करती है। इसी प्रकार भारतीय दर्शन (Philosophy) केवल बौद्धिक व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है – 'दर्शन' शब्द का अर्थ ही 'देखना' है, अर्थात् सत्य का साक्षात्कार।

भारतीय कला – चाहे वह अजंता की चित्रकारी हो, खजुराहो की मूर्तिकला हो, भरतनाट्यम की नृत्य-शैली हो, या ऋग्वेद का काव्य-सौंदर्य हो – यह सब आत्म-अभिव्यक्ति के साथ-साथ ईश्वर-अन्वेषण के भी माध्यम रहे हैं। भारतीय संस्कृति में कला को धर्म का अंग माना गया है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' – यह भारत का वह महान उद्घोष है जो समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखता है। यह केवल एक सुंदर विचार नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन की मूल आत्मा है जो व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व – इस क्रम में विस्तार पाती है।

NEP 2020 के अंतर्गत इन विषयों का अध्ययन विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से परिचित कराएगा और उन्हें एक जिम्मेदार, नैतिक और वैश्विक नागरिक बनने में सहायता करेगा।

3.2 धर्म: भारतीय दृष्टिकोण

3.2.1 'धर्म' शब्द का उद्गम और बहुआयामी अर्थ

'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति 'धृ' धातु से हुई है जिसका अर्थ है – 'धारण करना।' इस प्रकार धर्म का शाब्दिक अर्थ है – 'जो धारण करे', अर्थात् जो समाज, जगत् और सृष्टि को धारण करे, उसे टिकाए रखे।

महाभारत में धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:

> धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयति प्रजाः।
>
> यत् स्याद् धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।
>
> – महाभारत, शांतिपर्व 109.11

(धारण करने के कारण 'धर्म' कहलाता है; धर्म ही प्रजा को धारण करता है। जो धारण करने से युक्त हो, वही धर्म है – यह निश्चित है।)

'धर्म' के विभिन्न अर्थ:

धर्म का आयाम	विवरण एवं उदाहरण
नैतिक नियम	सत्य, अहिंसा, न्याय, दया – सर्वमान्य नैतिक मूल्य
कर्तव्य	राजधर्म, पुत्रधर्म, पतिधर्म, व्यावसायिक कर्तव्य
सामाजिक व्यवस्था	वर्णाश्रम व्यवस्था – समाज को संगठित करने का आधार
धार्मिक अनुष्ठान	यज्ञ, पूजा, तीर्थयात्रा – ईश्वर-भक्ति के माध्यम
प्राकृतिक नियम	जल का बहना, अग्नि का जलाना – प्रकृति का स्वभाव-धर्म
न्याय (Justice)	अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना भी धर्म है

सद्गुण (Virtue)	करुणा, उदारता, क्षमा, सहनशीलता
मोक्षमार्ग	धर्म पुरुषार्थ-चतुष्टय का प्रथम सोपान

3.2.2 सनातन धर्म और उसके मूल सिद्धांत

'सनातन धर्म' – यह भारत की उस धार्मिक परंपरा का नाम है जो अनादि काल से चली आ रही है। 'सनातन' का अर्थ है – शाश्वत, चिरस्थायी, जो कभी नष्ट न हो। सनातन धर्म के मूल सिद्धांत किसी एक ग्रंथ या एक व्यक्ति पर आधारित नहीं, बल्कि सहस्राब्दियों की आध्यात्मिक खोज का परिणाम हैं:

- एकेश्वरवाद और बहुदेववाद का समन्वय – 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक नामों से पुकारते हैं)।
- पुनर्जन्म और कर्म का सिद्धांत – आत्मा अमर है और कर्मानुसार जन्म-मृत्यु का चक्र चलता है।
- मोक्ष का लक्ष्य – जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति ही जीवन का परम लक्ष्य है।
- चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – जीवन के चार उद्देश्य।
- अहिंसा – सभी प्राणियों के प्रति हिंसा-भाव न रखना।
- सहिष्णुता – विभिन्न मतों, पंथों और विचारों का आदर।
- वेद-प्रामाण्य – श्रुति को ज्ञान का परम स्रोत मानना।

मनुस्मृति में दस प्रकार के धर्म-लक्षण बताए गए हैं:

> धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
> धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
>
> – मनुस्मृति 6.92

(धैर्य, क्षमा, दम (इंद्रिय-निग्रह), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (पवित्रता), इंद्रिय-संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध – ये दस धर्म के लक्षण हैं।)

3.2.3 भारतीय धर्म-परंपराओं की विविधता

भारत अनेक धर्म-परंपराओं का उद्गम-स्थल है। यहाँ न केवल विश्व के प्रमुख धर्मों में से चार (हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म) का जन्म हुआ, बल्कि भारत ने ईसाई, इस्लाम, पारसी जैसे विदेशी धर्मों को भी अपने आँचल में आश्रय दिया:

धर्म	संस्थापक/काल	मूल सिद्धांत	भारतीय योगदान
हिंदू धर्म	अनादि (वैदिक)	ब्रह्म-एकता, मोक्ष, धर्म	दर्शन, योग, वेद, उपनिषद्
बौद्ध धर्म	गौतम बुद्ध (563 ई.पू.)	चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग	अहिंसा, करुणा, शांति
जैन धर्म	महावीर (599 ई.पू.)	अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह	त्याग, पर्यावरण-संरक्षण
सिक्ख धर्म	गुरु नानक (1469 ई.)	ईक ओंकार, सेवा, समानता	भक्ति, मानव-सेवा, संगत
पारसी धर्म	जरथुस्त्र	अग्नि-पूजा, सत्य-धर्म	व्यापार, विज्ञान, मानवता
यहूदी धर्म	प्राचीन (भारत में आश्रित)	एकेश्वरवाद	केरल में प्राचीन समुदाय
ईसाई धर्म	ईसा मसीह (भारत में 52 ई.)	प्रेम, सेवा, मोक्ष	सेवा, शिक्षा, अस्पताल
इस्लाम	पैगम्बर मुहम्मद (7वीं शती)	एकेश्वरवाद, भ्रातृत्व	सूफी भक्ति, उर्दू साहित्य

भारत के इस धार्मिक वैविध्य को 'अनेकता में एकता' का जीवंत प्रमाण माना जाता है। यहाँ सभी धर्मों के मानने वाले सहस्राब्दियों से परस्पर सौहार्द के साथ रहते आए हैं।

3.2.4 धर्म और पाश्चात्य 'Religion' में अंतर

अंग्रेजी में 'Religion' का हिंदी अनुवाद 'धर्म' करना पूरी तरह सटीक नहीं है। दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण अंतर हैं:

तुलना का आधार	भारतीय धर्म	पाश्चात्य Religion
मूल अर्थ	धारण करना – नैतिक व्यवस्था	विश्वास की पद्धति, पंथ
दायरा	जीवन के सभी पक्षों को समाहित	मुख्यतः आस्था और उपासना
ईश्वर की अवधारणा	साकार, निराकार दोनों मान्य	मुख्यतः एक व्यक्तित्व-रूप ईश्वर
बहुलता	अनेक मत-पंथ स्वीकार्य	प्रायः एकमात्र सत्य का दावा
आधार ग्रंथ	अनेक (वेद, उपनिषद्, गीता आदि)	प्रायः एक पवित्र ग्रंथ
परिवर्तनशीलता	काल-देश के अनुसार व्याख्या संभव	अपेक्षाकृत कठोर सिद्धांत
लक्ष्य	मोक्ष/निर्वाण – जन्म-मृत्यु से मुक्ति	स्वर्ग-प्राप्ति, ईश्वर की कृपा

'रिलीजन' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन 'religare' (बाँधना) से मानी जाती है, जो किसी ईश्वर या पंथ से बंधन का भाव देता है, जबकि 'धर्म' संस्कृत की 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना, अर्थात् जो समाज और सृष्टि को धारण करे। इसीलिए भारतीय परंपरा में स्वधर्म, कुलधर्म, राजधर्म, पितृधर्म आदि अनेक प्रकार के कर्तव्यों को धर्म कहा गया है। 'सर्वधर्म समभाव' की भारतीय अवधारणा भी इसी व्यापक दृष्टि से उपजी है, जिसमें विभिन्न उपासना-पद्धतियों को सम्मान दिया जाता है। अतः धर्म को केवल 'मज़हब' या 'पंथ' के अर्थ में सीमित करना उसके मूल आशय को संकुचित करना है।

3.3 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ 'धर्म' शब्द _____ धातु से बना है जिसका अर्थ है _____ करना।

□ भारत में जन्म लेने वाले चार प्रमुख धर्म हैं – _____, _____, _____ और _____।

□ मनुस्मृति के अनुसार धर्म के _____ लक्षण हैं।

□ 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' यह उद्धरण _____ से लिया गया है।

(ब) सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

□ 'धर्म' और 'Religion' बिल्कुल एक ही अर्थ रखते हैं।
( )

□ बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध हैं।
( )

□ सनातन धर्म किसी एक व्यक्ति द्वारा स्थापित किया गया था।
( )

□ जैन धर्म में अहिंसा सर्वोच्च सिद्धांत है।
( )

3.4 भारतीय दर्शन: स्वरूप और प्रमुख सम्प्रदाय

3.4.1 'दर्शन' की अवधारणा

संस्कृत में 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धातु से बना है जिसका अर्थ है – देखना, साक्षात् करना। पाश्चात्य 'Philosophy' (ज्ञान के प्रति प्रेम) के विपरीत भारतीय 'दर्शन' का अर्थ है – सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव, न केवल बौद्धिक विचार।

भारतीय दर्शन की कुछ मूलभूत विशेषताएँ:

- व्यावहारिक उद्देश्य: भारतीय दर्शन का लक्ष्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि दुःख से मुक्ति (मोक्ष/निर्वाण) है।
- आत्म-साक्षात्कार: सत्य को तर्क से नहीं, अनुभव से जाना जाता है।
- श्रुति-आधारित: अधिकांश आस्तिक दर्शन वेद को प्रामाण मानते हैं।
- जीवन-दर्शन: केवल बौद्धिक व्यायाम नहीं – जीने की कला।
- सहिष्णुता: अनेक परस्पर भिन्न दर्शन-प्रणालियाँ परस्पर सम्मान के साथ विद्यमान रहीं।

3.4.2 आस्तिक (Orthodox) दर्शन-सम्प्रदाय

वे दर्शन-सम्प्रदाय जो वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं, 'आस्तिक' कहलाते हैं। भारत में छह प्रमुख आस्तिक दर्शन हैं – इन्हें 'षड्दर्शन' कहा जाता है:

दर्शन	प्रवर्तक	मूल ग्रंथ
न्याय दर्शन	गौतम ऋषि	न्यायसूत्र
वैशेषिक दर्शन	कणाद ऋषि	वैशेषिकसूत्र
सांख्य दर्शन	कपिल मुनि	सांख्यकारिका

योग दर्शन	पतंजलि	योगसूत्र
मीमांसा दर्शन	जैमिनि	मीमांसासूत्र
वेदांत दर्शन	बादरायण	ब्रह्मसूत्र

षड्दर्शन की मुख्य विशेषताएँ:

दर्शन	मुख्य सिद्धांत और योगदान
न्याय	प्रमाण-शास्त्र (Logic); चार प्रमाण: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द; ईश्वर-सिद्धि के तर्क
वैशेषिक	परमाणुवाद (Atomism); सात पदार्थ: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव
सांख्य	द्वैतवाद: पुरुष (चेतना) और प्रकृति (माया); 25 तत्त्वों का सिद्धांत; विकासवाद
योग	अष्टांग योग: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि
मीमांसा	वेद-वाक्यों की व्याख्या; कर्मकांड; यज्ञ-फल का सिद्धांत
वेदांत	ब्रह्म-जीव-जगत् का संबंध; अद्वैत (शंकर), विशिष्टाद्वैत (रामानुज), द्वैत (माधव)

3.4.3 नास्तिक (Heterodox) दर्शन-सम्प्रदाय

वे दर्शन-सम्प्रदाय जो वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते, 'नास्तिक' कहलाते हैं। भारत में तीन प्रमुख नास्तिक दर्शन हैं:

दर्शन	संस्थापक	मूल सिद्धांत
बौद्ध दर्शन	गौतम बुद्ध	चार आर्य सत्य, क्षणभंगुरता, अनात्मवाद, करुणा
जैन दर्शन	महावीर / पार्श्वनाथ	अनेकांतवाद, स्याद्वाद, अहिंसा, अपरिग्रह
चार्वाक दर्शन	बृहस्पति / चार्वाक	भौतिकवाद; केवल प्रत्यक्ष प्रमाण; इहलोकवाद

बौद्ध दर्शन 'मध्यम मार्ग' और अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से दुःख-निरोध का उपाय बताता है और आत्मा की स्थायी सत्ता के स्थान पर कर्म और प्रतीत्यसमुत्पाद (कार्य-कारण संबंध) पर बल देता है। जैन परंपरा में चौबीस तीर्थंकरों की मान्यता है, जिनमें अंतिम महावीर स्वामी हैं; इसके पाँच महाव्रत --- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह --- नैतिक जीवन के आधार हैं। चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानकर परलोक और कर्मफल का खंडन करता है। यद्यपि इन्हें 'नास्तिक' कहा गया है, किंतु इनका योगदान भारतीय तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र और सामाजिक चिंतन के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है।

3.4.4 वेदांत: भारतीय दर्शन का शिखर

वेदांत ('वेद का अंत/सार') भारतीय दर्शन का सर्वाधिक प्रभावशाली सम्प्रदाय है। प्रस्थानत्रयी — उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता — इसका आधार है। वेदांत की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं:

वेदांत-सम्प्रदाय	आचार्य	मूल सिद्धांत
अद्वैत वेदांत	आदि शंकराचार्य (788-820 ई.)	ब्रह्म एकमेव सत्य; जगत् मिथ्या; जीव ब्रह्म है
विशिष्टाद्वैत	रामानुजाचार्य (1017-1137 ई.)	ब्रह्म सगुण; जीव और जगत् ब्रह्म के अंश

द्वैत वेदांत	मध्वाचार्य (1238-1317 ई.)	ब्रह्म, जीव, जगत् – तीनों शाश्वत पृथक् सत्ताएँ

आदि शंकराचार्य का प्रसिद्ध वाक्य जो अद्वैत का सार है:

> ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।
>
> अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः।।
>
> – विवेकचूडामणि – शंकराचार्य

(ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है – इसी को जानना सच्छास्त्र का उद्देश्य है।)

3.4.5 आधुनिक भारतीय दर्शन: नवीन चिंतन-धाराएँ

19वीं-20वीं शताब्दी में भारतीय दर्शन ने नई ऊँचाइयाँ छुईं। इस काल के प्रमुख दार्शनिकों ने पाश्चात्य विचारों के साथ भारतीय परंपरा का समन्वय किया:

दार्शनिक	काल	मुख्य योगदान
स्वामी विवेकानंद	1863-1902	व्यावहारिक वेदांत; सेवा ही पूजा; नव-हिंदुत्व
महर्षि अरविंद	1872-1950	पूर्ण योग; अतिमानस; विकासवादी अध्यात्म
महात्मा गाँधी	1869-1948	सत्याग्रह; अहिंसा; रामराज्य की अवधारणा
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	1888-1975	तुलनात्मक दर्शन; भारतीय आध्यात्मिकता का विश्व-प्रसार

रमण महर्षि	1879-1950	आत्म-विचार; 'मैं कौन हूँ?' – आत्म-जिज्ञासा मार्ग
जिद्दू कृष्णमूर्ति	1895-1986	सत्य-मार्ग पर किसी का अनुसरण नहीं; स्वतंत्र सोच

इन आधुनिक विचारकों की एक साझा विशेषता यह थी कि उन्होंने परंपरा को पूर्णतः नकारा नहीं, बल्कि उसकी पुनर्व्याख्या करके उसे समकालीन समस्याओं से जोड़ा। विवेकानंद ने 1893 में शिकागो की विश्व धर्म-संसद में भारतीय अध्यात्म का संदेश प्रस्तुत किया; रवींद्रनाथ टैगोर ने मानवतावाद और विश्व-बंधुत्व पर बल दिया; डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन को पाश्चात्य जगत के समक्ष तर्कसंगत रूप में रखा और बाद में भारत के राष्ट्रपति बने। इन चिंतकों ने सामाजिक सुधार, शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3.5 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- 'दर्शन' और 'Philosophy' में क्या अंतर है?
- षड्दर्शन में से किसी दो के नाम और उनके प्रवर्तकों के नाम बताइए।
- अद्वैत वेदांत का मूल सिद्धांत क्या है?
- भारतीय दर्शन में 'नास्तिक' से क्या अभिप्राय है?

3.6 भारतीय कला: सौंदर्य, अध्यात्म और अभिव्यक्ति

3.6.1 भारतीय कला की दार्शनिक पृष्ठभूमि

भारतीय कला का मूल उद्देश्य केवल सौंदर्य-सृजन नहीं, बल्कि आत्मा का उत्थान और ईश्वर का साक्षात्कार है। भारतीय परंपरा में कला को 'ब्रह्म-विद्या' का अंग माना गया है।

अभिनवगुप्त के 'अभिनवभारती' में कला की परिभाषा:

> यत्र यत्र भवेल्लोके विविक्ता मनोरमा।
>
> कृतिः साधारणीकृत्य सा एव रसता मता।।
>
> — अभिनवभारती

(जहाँ कहीं भी लोक में विशिष्ट और मनोरम कृति हो, और जब वह साधारणीकृत (सार्वभौम) हो जाए, तभी वह रस-रूप होती है।)

भारतीय कला की विशेषताएँ:

- आध्यात्मिक लक्ष्य: कला ईश्वर-अन्वेषण और मोक्ष का माध्यम।
- रस-सिद्धांत: भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में नौ रसों की अवधारणा — कला का आनंद 'रस' की अनुभूति है।
- प्रतीकवाद: प्रत्येक रूप, रंग, मुद्रा का गहरा प्रतीकात्मक अर्थ।
- सामूहिकता: कला व्यक्तिगत नहीं, समाज और ईश्वर की सेवा का माध्यम।
- प्रकृति से प्रेरणा: पशु, पुष्प, नदी, पर्वत — प्रकृति कला का प्रमुख स्रोत।

3.6.2 नव-रस: भारतीय कला का आधार

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में नौ रसों (नवरस) की अवधारणा भारतीय कला का आधार-स्तम्भ है:

रस	स्थायीभाव	देवता/रंग
श्रृंगार	रति (प्रेम)	विष्णु / श्याम-हरित
हास्य	हास (हँसी)	प्रमथ / श्वेत
करुण	शोक (दुःख)	यम / कपोत (धूसर)
रौद्र	क्रोध	रुद्र / रक्त (लाल)
वीर	उत्साह	इंद्र / पीत (सुनहरा)
भयानक	भय	काल / कृष्ण (काला)
बीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)	शिव / नील
अद्भुत	विस्मय	ब्रह्मा / पीत
शांत	निर्वेद (वैराग्य)	विष्णु / श्वेत

रस-सिद्धांत की व्याख्या भरतमुनि के 'रस-सूत्र' से होती है, जिसके अनुसार विभाव (कारण), अनुभाव (शारीरिक प्रतिक्रिया) और व्यभिचारी (संचारी) भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। भरतमुनि ने मूलतः आठ रस गिनाए थे; परवर्ती आचार्यों ने 'शांत' रस को जोड़कर नवरस की परंपरा स्थापित की, जिसका स्थायीभाव 'निर्वेद' (शम) माना गया है। अभिनवगुप्त जैसे आचार्यों ने रस के आस्वाद की गहन दार्शनिक व्याख्या की। इस प्रकार रस केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सहृदय के चित्त को लौकिक अनुभव से ऊपर उठाकर आनंद की अनुभूति कराने वाला कलात्मक अनुभव है।

3.6.3 भारतीय स्थापत्य कला

भारत का स्थापत्य विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्थापत्यों में से एक है। मंदिर-स्थापत्य, बौद्ध स्तूप, इस्लामी-हिंदू समन्वित शैली – इन सभी में भारत ने अद्वितीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं:

शैली	मुख्य विशेषताएँ	प्रमुख उदाहरण
नागर शैली (उत्तर भारत)	शिखर, गर्भगृह, मंडप, प्रदक्षिणापथ	खजुराहो, सोमनाथ, कोणार्क
द्रविड़ शैली (दक्षिण)	गोपुरम, तडाग, विमान, प्राकार	बृहदेश्वर, मीनाक्षी, तिरुपति
वेसर शैली (मिश्रित)	नागर-द्रविड़ का समन्वय	होयसाल, बेलूर, हालेबिड
बौद्ध स्थापत्य	स्तूप, विहार, चैत्य, स्तम्भ	सांची, अमरावती, नालंदा
मुगल-हिंदू समन्वय	गुम्बद, मीनार + हिंदू तत्त्व	ताजमहल, फतेहपुर सीकरी
गुफा-स्थापत्य	पर्वत काटकर निर्माण	अजंता, एलोरा, एलीफेंटा

भारतीय स्थापत्य में प्रतीकात्मकता का विशेष स्थान है। मंदिर का गर्भगृह ब्रह्मांड के केंद्र का प्रतीक है, शिखर पर्वत और आकाश की ओर आरोहण का, तथा प्रदक्षिणापथ जीवन-चक्र का। साँची का स्तूप बौद्ध स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है, जबकि कुतुबमीनार, ताजमहल और फतेहपुर सीकरी जैसे स्मारक भारतीय और इस्लामी स्थापत्य-परंपराओं के समन्वय को दर्शाते हैं। वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र जैसे ग्रंथों में भवन-निर्माण के सिद्धांत और माप-विधान भी विस्तार से दिए गए हैं।

3.6.4 भारतीय शास्त्रीय नृत्य-परंपरा

भारत में शास्त्रीय नृत्य की आठ प्रमुख परंपराएँ हैं जिन्हें संगीत नाटक अकादमी ने मान्यता दी है:

नृत्य-शैली	उद्गम क्षेत्र	विशेषता
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	मंदिर-नृत्य; नवरस अभिव्यक्ति; देवदासी परंपरा
कथक	उत्तर भारत	कथा-वर्णन; मुगल-हिंदू समन्वय; तिहाई
कुचिपुड़ी	आंध्र प्रदेश	नाट्य-शास्त्र आधारित; ब्राह्मण-पुरुष नर्तक परंपरा
ओडिसी	ओडिशा	कोणार्क से प्रेरित; त्रिभंग मुद्रा; जगन्नाथ भक्ति
मणिपुरी	मणिपुर	रासलीला; कोमल, वृत्ताकार गति; राधा-कृष्ण भक्ति
मोहिनीअट्टम	केरल	लास्य (स्त्री-तत्त्व) प्रधान; श्वेत वस्त्र; सौम्य
कथकली	केरल	मुखौटा-नृत्य; महाकाव्य-कथाएँ; विशाल श्रृंगार
सत्त्रिया	असम	वैष्णव मठों की नृत्य-परंपरा; एकाकी शंकरदेव

शास्त्रीय नृत्य का सैद्धांतिक आधार भरतमुनि का नाट्यशास्त्र है, जिसमें अभिनय के चार प्रकार बताए गए हैं --- आंगिक (शारीरिक मुद्राएँ), वाचिक (वाणी), आहार्य (वेशभूषा और अलंकरण) तथा सात्त्विक (मन के भाव)। नृत्य में 'नृत्त' (शुद्ध लय-ताल), 'नृत्य' (भाव-अभिव्यक्ति) और 'नाट्य' (कथात्मक प्रस्तुति) का समन्वय होता है। हस्त-मुद्राएँ, पद-संचालन और मुख-भाव मिलकर कथा और रस को दर्शक तक पहुँचाते हैं। संगीत नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त आठ प्रमुख शैलियों में भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी, कथकली, मोहिनीअट्टम, मणिपुरी और सत्त्रिया सम्मिलित हैं।

3.6.5 भारतीय संगीत परंपरा

भारतीय संगीत विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम संगीत-परंपराओं में से एक है। इसकी नींव सामवेद में मिलती है जो गाया जाने वाला वेद है:

- हिंदुस्तानी संगीत (उत्तर भारत): राग-रागिनी पद्धति; ध्रुपद, खयाल, ठुमरी, टप्पा; तानसेन, बैजू बावरा।
- कर्नाटक संगीत (दक्षिण भारत): त्रिनेत्र-संत (त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री); कृति प्रधान।
- लोक-संगीत: भजन, कीर्तन, लावणी, बाउल, मांड, बिरहा – अनेक क्षेत्रीय परंपराएँ।
- वाद्य यंत्र: वीणा, सितार, तबला, मृदंगम, बाँसुरी, शहनाई – विश्व को भारत की देन।

सामवेद में सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) की मूल अवधारणा मिलती है, जिनसे राग-रचना का विकास हुआ। राग की विशेषता यह है कि वह निश्चित स्वर-समूह, आरोह-अवरोह और भाव-व्यंजना से युक्त होता है, तथा अनेक रागों का गायन दिन के विशिष्ट प्रहर या ऋतु से जोड़ा गया है। शार्ङ्गदेव का 'संगीत-रत्नाकर' (13वीं शताब्दी) संगीत का प्रमुख शास्त्रीय ग्रंथ है। आधुनिक काल में विष्णु नारायण भातखंडे ने रागों के वर्गीकरण की 'थाट' पद्धति विकसित की, जिससे संगीत-शिक्षा को व्यवस्थित आधार मिला।

3.6.6 भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकला का इतिहास भीमबेटका की शैलचित्रों (लगभग 30,000 वर्ष पूर्व) से प्रारम्भ होता है और आज तक अनेक शैलियों में विकसित होता रहा है:

चित्रकला शैली	विशेषता एवं काल
अजंता-एलोरा	बौद्ध-धर्म केंद्रित; ईसा पूर्व 2री शती से 7वीं शती; जीवंत रंग
राजस्थानी चित्रकला	17वीं-18वीं शती; राजपूत दरबार; कृष्ण-भक्ति विषय

पहाड़ी चित्रकला	हिमाचल-कांगड़ा; भावनात्मक; प्रेम और प्रकृति
मुगल चित्रकला	अकबर-जहाँगीर काल; फारसी-भारतीय समन्वय; बारीक काम
दक्कनी चित्रकला	बीजापुर, गोलकुंडा; फारसी + हिंदू प्रभाव
बंगाल स्कूल	अबनींद्रनाथ टैगोर; 19वीं-20वीं शती; राष्ट्रवादी आंदोलन
मधुबनी चित्रकला	बिहार; महिला-कला; मिट्टी-दीवार; प्राकृतिक रंग
वारली (Maharashtra)	आदिवासी; ज्यामितीय; सामूहिक जीवन का चित्रण

शास्त्रीय शैलियों के साथ-साथ भारत की लोक एवं जनजातीय चित्रकला परंपराएँ भी अत्यंत समृद्ध हैं। बिहार की मधुबनी (मिथिला) चित्रकला, महाराष्ट्र की वारली, ओडिशा की पट्टचित्र और आंध्र प्रदेश की कलमकारी अपनी-अपनी विशिष्ट रेखा, रंग और विषय-वस्तु के लिए जानी जाती हैं। इनमें प्रायः पौराणिक कथाएँ, प्रकृति और ग्राम-जीवन चित्रित होते हैं। ये कलाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहीं तथा आज भी अनेक परिवारों की आजीविका का आधार हैं।

3.7 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ (नृत्य-शैली)	**स्तम्भ-ब (उद्गम राज्य)**
भरतनाट्यम	ओडिशा
ओडिसी	तमिलनाडु
कथक	केरल
कथकली	उत्तर भारत
सत्त्रिया	असम

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए:

- नवरस में कौन-सा नवाँ रस जोड़ा गया? उसका स्थायीभाव क्या है?
- अजंता की गुफाएँ किस धर्म से संबंधित हैं?
- सामवेद का संबंध किससे है?

3.8 भारतीय संस्कृति: स्वरूप और विशेषताएँ

3.8.1 'संस्कृति' का अर्थ और भारतीय संकल्पना

'संस्कृति' शब्द संस्कृत की 'कृ' (करना) धातु में 'सम्' (सम्यक्/अच्छी तरह) और 'क्तिन्' प्रत्यय से बना है – जिसका अर्थ है 'सम्यक् परिष्कृत करना' अर्थात् मनुष्य का सम्यक् विकास।

अंग्रेजी 'Culture' लैटिन 'Cultura' (खेती करना) से आया है। भारतीय 'संस्कृति' इससे गहरी है – यह केवल बाहरी परिष्कार नहीं, भीतरी उत्थान है।

भारतीय संस्कृति की मूल विशेषताएँ:

- अनेकता में एकता (Unity in Diversity): भाषा, वेश, भोजन, उत्सव में विविधता, किंतु मूल्यों में एकता।
- आध्यात्मिक आधार: भौतिक समृद्धि से ऊपर आत्मिक उन्नति को महत्त्व।
- सहिष्णुता और समन्वय: अनेक परंपराओं, मतों और विचारों को साथ लेकर चलना।
- सतत प्रवाह: सहस्राब्दियों की निरंतरता – प्राचीनता और नवीनता का समन्वय।
- लोक और शास्त्र का समन्वय: ग्रंथ-ज्ञान और लोक-परंपरा का एक साथ संरक्षण।
- प्रकृति-पूजा: नदी, पर्वत, वृक्ष, पशु-पक्षी को सम्मान देने की परंपरा।

3.8.2 षोडश संस्कार: भारतीय जीवन-संस्कृति का चक्र

भारतीय संस्कृति में जन्म से मृत्यु तक जीवन को संस्कारों द्वारा परिष्कृत करने की व्यवस्था है। ये सोलह संस्कार (षोडश संस्कार) मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास को सुनिश्चित करते हैं:

संस्कार	अवसर	उद्देश्य
1. गर्भाधान	गर्भधारण से पूर्व	स्वस्थ संतान के लिए मनोभूमि तैयार करना
2. पुंसवन	गर्भ के तीसरे मास	भ्रूण के स्वास्थ्य की कामना
3. सीमंतोन्नयन	छठे-सातवें मास में	माँ और शिशु का मंगल
4. जातकर्म	जन्म के समय	नवजात का स्वागत-संस्कार
5. नामकरण	11वें या 12वें दिन	बालक का नाम रखना
6. निष्क्रमण	चौथे मास	सर्वप्रथम घर से बाहर ले जाना
7. अन्नप्राशन	छठे मास	प्रथम अन्न-भोजन का संस्कार
8. चूड़ाकर्म	1-3 वर्ष की आयु में	प्रथम मुंडन
9. कर्णवेध	तीसरे-पाँचवें वर्ष	कान छेदना
10. विद्यारंभ	5वें वर्ष	शिक्षा का आरम्भ
11. उपनयन	8-12 वर्ष	यज्ञोपवीत; गुरुकुल में प्रवेश
12. वेदारम्भ	उपनयन के बाद	वेद-अध्ययन का आरम्भ
13. केशांत / गोदान	16-17 वर्ष	प्रथम क्षौर-कर्म
14. समावर्तन	शिक्षा समाप्ति पर	गुरुकुल से गृह-वापसी

15. विवाह	युवावस्था में	गृहस्थ-जीवन का प्रवेश-संस्कार
16. अंत्येष्टि	मृत्यु पर	अंतिम संस्कार; देह का पाँच तत्त्वों में विलय

3.8.3 षड्ऋतु और भारतीय उत्सव-परंपरा

भारतीय संस्कृति में उत्सव और पर्वों की अनूठी परंपरा है। ये पर्व प्रकृति के ऋतु-चक्र, कृषि-चक्र और धर्म-चक्र के साथ जुड़े हैं:

ऋतु / माह	प्रमुख पर्व-उत्सव
वसंत (फरवरी-मार्च)	बसंत पंचमी, होली, महाशिवरात्रि
ग्रीष्म (अप्रैल-जून)	राम नवमी, अक्षय तृतीया, बुद्ध पूर्णिमा
वर्षा (जुलाई-अगस्त)	आषाढ़ी एकादशी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी
शरद (सितंबर-अक्टूबर)	नवरात्रि, दशहरा, करवाचौथ, शरद पूर्णिमा
हेमंत (अक्टूबर-नवंबर)	दीपावली, धनतेरस, भैया-दूज, छठ पूजा
शिशिर (दिसंबर-जनवरी)	मकर संक्रांति, लोहड़ी, पोंगल, बिहू

भारतीय पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप और सामूहिक आनंद के अवसर हैं। कृषि-चक्र से जुड़े पर्व --- मकर संक्रांति, पोंगल, लोहड़ी, बैसाखी, बिहू और ओणम --- फसल के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अलग नामों से मनाए जाने पर भी इनका भाव समान है। पर्वों के अवसर पर दान, सहभोज, लोक-कलाओं का प्रदर्शन और

परिवार-समाज का एकत्र होना सामाजिक एकता को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार उत्सव-परंपरा प्रकृति, समाज और संस्कृति को एक सूत्र में बाँधती है।

3.9 वसुधैव कुटुम्बकम्: मनुष्य, परिवार, समाज एवं विश्व

3.9.1 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्गम और अर्थ

'वसुधैव कुटुम्बकम्' – यह भारतीय चिंतन का वह महान सूत्र है जो समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखता है। यह उद्धरण महोपनिषद् और हितोपदेश दोनों में मिलता है:

> अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
>
> उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
>
> – महोपनिषद् 6.71-75 / हितोपदेश

(यह मेरा है, यह पराया है – ऐसी गणना क्षुद्र मन वाले करते हैं। उदार हृदय वालों के लिए तो समस्त पृथ्वी ही एक परिवार है।)

शब्द-विश्लेषण:

शब्द	विश्लेषण
वसुधा	वसु (धन/जीव) + धा (धारण करने वाली) = पृथ्वी
एव	'ही' – निश्चयबोधक अव्यय
कुटुम्बकम्	कुटुम्ब + कम् = परिवार (छोटा नहीं, आत्मीय अर्थ में)
पूरा वाक्य	समस्त पृथ्वी ही (मेरा) एक परिवार है

3.9.2 वसुधैव कुटुम्बकम् का दार्शनिक आधार

'वसुधैव कुटुम्बकम्' केवल एक भावुक नारा नहीं, इसके पीछे गहरा दार्शनिक आधार है:

- अद्वैत वेदांत का आधार: 'एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति' – ब्रह्म एक है; सभी प्राणियों में वही आत्मा है। जब सब में एक ही आत्मा है तो 'अपना-पराया' का भेद निरर्थक है।
- उपनिषदों का संदेश: 'तत् त्वम् असि' – वह (ब्रह्म) तुम हो। दूसरे प्राणी में भी वही ब्रह्म है जो मुझमें है।
- योग का दृष्टिकोण: 'सर्वभूतस्थमात्मानं' – समस्त प्राणियों में आत्मा को देखना ही योग की पराकाष्ठा है।
- बौद्ध करुणा: समस्त प्राणियों के प्रति करुणा – यही बुद्ध का संदेश है।
- जैन अनेकांतवाद: प्रत्येक दृष्टिकोण में सत्य का अंश है; कोई भी पूर्णतः गलत नहीं।

भगवद्गीता में यह भावना इस प्रकार व्यक्त हुई है:

> यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
> तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।
>
> – भगवद्गीता 6.30

(जो मुझे सर्वत्र देखता है और सब कुछ मुझमें देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।)

3.9.3 मनुष्य: व्यक्ति की अवधारणा

भारतीय दर्शन में मनुष्य की अवधारणा अत्यंत उदात्त है। यहाँ मनुष्य केवल एक जैविक प्राणी नहीं, बल्कि 'आत्मा-शरीर-मन' का समन्वित रूप है जो मोक्ष की क्षमता रखता है:

स्तर	भारतीय परंपरा की व्याख्या
स्थूल शरीर	पंचमहाभूतों से निर्मित; अन्नमय कोश
प्राण	जीवन-शक्ति; पाँच प्राण; प्राणमय कोश
मन	विचार-भावना; मनोमय कोश
बुद्धि	विवेक-शक्ति; विज्ञानमय कोश
आनंद	परम चेतना; आनंदमय कोश; ब्रह्म का अंश
आत्मा	नित्य, अजन्मा, अमर; पाँचों कोशों से परे

मनुष्य की इस बहुस्तरीय समझ से भारतीय परंपरा में 'व्यक्ति' को सर्वोच्च महत्त्व दिया गया है। 'अहं ब्रह्मास्मि' – मैं ब्रह्म हूँ – यह उद्घोष मनुष्य की अनंत क्षमता की स्वीकृति है।

3.9.4 परिवार: भारतीय समाज की नींव

भारतीय संस्कृति में परिवार (कुटुम्ब/परिवार) समाज की मूलभूत इकाई है। यहाँ परिवार केवल रक्त-संबंधों की इकाई नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक संस्था है:

भारतीय परिवार की विशेषताएँ:

- संयुक्त परिवार प्रणाली: एक ही छत के नीचे तीन-चार पीढ़ियाँ; परस्पर सहयोग और देखभाल।

- पितृसत्तात्मक आधार किंतु माँ की केंद्रीय भूमिका: 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'
- वंश-परंपरा: कुल-गोत्र-प्रवर की पहचान; पूर्वजों का श्राद्ध-तर्पण।
- धर्म का केंद्र: घर में ही पूजा-पाठ, संस्कार, व्रत-उत्सव।
- आर्थिक इकाई: संपत्ति का सामूहिक स्वामित्व; 'कर्ता' की व्यवस्था।
- बड़ों का आदर: चरण-स्पर्श, आज्ञा-पालन – बड़ों के प्रति सम्मान।

मनुस्मृति में माता-पिता की महत्ता:

> पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः।
>
> पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।।
>
> – मनुस्मृति 2.235

(पिता ही स्वर्ग है, पिता ही धर्म है, पिता ही परम तपस्या है। पिता की प्रसन्नता से सभी देवता प्रसन्न होते हैं।)

3.9.5 समाज: भारतीय सामाजिक दर्शन

भारतीय समाज-दर्शन में समाज को एक जीवंत इकाई के रूप में देखा गया है जिसमें प्रत्येक अंग का अपना महत्त्व है। पुरुष-सूक्त (ऋग्वेद 10.90) में समाज की इस अवधारणा को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त किया गया है।

भारतीय सामाजिक संरचना के प्रमुख तत्त्व:

सामाजिक तत्त्व	भारतीय दृष्टिकोण	आधुनिक महत्त्व
ग्राम-व्यवस्था	स्वायत्त ग्राम-गणतंत्र; पंचायत परंपरा	ग्रामीण स्वशासन का आधार
जाति-व्यवस्था (मूल)	कर्म-आधारित वर्ण-विभाजन; श्रम का सम्मान	व्यावसायिक विशेषज्ञता
दान-परंपरा	'दातव्यम्' – देना कर्तव्य है; मुफ्त अन्न-भोजन	सामाजिक सुरक्षा का आधार
गुरुकुल-परंपरा	शिक्षक-केंद्रित शिक्षा; चरित्र-निर्माण	व्यक्तित्व विकास
नारी-सम्मान	'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...' – नारी-पूजा	लैंगिक समानता की दिशा
पर्यावरण-सम्मान	प्रकृति माँ है; वृक्ष-पूजा; नदी पूजा	पर्यावरण-संरक्षण

3.9.6 विश्व-दृष्टि: वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक आयाम

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना व्यक्ति और परिवार की सीमाओं को पार कर समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखती है। इस विश्व-दृष्टि के कई आयाम हैं:

- राजनीतिक आयाम: विश्व-शांति, अहिंसा, संवाद – युद्ध नहीं, वार्ता से समाधान।
- आर्थिक आयाम: संपत्ति का न्यायपूर्ण वितरण; 'अपरिग्रह' – आवश्यकता से अधिक संचय नहीं।
- पर्यावरणीय आयाम: पृथ्वी सबकी माँ है; 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' – सभी का उत्तरदायित्व।

- सांस्कृतिक आयाम: सभी संस्कृतियों का आदर; 'एकेन्द्र नाना देशाः' – एक लक्ष्य, अनेक मार्ग।
- मानवाधिकार आयाम: सभी मनुष्य समान हैं – जाति, रंग, लिंग, देश से परे।

अथर्ववेद की पृथ्वी-सूक्ति में इस विश्व-परिवार की भावना प्रकट होती है:

> माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
>
> पर्जन्यः पिता स मे वृष्टिम् दातु।।
>
> – अथर्ववेद 12.1.12

(भूमि मेरी माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। पर्जन्य (वर्षा-देव) मेरे पिता हैं – वे मुझे वर्षा प्रदान करें।)

3.9.7 वसुधैव कुटुम्बकम् और समकालीन विश्व

आज के विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है:

वैश्विक चुनौती	वसुधैव कुटुम्बकम् का समाधान
जलवायु परिवर्तन	पृथ्वी एक परिवार है – सामूहिक उत्तरदायित्व
वैश्विक महामारी (COVID-19)	'वसुधा एक परिवार' – वैक्सीन-साझाकरण, सहायता
आतंकवाद और युद्ध	अहिंसा और संवाद – 'शत्रु भी मेरे परिवार का सदस्य'
आर्थिक असमानता	'अपरिग्रह' – संचय की सीमा; न्यायपूर्ण वितरण
शरणार्थी संकट	'अतिथि देवो भव' – अतिथि सत्कार की परंपरा
साइबर-युद्ध	सूचना का नैतिक उपयोग; सत्य और अहिंसा
सांस्कृतिक टकराव	'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' – सभी मार्ग सत्य तक

भारत की G20 अध्यक्षता 2023 में 'वसुधैव कुटुम्बकम् – एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' थीम का प्रयोग इस प्राचीन भारतीय दर्शन की आधुनिक वैश्विक प्रासंगिकता का प्रमाण है।

3.10 अपनी प्रगति जाँचें – 4 (Check Your Progress – 4)

(अ) एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
- षोडश संस्कारों में से प्रथम और अंतिम संस्कार कौन-से हैं?
- G20 2023 का थीम क्या था और वह किस भारतीय दर्शन पर आधारित था?
- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' – यह किस ग्रंथ से है?

(ब) निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए (20-25 शब्दों में):

- संस्कृति
- वसुधैव कुटुम्बकम्
- नवरस

3.11 NEP 2020 और भारतीय धर्म-दर्शन-संस्कृति

3.11.1 NEP 2020 के उद्देश्य और भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन किया है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया गया है। इस संदर्भ में धर्म, दर्शन, कला और संस्कृति का अध्ययन विद्यार्थियों को:

- राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक गौरव से परिचित कराता है।
- नैतिक मूल्यों और जीवन-कौशल की शिक्षा देता है।
- भारतीय वैज्ञानिक और दार्शनिक चिंतन का परिचय कराता है।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से वैश्विक नागरिकता का संस्कार देता है।
- बहुविषयक (Multidisciplinary) दृष्टि विकसित करता है।

NEP 2020 की सिफारिशों में कला-शिक्षा और संस्कृति को केवल पाठ्येतर गतिविधि न मानकर शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। नीति में मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा, संस्कृत तथा अन्य शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और 'भारतीय ज्ञान प्रणालियों' के समावेश पर विशेष बल दिया गया है। इससे विद्यार्थी इतिहास, दर्शन, कला और संस्कृति को अलग-अलग विषयों के रूप में नहीं, बल्कि परस्पर जुड़ी एक समग्र परंपरा के रूप में समझ पाते हैं।

3.11.2 भारतीय संस्कृति की वैश्विक देन

भारत ने विश्व-सभ्यता को अनेक अमूल्य उपहार दिए हैं:

भारत की वैश्विक देन	विवरण
शून्य और दशमलव प्रणाली	आधुनिक गणित और कम्प्यूटर का आधार
योग और ध्यान	विश्व में 30 करोड़ से अधिक लोग योग अभ्यासी
आयुर्वेद	3000 वर्ष पुरानी चिकित्सा-प्रणाली; आधुनिक वैकल्पिक चिकित्सा
शतरंज (चतुरंग)	भारत से विश्व में फैला
बौद्ध-जैन दर्शन	अहिंसा, करुणा – विश्व-शांति का आधार
संस्कृत भाषा	अनेक यूरोपीय भाषाओं की जननी; कम्प्यूटर के लिए आदर्श
नाट्यशास्त्र	विश्व के प्राचीनतम नाट्य-सिद्धांत
वास्तुशास्त्र	स्थापत्य की वैज्ञानिक परंपरा

खगोलशास्त्र	आर्यभट की खोजें; बीजगणित; त्रिकोणमिति
वसुधैव कुटुम्बकम्	वैश्विक बंधुत्व का दर्शन

भारत की सांस्कृतिक देन केवल प्राचीन उपलब्धियों तक सीमित नहीं है; भारतीय प्रवासी समुदाय, योग, आयुर्वेद, सिनेमा, संगीत और भोजन के माध्यम से आज भी भारत की 'सॉफ्ट पावर' विश्व में प्रभाव डाल रही है। अहिंसा और सत्याग्रह के गाँधीवादी सिद्धांत ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं को प्रेरित किया। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति की देन विचार, विज्ञान, कला और जीवन-मूल्यों --- सभी क्षेत्रों में विश्व-समुदाय के लिए उपयोगी रही है।

3.12 सारांश (Summary)

इस अध्याय में हमने 'धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणाओं का व्यापक अध्ययन किया। मुख्य बिंदु:

1. धर्म की व्यापकता: 'धर्म' की अवधारणा 'Religion' से कहीं अधिक व्यापक है। यह नैतिक नियम, कर्तव्य, सामाजिक व्यवस्था और मोक्षमार्ग – सभी का समावेश करती है।
2. धार्मिक वैविध्य: भारत ने चार महान धर्मों को जन्म दिया और अन्य धर्मों को सहर्ष आश्रय दिया – यही 'अनेकता में एकता' का व्यावहारिक उदाहरण है।
3. षड्दर्शन: न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत – ये छह दर्शन-सम्प्रदाय भारतीय दार्शनिक चिंतन की अपूर्व उपलब्धि हैं।
4. वेदांत का शिखर: अद्वैत वेदांत – 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' – भारतीय दर्शन का सर्वोच्च प्रतिनिधित्व करता है।

5. भारतीय कला: नवरस, शास्त्रीय नृत्य, स्थापत्य, संगीत और चित्रकला – ये सब आत्म-अभिव्यक्ति और ईश्वर-अन्वेषण के माध्यम हैं।
6. षोडश संस्कार: जन्म से मृत्यु तक जीवन को परिष्कृत करने की यह अनूठी व्यवस्था भारतीय संस्कृति की विशेषता है।
7. वसुधैव कुटुम्बकम्: 'समस्त पृथ्वी एक परिवार है' – यह दर्शन अद्वैत वेदांत की अनुभूति पर आधारित है।
8. चार स्तर: व्यक्ति → परिवार → समाज → विश्व – यह क्रम भारतीय जीवन-दृष्टि का मूल है।
9. समकालीन प्रासंगिकता: जलवायु परिवर्तन, महामारी, युद्ध – आज की वैश्विक चुनौतियों का समाधान 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में है।
10. NEP 2020: भारतीय धर्म-दर्शन-संस्कृति का अध्ययन विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव, नैतिक मूल्य और वैश्विक दृष्टि विकसित करता है।

3.13 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
धर्म	'धृ' धातु से – जो धारण करे; नैतिक नियम, कर्तव्य और मोक्षमार्ग का समग्र रूप
सनातन धर्म	शाश्वत, अनादि धर्म-परंपरा जो वेद-आधारित और सर्वव्यापी है
दर्शन	'दृश्' धातु से – सत्य का साक्षात्कार; भारतीय Philosophy
षड्दर्शन	छह आस्तिक दर्शन: न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत

अद्वैत वेदांत	शंकराचार्य का दर्शन: ब्रह्म एकमेव सत्य, जगत् मिथ्या, जीव ब्रह्म है
प्रस्थानत्रयी	वेदांत के तीन प्रमाण-ग्रंथ: उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता
नवरस	भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के नौ रस: श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत, शांत
संस्कृति	'सम्' + 'कृ' + 'क्तिन्' – सम्यक् परिष्कार; मनुष्य का भौतिक-आत्मिक उत्थान
षोडश संस्कार	जन्म से मृत्यु तक जीवन के सोलह संस्कार
वसुधैव कुटुम्बकम्	'समस्त पृथ्वी एक परिवार है' – महोपनिषद् एवं हितोपदेश का महान सूत्र
पुरुषार्थ-चतुष्टय	जीवन के चार लक्ष्य: धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
नाट्यशास्त्र	भरतमुनि का ग्रंथ; रस-सिद्धांत, नृत्य, संगीत, नाटक के नियम
अहिंसा	किसी भी प्राणी को मन-वचन-कर्म से पीड़ा न देना; जैन-बौद्ध-गाँधी का सर्वोच्च सिद्धांत
अनेकांतवाद	जैन दर्शन का सिद्धांत: प्रत्येक दृष्टिकोण में आंशिक सत्य है
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में समाहित करने का ढाँचा
G20 थीम 2023	'वसुधैव कुटुम्बकम् – एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'

3.14 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. 'धर्म' की भारतीय अवधारणा की विस्तृत व्याख्या कीजिए। पाश्चात्य 'Religion' से इसकी तुलना करते हुए भारतीय दृष्टिकोण की विशिष्टता स्पष्ट कीजिए।
2. भारतीय दर्शन के आस्तिक और नास्तिक सम्प्रदायों का परिचय दीजिए। षड्दर्शन की विशेषताएँ और उनके योगदान का विवेचन कीजिए।
3. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को विस्तार से समझाइए। इसके दार्शनिक आधार और समकालीन विश्व में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
4. भारतीय कला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। नवरस सिद्धांत और शास्त्रीय नृत्य-परंपरा पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. सनातन धर्म के पाँच मूल सिद्धांत बताइए।
2. अद्वैत वेदांत और विशिष्टाद्वैत में क्या अंतर है?
3. षोडश संस्कारों में से किसी पाँच का नाम और महत्त्व बताइए।
4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दार्शनिक आधार क्या है?
5. भारत की किन्हीं पाँच वैश्विक सांस्कृतिक देनों का उल्लेख कीजिए।
6. भारतीय परिवार-व्यवस्था की विशेषताएँ बताइए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

1. 'धर्म' शब्द किस धातु से बना है? (अ) दृश् (ब) धृ (स) दिश् (द) धा
2. षड्दर्शन में योग-दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं? (अ) गौतम (ब) कपिल (स) पतंजलि (द) बादरायण
3. नवरस में नवाँ रस कौन-सा है? (अ) वीर (ब) अद्भुत (स) शांत (द) करुण
4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' किस ग्रंथ में पाया जाता है? (अ) रामायण (ब) महाभारत (स) महोपनिषद् (द) ऋग्वेद
5. भरतनाट्यम किस राज्य का शास्त्रीय नृत्य है? (अ) केरल (ब) तमिलनाडु (स) ओडिशा (द) मणिपुर
6. षोडश संस्कारों की संख्या है: (अ) 10 (ब) 12 (स) 16 (द) 18
7. G20 2023 का भारतीय थीम था: (अ) अहिंसा परमो धर्मः (ब) वसुधैव कुटुम्बकम् (स) सत्यमेव जयते (द) जननी जन्मभूमि

3.15 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

3.3 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'धारण' करना।
2. भारत में जन्म लेने वाले चार धर्म – हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिक्ख धर्म।
3. मनुस्मृति के अनुसार धर्म के 10 (दस) लक्षण हैं।

4. 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' ऋग्वेद से लिया गया है।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – 'धर्म' और 'Religion' के अर्थ में मूलभूत अंतर है।
2. सही (✓) – बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध हैं।
3. गलत (✗) – सनातन धर्म अनादि है; यह किसी एक व्यक्ति द्वारा स्थापित नहीं।
4. सही (✓) – जैन धर्म में अहिंसा सर्वोच्च सिद्धांत है।

3.5 के उत्तर:

1. दर्शन बनाम Philosophy: 'दर्शन' का अर्थ है सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव; Philosophy का अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम (बौद्धिक)।
2. षड्दर्शन में से दो: न्याय दर्शन – प्रवर्तक गौतम ऋषि; वैशेषिक दर्शन – प्रवर्तक कणाद ऋषि।
3. अद्वैत वेदांत: 'ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।'
4. भारतीय दर्शन में 'नास्तिक': जो दर्शन-सम्प्रदाय वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते।

3.7 के उत्तर (सही मिलान):

नृत्य-शैली	सही उद्गम राज्य
भरतनाट्यम	तमिलनाडु
ओडिसी	ओडिशा
कथक	उत्तर भारत

कथकली	केरल
सत्त्रिया	असम

1. नवाँ रस 'शांत' है; इसका स्थायीभाव 'निर्वेद' (वैराग्य) है।
2. अजंता की गुफाएँ बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।
3. सामवेद का संबंध संगीत और गायन से है — यह गाया जाने वाला वेद है।

3.10 के उत्तर:

1. वसुधैव कुटुम्बकम् का शाब्दिक अर्थ: 'समस्त पृथ्वी ही एक परिवार है।'
2. प्रथम संस्कार: गर्भाधान; अंतिम संस्कार: अंत्येष्टि।
3. G20 2023 थीम: 'वसुधैव कुटुम्बकम् — एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' — महोपनिषद् पर आधारित।
4. 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' — अथर्ववेद (12.1.12) से।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (3.14 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब) धृ
2	(स) पतंजलि
3	(स) शांत
4	(स) महोपनिषद्
5	(ब) तमिलनाडु
6	(स) 16
7	(ब) वसुधैव कुटुम्बकम्

3.16 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- ऋग्वेद – (गंगानाथ झा अनुवाद, गीताप्रेस)
- महोपनिषद् – आनंदाश्रम संस्करण
- भगवद्गीता – गीताप्रेस, गोरखपुर
- महाभारत – शांतिपर्व (गीताप्रेस)
- मनुस्मृति – (गंगानाथ झा अनुवाद)
- योगसूत्र – पतंजलि (श्री अरविंद अनुवाद)
- नाट्यशास्त्र – भरतमुनि
- हितोपदेश – नारायण पंडित
- विवेकचूडामणि – शंकराचार्य

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- हरिवंश राय बच्चन – भारतीय दर्शन की रूपरेखा
- राधाकृष्णन, एस. – भारतीय दर्शन (हिंदी अनुवाद), राजपाल एंड संस, दिल्ली
- गोविंद चंद्र पांडे – भारतीय परंपरा के मूल स्वर, राजकमल प्रकाशन
- वासुदेवशरण अग्रवाल – भारत की सांस्कृतिक एकता, वाराणसी
- सुधाकर द्विवेदी – षड्दर्शन-परिचय, चौखम्बा, वाराणसी

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Radhakrishnan, S. – Indian Philosophy (2 vols.), Oxford University Press
- Dasgupta, S.N. – A History of Indian Philosophy, Cambridge University Press
- Basham, A.L. – The Wonder That Was India, Rupa Publications
- Zimmer, Heinrich – Philosophies of India, Princeton University Press
- Coomaraswamy, A.K. – The Dance of Shiva, Dover Publications
- Tagore, Rabindranath – The Religion of Man, Unwin Books

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://www.sangeetnatak.gov.in – संगीत नाटक अकादमी
- https://www.wisdomlib.org – संस्कृत ग्रंथों का डिजिटल भंडार
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल
- https://ccrtindia.gov.in – सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 4	VATTER:DR DHARAMBIR

Unit-2 धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति

राजनीति एवं शासन व्यवस्था,जनपद एवं ग्राम स्वराज्य की अवधारणा, भारतीय कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

Polity & Governance | Janapada & Gram Swarajya | Features of Indian Art & Culture

Section	शीर्षक
4.0	अधिगम उद्देश्य (8 points)
4.1	प्रस्तावना
4.2	जनपद: लोकतांत्रिक शासन का प्राचीन आधार
4.2.1	'जनपद' शब्द का उद्गम और अर्थ
4.2.2	महाजनपद काल (600-300 ई.पू.) – 16 महाजनपद सारणी
4.2.3	गणतांत्रिक जनपद: वज्जि संघ का विशेष अध्ययन
4.2.4	सभा और समिति की भूमिका + आधुनिक तुलना
4.3	☑ Check Your Progress — 1
4.4	ग्राम स्वराज्य: स्थानीय स्वशासन की भारतीय परंपरा
4.4.1	ग्राम-व्यवस्था का ऐतिहासिक स्वरूप
4.4.2	चोल साम्राज्य – उत्तरमेरूर शिलालेख
4.4.3	महात्मा गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा
4.4.4	73वाँ संविधान संशोधन और पंचायती राज
4.4.5	PESA अधिनियम और स्वामित्व योजना
4.5	☑ Check Your Progress — 2
4.6	भारतीय कला की प्रमुख विशेषताएँ
4.6.1	आध्यात्मिकता: कला का प्राण
4.6.2	रस-सिद्धांत: भारतीय कला-सौंदर्यशास्त्र का आधार
4.6.3	प्रतीकवाद: रूप के पीछे का अर्थ

Section	शीर्षक
4.6.4	विविधता में एकता: क्षेत्रीय शैलियाँ और राष्ट्रीय आत्मा
4.6.5	मूर्तिकला: परंपरा और विकास
4.6.6	स्थापत्य कला: मंदिर, स्तूप और किले
4.6.7	शास्त्रीय नृत्य-परंपरा (8 नृत्य शैलियाँ)
4.6.8	भारतीय संगीत-परंपरा
4.6.9	लोक-कला और हस्तशिल्प
4.7	☑ Check Your Progress — 3
4.8	भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ
4.8.1	सातत्य और निरंतरता
4.8.2	सहिष्णुता और समन्वय
4.8.3	अनेकता में एकता
4.8.4	आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय (चार पुरुषार्थ)
4.8.5	प्रकृति-पूजा और पर्यावरण-चेतना
4.8.6	नारी-शक्ति का सम्मान
4.8.7	गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञान का प्रवाह
4.8.8	वैश्विक दृष्टि और विश्व-मानवतावाद
4.9	☑ Check Your Progress — 4
4.10	समकालीन प्रासंगिकता
4.10.1	जनपद से पंचायती राज तक: लोकतंत्र का निरंतर प्रवाह

4.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य, शासन और लोकतंत्र की परंपराओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'जनपद' की अवधारणा – उसके उद्गम, विकास और ऐतिहासिक महत्व को समझ सकेंगे।
- महाजनपद-काल की गणतांत्रिक और राजतांत्रिक शासन-व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- 'ग्राम स्वराज्य' की परंपरा – ग्राम सभा, पंचायत और स्थानीय स्वशासन के ऐतिहासिक आधारों को समझ सकेंगे।
- महात्मा गाँधी की ग्राम-स्वराज की अवधारणा और उसकी समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- भारतीय कला की प्रमुख विशेषताओं – आध्यात्मिकता, प्रतीकवाद, रस-सिद्धांत, क्षेत्रीय विविधता और एकता को पहचान सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति की विशेषताओं – सातत्य, सहिष्णुता, समन्वय, प्रकृति-पूजा और सार्वभौमिकता का विश्लेषण कर सकेंगे।
- NEP 2020 के संदर्भ में इन अवधारणाओं की आधुनिक प्रासंगिकता और भारतीय शासन-परंपरा के वैश्विक योगदान को समझ सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय सभ्यता का गौरव केवल उसकी आध्यात्मिकता या दर्शन में नहीं, बल्कि उसकी शासन-परंपरा, कला और संस्कृति में भी समान रूप से प्रकट होता है। भारत वह देश है जहाँ विश्व

का प्रथम ज्ञात गणतंत्र – वज्जि संघ – विद्यमान था; जहाँ ग्राम-स्वशासन की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है; और जहाँ 'लोक' और 'शास्त्र' दोनों का समन्वय एक अद्वितीय सांस्कृतिक परंपरा का निर्माण करता है।

प्राचीन भारत में राज्य को धर्म का संरक्षक माना गया था और शासन को एक नैतिक उत्तरदायित्व। 'जनपद' शब्द में ही लोकतांत्रिक भावना निहित है – 'जन' अर्थात् लोग और 'पद' अर्थात् स्थान – अर्थात् जहाँ लोग रहते हैं, जो लोगों का है। यह अवधारणा आधुनिक लोकतंत्र से हजारों वर्ष पूर्व भारत में स्थापित हो चुकी थी।

'ग्राम स्वराज्य' की परंपरा भारतीय शासन-व्यवस्था का वह स्तम्भ है जो केंद्रीय सत्ता के उतार-चढ़ाव के बावजूद ग्राम-समुदाय को स्वायत्त और जीवंत बनाए रखती थी। महात्मा गाँधी ने इसी परंपरा को आधुनिक भारत के लिए 'रामराज्य' का आदर्श बताया था।

भारतीय कला और संस्कृति की विशेषताएँ उसे विश्व की अन्य संस्कृतियों से अलग करती हैं। यहाँ की कला में आध्यात्मिकता और सौंदर्य का अनन्य समन्वय है; और संस्कृति में सहस्राब्दियों का निरंतर प्रवाह है जो परिवर्तन को स्वीकार करते हुए भी अपनी मूल पहचान बनाए रखती है।

यह अध्याय इन सभी विषयों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है ताकि विद्यार्थी भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विरासत को गहराई से समझ सकें।

4.2 जनपद: लोकतांत्रिक शासन का प्राचीन आधार

4.2.1 'जनपद' शब्द का उद्गम और अर्थ

'जनपद' शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है – 'जन' (लोग/मनुष्य) और 'पद' (स्थान/चरण)। शाब्दिक अर्थ है – 'जहाँ जन (लोग) अपने पाँव रखते हैं' – अर्थात् जनता का निवास-स्थान, जनता का अपना राज्य।

ऋग्वेद में 'जन' और 'विश' का उल्लेख मिलता है – ये प्राचीन जनजातीय समूहों को इंगित करते हैं। कालांतर में जब इन जनजातियों ने भू-खंडों पर स्थायी निवास स्थापित किया, तो 'जनपद' की अवधारणा विकसित हुई। अथर्ववेद में 'राष्ट्र' और 'जनपद' को राज्य-संगठन के आधार के रूप में उल्लिखित किया गया है।

> जनस्य गोप्ता निहिताभिचक्षे सुमेधा अ इन्द्रो यजते वसूनि।
>
> राजा देवानां भुवनस्य गोप्ता स नो मृड वरुणो मृळ्ळयताम्।।
>
> – अथर्ववेद 4.38.1

(जन का संरक्षक, सर्वदर्शी, बुद्धिमान इंद्र धन की पूजा करता है। देवताओं का राजा, लोक का रक्षक वरुण हमें सुख दे।)

जनपद की विशेषताएँ:

- भौगोलिक सीमा: जनपद एक निश्चित भू-खंड था जिसकी सीमाएँ पर्वत, नदी या वन से निर्धारित होती थीं।
- जन-समुदाय: एक विशेष 'जन' (जनजाति या समुदाय) का निवास-क्षेत्र।
- शासन-व्यवस्था: राजा, मंत्री-परिषद् और सभा/समिति का समन्वित शासन।
- आर्थिक आत्मनिर्भरता: कृषि, पशुपालन और व्यापार पर आधारित अर्थव्यवस्था।
- सांस्कृतिक पहचान: प्रत्येक जनपद की अपनी भाषा, परंपरा और उत्सव।

4.2.2 महाजनपद काल (600-300 ईसा पूर्व): भारत का पहला गणतांत्रिक युग

600-300 ईसा पूर्व का काल भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। इस काल में सोलह महाजनपद अस्तित्व में आए जो दो प्रकार की शासन-व्यवस्था से चलते थे:

महाजनपद	राजधानी	शासन-प्रकार	विशेषता
मगध	राजगृह/पाटलिपुत्र	राजतंत्र	सर्वाधिक शक्तिशाली; मौर्य साम्राज्य का आधार
कोशल	श्रावस्ती	राजतंत्र	बुद्ध के काल का प्रमुख राज्य; अयोध्या इसी में
वज्जि (लिच्छवि)	वैशाली	गणतंत्र	विश्व का प्रथम ज्ञात गणतंत्र; बुद्ध ने प्रशंसा की
मल्ल	कुशीनगर/पावा	गणतंत्र	बुद्ध का महापरिनिर्वाण यहीं हुआ
काशी	वाराणसी	राजतंत्र	ज्ञान और व्यापार का प्रमुख केंद्र
अंग	चंपा	राजतंत्र	मगध ने अधिग्रहण किया
वत्स	कौशांबी	राजतंत्र	उदयन राजा की राजधानी
पांचाल	अहिच्छत्र/काम्पिल्य	राजतंत्र/गणतंत्र	महाभारत की भूमि
कुरु	हस्तिनापुर/इंद्रप्रस्थ	गणतंत्र	महाभारत का प्रमुख राज्य
अवंति	उज्जैन/माहिष्मती	राजतंत्र	पश्चिम भारत का शक्तिशाली राज्य
गांधार	तक्षशिला	राजतंत्र	तक्षशिला विश्वविद्यालय; विद्या का केंद्र
मत्स्य	विराटनगर	राजतंत्र	राजस्थान का प्राचीन राज्य
शूरसेन	मथुरा	राजतंत्र/गणतंत्र	कृष्ण की मथुरा
चेदि	शुक्तिमती	राजतंत्र	मध्य भारत
अश्मक	पोटन/पैठान	राजतंत्र	दक्षिण का एकमात्र महाजनपद
कांभोज	राजपुर	गणतंत्र	उत्तर-पश्चिम; गणतांत्रिक

4.2.3 गणतांत्रिक जनपद: वज्जि संघ का विशेष अध्ययन

वज्जि संघ (Vajjian Confederacy) विश्व के प्राचीनतम ज्ञात गणतंत्रों में से एक है। वैशाली (वर्तमान बिहार) इसकी राजधानी थी। यह आठ राज्यों का एक महासंघ था जिसमें लिच्छवि सर्वाधिक प्रभावशाली थे।

वज्जि संघ की शासन-व्यवस्था:

शासन-तत्त्व	विवरण
राजन् (Gana-raja)	निर्वाचित प्रमुख – आनुवंशिक नहीं, लोगों द्वारा चुना गया
सन्निपात (Parliament)	समस्त नागरिकों की महासभा; नियमित बैठकें
उपोसथ-गृह	सभागार जहाँ संसद की बैठकें होती थीं
बहुमत से निर्णय	'भिक्खुनं संघो' – संघ के सभी सदस्यों की सहमति
न्याय-व्यवस्था	स्वतंत्र न्यायाधीश; अपील की व्यवस्था
सामूहिक नेतृत्व	एकल राजा नहीं; 'राजन्' की परिषद् से शासन
नागरिक अधिकार	समस्त क्षत्रिय नागरिकों को मताधिकार
सैन्य व्यवस्था	सामूहिक सुरक्षा; प्रत्येक सदस्य-राज्य का योगदान

बौद्ध ग्रंथ महापरिनिब्बानसुत्त में वर्णित है कि भगवान बुद्ध ने वज्जि संघ की शासन-व्यवस्था की प्रशंसा की थी। उन्होंने आनंद को बताया था कि जब तक लिच्छवि ये सात नियम मानते रहेंगे – नियमित सभाएँ करना, एकमत से निर्णय लेना, बड़ों का सम्मान करना, स्त्रियों का सम्मान करना, धर्म की रक्षा करना, अरहंतों की देखभाल करना और श्रेष्ठजनों का आतिथ्य करना – तब तक उनका पतन नहीं होगा।

> यावञ्च, आनन्द, वज्जी अभिण्हं सन्निपातं सन्निपतिस्सन्ति।
>
> सन्निपतिस्सन्ति च सहिताव, वुड्ढिय्येव, आनन्द, वज्जीनं पाटिकङ्खा नो पहानि।
>
> — महापरिनिब्बानसुत्त

(जब तक वज्जी लोग नियमित रूप से सभाएँ करते रहेंगे और एकमत से निर्णय लेते रहेंगे, तब तक उनकी उन्नति होती रहेगी, पतन नहीं।)

4.2.4 जनपद-शासन में सभा और समिति की भूमिका

ऋग्वेद में 'सभा' और 'समिति' का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद (7.12.1) में कहा गया है — 'सभा च मा समितिश्च' (सभा और समिति दोनों मुझे समृद्ध करें)।

संस्था	स्वरूप	कार्य
सभा	वरिष्ठ नागरिकों की छोटी परिषद्	न्याय, नीति-निर्माण, राजा को परामर्श
समिति	बड़ी जन-सभा (लोक-सभा जैसी)	महत्त्वपूर्ण निर्णय; राजा का चुनाव या अनुमोदन
परिषद्	मंत्री-परिषद् (Cabinet)	दैनंदिन शासन; विभागीय कार्य
विदथ	प्राचीनतम संस्था; ऋग्वेद में उल्लिखित	धार्मिक-आर्थिक कार्य; लूट का वितरण

इन संस्थाओं की तुलना आधुनिक भारतीय संसद से की जा सकती है:

प्राचीन संस्था	आधुनिक समकक्ष
सभा (Senate-जैसी)	राज्यसभा (Council of States)
समिति (जन-सभा)	लोकसभा (House of the People)
परिषद् (मंत्री-परिषद्)	केंद्रीय मंत्रिमंडल (Union Cabinet)

राजन् (निर्वाचित प्रमुख)	राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री
धर्मसभा (न्याय-परिषद्)	सर्वोच्च न्यायालय

4.3 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ 'जनपद' शब्द में 'जन' का अर्थ _____ और 'पद' का अर्थ _____ है।

□ वज्जि संघ की राजधानी _____ थी।

□ भारत के महाजनपदों की संख्या _____ थी।

□ ऋग्वेद में जनतांत्रिक संस्थाओं के रूप में _____ और _____ का उल्लेख है।

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

□ वज्जि संघ में राजा का पद आनुवंशिक था।
( )

□ मगध महाजनपद की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
( )

□ महात्मा बुद्ध ने वज्जि संघ की शासन-पद्धति की आलोचना की थी। ( )

□ अश्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था।
( )

4.4 ग्राम स्वराज्य: स्थानीय स्वशासन की भारतीय परंपरा

4.4.1 ग्राम-व्यवस्था का ऐतिहासिक स्वरूप

भारत में ग्राम सदा से सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक जीवन की मूलभूत इकाई रहा है। प्राचीन भारत में जहाँ बड़े साम्राज्य उठते-गिरते रहे, वहाँ ग्राम-व्यवस्था अपनी स्वायत्तता और निरंतरता बनाए रखती रही। यही कारण है कि अनेक आक्रमण और राज-परिवर्तन के बावजूद भारतीय सभ्यता का मूल ढाँचा सुरक्षित रहा।

ऋग्वेद में 'ग्रामणी' (ग्राम-प्रमुख) का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में ग्राम-प्रशासन का विस्तृत विवरण है। मेगस्थनीज (यूनानी राजदूत) ने भी भारत की ग्राम-व्यवस्था की प्रशंसा की थी।

प्राचीन ग्राम-व्यवस्था के मुख्य अंग:

अंग / पदाधिकारी	कार्य एवं महत्त्व
ग्रामणी / ग्रामाधिपति	ग्राम का प्रमुख; प्रशासन और न्याय का उत्तरदायित्व
ग्राम-सभा	समस्त वयस्क नागरिकों की सभा; महत्त्वपूर्ण निर्णय
पंचायत (ग्राम-परिषद्)	पाँच या अधिक वरिष्ठ नागरिकों की परिषद्; नीति-निर्माण
लेखक / कारणिक	भूमि-अभिलेख, कर-संग्रह का लेखा-जोखा
गोप	10 ग्रामों का निरीक्षक; कर-संग्रह
स्थानिक	एक 'स्थान' (चार ग्राम-समूह) का प्रशासक
जाति-पंचायत	जाति-विशेष के विवादों का निपटारा
ग्राम-देवता	ग्राम की सामूहिक धार्मिक पहचान और पूजा-स्थल

4.4.2 चोल साम्राज्य की उत्तम पंचायत व्यवस्था

दक्षिण भारत में चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी ई.) की 'उत्तम-पल्लि' (उत्तम ग्राम-व्यवस्था) विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रामीण लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में से एक मानी जाती है।

तमिलनाडु के उत्तरमेरूर में 920 ई. और 921 ई. के शिलालेख पाए गए हैं जिनमें ग्राम-सभा के चुनाव के नियम विस्तार से अंकित हैं:

- ग्राम को 30 वार्डों (कूट्रम) में विभाजित किया गया था।
- प्रत्येक वार्ड से एक प्रतिनिधि चुना जाता था – एक वर्ष के कार्यकाल के लिए।
- चुनाव प्रक्रिया: उम्मीदवार का नाम ताड़पत्र पर लिखकर घड़े में डाला जाता था, फिर बालक द्वारा निकाला जाता था – 'कुडल ओलई' प्रणाली (Lottery System)।
- अयोग्यता के कारण: जो पिछले तीन वर्षों में खाता-जाँच नहीं करा सका, जिसने शौचालय का उपयोग घर के बाहर किया, जिस पर ऋण हो – वह अयोग्य था।
- ग्राम-सभा की समितियाँ: वार्षिक समिति (वार्षिक बजट), उद्यान समिति (जलाशय-प्रबंधन), स्वर्ण समिति (सोने के लेनदेन की जाँच)।

यह व्यवस्था सिद्ध करती है कि भारत में लोकतंत्र, चुनाव-प्रणाली और पारदर्शी शासन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है।

4.4.3 महात्मा गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा

महात्मा गाँधी भारतीय ग्राम-परंपरा के सर्वाधिक प्रबल आधुनिक प्रवक्ता थे। उनकी 'ग्राम स्वराज' (Village Self-Rule) की अवधारणा प्राचीन भारतीय ग्राम-परंपरा का आधुनिक पुनर्कथन है।

गाँधी की ग्राम स्वराज की मुख्य विशेषताएँ:

सिद्धांत	विवरण
स्वायत्तता	प्रत्येक ग्राम एक पूर्ण गणराज्य हो; अपनी जरूरतें स्वयं पूरी करे
ग्राम-पंचायत	पाँच व्यक्तियों की परिषद् जो समस्त ग्रामीण कार्य देखे
स्वदेशी	ग्रामीण उद्योग-धंधे; खादी; स्थानीय उत्पादन और खपत
सर्वोदय	सबका उदय – अंतिम व्यक्ति तक कल्याण
अहिंसा	विवाद-निपटारा बिना हिंसा के; सत्याग्रह
सामाजिक समानता	जाति-भेद, लिंग-भेद का अंत; सब एक समान
पर्यावरण-चेतना	प्रकृति के साथ सामंजस्य; न्यूनतम उपभोग
शिक्षा	बुनियादी तालीम (नई तालीम) – कार्य-आधारित शिक्षा

गाँधी जी ने कहा था:

> भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।
>
> यदि गाँव नष्ट हो गए, तो भारत नष्ट हो जाएगा।
>
> भारत का भविष्य उसके गाँवों में है, शहरों में नहीं।
>
> – महात्मा गाँधी – हरिजन, 1936

4.4.4 संवैधानिक प्रावधान: 73वाँ संविधान संशोधन और पंचायती राज

भारत के संविधान में ग्राम-स्वशासन को मान्यता देने के लिए 1992 में 73वाँ संविधान संशोधन किया गया। इसने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा दिया:

प्रावधान	विवरण	महत्त्व
अनुच्छेद 243	पंचायती राज की संवैधानिक व्यवस्था	ग्राम स्वराज को संवैधानिक मान्यता
त्रिस्तरीय व्यवस्था	ग्राम-पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद्	तीन स्तरों पर स्थानीय शासन
ग्राम-सभा	सभी वयस्क मतदाताओं की बैठक	प्रत्यक्ष लोकतंत्र का आधार
आरक्षण	SC/ST और महिलाओं को 1/3 आरक्षण	समावेशी शासन
पाँच वर्षीय कार्यकाल	नियमित चुनाव की गारंटी	लोकतांत्रिक जवाबदेही
29 विषय	शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि आदि स्थानांतरित	विकेंद्रीकृत शासन
वित्त आयोग	राज्य वित्त आयोग – पंचायत को धन	आर्थिक स्वायत्तता

आज भारत में लगभग 2.5 लाख ग्राम-पंचायतें हैं जिनमें 30 लाख से अधिक निर्वाचित प्रतिनिधि कार्यरत हैं – जिनमें से 14 लाख से अधिक महिलाएँ हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा ग्रामीण लोकतंत्र है।

4.4.5 ग्राम स्वराज और आधुनिक भारत: PESA अधिनियम और स्वामित्व योजना

भारत में ग्राम स्वराज को व्यावहारिक रूप देने के लिए अनेक कानून और योजनाएँ लागू की गई हैं:

कानून / योजना	उद्देश्य एवं प्रावधान
PESA अधिनियम 1996	आदिवासी क्षेत्रों में ग्राम-सभा को विशेष शक्तियाँ; जल-जंगल-जमीन पर अधिकार
मनरेगा (2005)	ग्रामीण रोजगार गारंटी; ग्राम-पंचायत की अध्यक्षता में
स्वच्छ भारत मिशन	ग्राम-सभा की नेतृत्व में स्वच्छता अभियान
जल-जीवन मिशन	हर घर जल; ग्राम-जल-समिति की भूमिका
स्वामित्व योजना (2020)	ड्रोन से ग्रामीण भूमि का मानचित्रण; संपत्ति-कार्ड
आदर्श ग्राम योजना	सांसद आदर्श ग्राम योजना; ग्राम-विकास का मॉडल
ई-ग्राम स्वराज	पंचायती राज का डिजिटल पोर्टल; पारदर्शिता

73वें संविधान संशोधन द्वारा जोड़े गए अनुच्छेद 243 से 243-O (भाग IX) पंचायतों की त्रि-स्तरीय संरचना, नियमित चुनाव, आरक्षण तथा राज्य वित्त आयोग की व्यवस्था करते हैं। अनुच्छेद 243-क ग्राम-सभा को गाँव के मतदाताओं की सभा के रूप में मान्यता देता है, जो ग्राम-स्तर पर योजनाओं की निगरानी और सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) का महत्त्वपूर्ण मंच है। 'स्वामित्व योजना' के अंतर्गत ग्रामीण आबादी वाली भूमि के संपत्ति-कार्ड बनने से ग्रामीणों को ऋण प्राप्त करने और विवाद-समाधान में सुविधा मिलती है। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य गाँधीजी की 'ग्राम स्वराज' की परिकल्पना को व्यावहारिक रूप देना है।

4.5 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- उत्तरमेरूर के शिलालेख क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?
- महात्मा गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।
- 73वें संविधान संशोधन का मुख्य उद्देश्य क्या था?

- PESA अधिनियम किसके लिए और क्यों बनाया गया?

4.6 भारतीय कला की प्रमुख विशेषताएँ

4.6.1 आध्यात्मिकता: कला का प्राण

भारतीय कला की सर्वप्रमुख विशेषता उसकी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि है। यहाँ कला का जन्म मंदिर में हुआ और उसका लक्ष्य ईश्वर-दर्शन रहा है। चाहे अजंता की बौद्ध चित्रकारी हो, खजुराहो की मूर्तिकला हो या भरतनाट्यम का नृत्य – सभी में आत्मा और परमात्मा के मिलन की खोज है।

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने कला का उद्देश्य बताया है:

> न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
> नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन्यन्न दृश्यते।।
> – नाट्यशास्त्र, भरतमुनि

(न वह ज्ञान है, न वह शिल्प है, न वह विद्या है, न वह कला है, न वह योग है, न वह कर्म है – जो नाट्य में दिखाई न दे। अर्थात् नाट्य-कला सब कुछ का समावेश करती है।)

4.6.2 रस-सिद्धांत: भारतीय कला-सौंदर्यशास्त्र का आधार

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में प्रतिपादित 'रस-सिद्धांत' भारतीय कला-समीक्षा (Aesthetics) का मूल आधार है। 'रस' का शाब्दिक अर्थ है – 'सार, रस, आनंद।' कला-रस वह आनंद है जो दर्शक के हृदय में उत्पन्न होता है:

> विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।
>
> तत्र विभावा नामान्यलम्बनोद्दीपनविभावाः।।
>
> – नाट्यशास्त्र 6.31

(विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।)

रस-सिद्धांत के प्रमुख तत्त्व:

तत्त्व	विवरण
स्थायीभाव	हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान मूल भाव (जैसे – रति, हास, क्रोध)
विभाव	रस को जाग्रत करने वाले कारण (आलंबन + उद्दीपन)
अनुभाव	भाव के प्रकट होने के बाहरी संकेत (अश्रु, कंपन, मुस्कान)
संचारी/व्यभिचारी भाव	33 क्षणिक भाव जो स्थायीभाव को पोषित करते हैं
रस-निष्पत्ति	इन सभी के समन्वय से दर्शक के हृदय में रस का उदय
साधारणीकरण	अभिनवगुप्त का सिद्धांत: कला दर्शक को उसके 'स्व' से मुक्त कर सार्वभौम बनाती है

4.6.3 प्रतीकवाद: रूप के पीछे का अर्थ

भारतीय कला में प्रत्येक रूप, रंग, मुद्रा और अलंकरण का एक गहरा प्रतीकात्मक अर्थ होता है। यह कला केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सत्यों को दृश्य-रूप देने के लिए है:

प्रतीक	रूप / चित्रण	आध्यात्मिक अर्थ
कमल (Lotus)	कीचड़ में उगा सुंदर पुष्प	माया में रहकर भी शुद्ध रहना; आत्मा की पवित्रता
त्रिशूल	शिव का अस्त्र; तीन दाँत	सृष्टि-स्थिति-प्रलय; तमस-रजस-सत्त्व
चक्र	विष्णु का सुदर्शन	काल-चक्र; ब्रह्मांड की गति; धर्म की रक्षा
नटराज	नृत्य करते शिव; अग्नि का घेरा	सृष्टि-संहार का नित्य नृत्य; ब्रह्मांडीय ऊर्जा
अभय-मुद्रा	हाथ ऊपर, हथेली बाहर	भय मत करो; मैं रक्षक हूँ
वरद-मुद्रा	हाथ नीचे, वरदान देते हुए	मैं देता हूँ; दैवी कृपा
गरुड़	विष्णु का वाहन; विशाल पक्षी	आत्मा की उड़ान; अहंकार पर विजय
सर्प/नाग	शिव के गले में; शेषनाग	काल; कुंडलिनी शक्ति; पुनर्जन्म

4.6.4 विविधता में एकता: क्षेत्रीय शैलियाँ और राष्ट्रीय आत्मा

भारतीय कला की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि विभिन्न क्षेत्रों, काल-खंडों और धर्मों की अलग-अलग शैलियाँ होने के बावजूद उनमें एक अंतर्निहित एकता है। यह एकता विषय-वस्तु (ईश्वर-खोज, प्रकृति-प्रेम, मानव-मूल्य), तकनीक (शास्त्र-आधारित) और लक्ष्य (मोक्ष/आनंद) में प्रकट होती है:

कला-परंपरा	क्षेत्र / काल	विशिष्ट योगदान
मौर्य कला	300-185 ई.पू.	अशोक-स्तंभ; सारनाथ की सिंह-मूर्ति; राष्ट्रीय प्रतीक
गुप्तकालीन कला	320-550 ई.	अजंता, एलोरा; शास्त्रीय आदर्श; बौद्ध-हिंदू समन्वय
द्रविड़ शैली	दक्षिण भारत	बृहदेश्वर मंदिर; मीनाक्षी; विस्तृत गोपुरम

चोल कांस्य मूर्तिकला	9वीं-13वीं शती	नटराज; विश्व की श्रेष्ठ धातु-मूर्तियाँ
राजपूत-मुगल शैली	16वीं-18वीं शती	लघुचित्र; हिंदू-फारसी समन्वय
बंगाल स्कूल	19वीं-20वीं शती	राष्ट्रवादी कला; अबनींद्रनाथ टैगोर
लोक-कला	अनादि काल से	मधुबनी, वारली, पट्टचित्र; जीवंत जन-परंपरा

4.6.5 भारतीय कला की अन्य प्रमुख विशेषताएँ

उपर्युक्त के अतिरिक्त भारतीय कला की निम्नलिखित विशेषताएँ भी उल्लेखनीय हैं:

- शास्त्र-आधारित: भारतीय कला शास्त्रों (नाट्यशास्त्र, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अभिलषितार्थचिंतामणि) पर आधारित है – यह स्वच्छंद नहीं, नियम-बद्ध है।
- प्रकृति से प्रेरणा: पशु-पक्षी, पुष्प-लता, नदी-पर्वत – भारतीय कला में प्रकृति का अनन्य स्थान है।
- समन्वय-परंपरा: हिंदू, बौद्ध, जैन, इस्लाम – सभी परंपराओं ने एक-दूसरे को प्रभावित किया।
- सामाजिक भागीदारी: कला केवल विशेषज्ञों की नहीं; मंदिर-निर्माण और उत्सव में समाज की सहभागिता।
- सांकेतिक भाषा: मुद्राएँ, आसन, रंग – सभी का विशेष अर्थ; कला एक अलग 'भाषा' है।
- निरंतर प्रवाह: भारतीय कला-परंपरा में कोई 'Dark Age' नहीं; हजारों वर्षों की निरंतरता।

- सामूहिक सृजन: अनेक भारतीय कलाकृतियाँ अनाम हैं – व्यक्तिगत यश नहीं, ईश्वर-सेवा ही उद्देश्य।
- देह-सौंदर्य का उत्सव: अजंता की अप्सराएँ, खजुराहो की मूर्तियाँ – काम और मोक्ष दोनों को स्वीकार करने वाली दृष्टि।

4.7 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

(अ) सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ	स्तम्भ-ब
नटराज	शिव का सृष्टि-संहार नृत्य
कमल	माया में रहकर शुद्ध आत्मा
अभय-मुद्रा	भय मत करो – दैवी संरक्षण
रस-निष्पत्ति	विभाव + अनुभाव + संचारी भाव
चोल कांस्य	नटराज – विश्व-श्रेष्ठ धातु-मूर्तियाँ

(ब) एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

□ नाट्यशास्त्र के अनुसार 'रस' की परिभाषा क्या है?

□ 'साधारणीकरण' का सिद्धांत किसने दिया और इसका अर्थ क्या है?

□ भारतीय कला में 'सामूहिक सृजन' का क्या अर्थ है?

4.8 भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

4.8.1 सातत्य और निरंतरता (Continuity)

भारतीय संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता उसकी अखंड निरंतरता है। जहाँ मिस्र, मेसोपोटामिया, यूनान और रोम की प्राचीन सभ्यताएँ इतिहास की धूल में विलीन हो गईं, वहाँ भारतीय संस्कृति

आज भी जीवंत है। ऋग्वेद के मंत्र आज भी पढ़े जाते हैं, संस्कार आज भी होते हैं, और रामायण-महाभारत आज भी लोगों की जीवन-दृष्टि का आधार हैं।

> पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
>
> सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।।
>
> — मालविकाग्निमित्र — कालिदास

(न सब पुराना इसलिए अच्छा है और न सब नया इसलिए बुरा। विद्वान परीक्षा करके श्रेष्ठ को ग्रहण करते हैं; मूर्ख दूसरों के कहने पर चलता है।)

सातत्य के प्रमाण:

- वैदिक मंत्रों का निरंतर उच्चारण — 3500 वर्षों से।
- षोडश संस्कारों की निरंतर परंपरा।
- तीर्थयात्रा, उत्सव और उपवास की जीवंत परंपरा।
- संस्कृत भाषा में ज्ञान का संरक्षण।
- गुरु-शिष्य परंपरा में ज्ञान का प्रवाह।

4.8.2 सहिष्णुता और समन्वय (Tolerance & Synthesis)

भारतीय संस्कृति की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी असाधारण सहिष्णुता और समन्वय-शक्ति है। भारत ने न केवल अनेक मत-पंथों को जन्म दिया, बल्कि बाहर से आने वाली संस्कृतियों को भी आत्मसात किया — उनके श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण करते हुए और अपनी मूल पहचान बनाए रखते हुए।

समन्वय का उदाहरण	विवरण	परिणाम
बौद्ध-हिंदू समन्वय	बुद्ध को विष्णु का अवतार माना गया	संस्कृति में एकता
भक्ति आंदोलन	कबीर, रैदास – हिंदू-इस्लाम का समन्वय	नई संत-परंपरा
सूफी-भक्ति	हिंदू और मुस्लिम संत एक साथ	साझी आध्यात्मिक विरासत
सिक्ख धर्म	हिंदू-इस्लाम का श्रेष्ठ समन्वय	एक नई परंपरा का जन्म
स्थापत्य-समन्वय	मुगल-हिंदू स्थापत्य (ताजमहल)	भारतीय-फारसी कला
उर्दू भाषा	संस्कृत + फारसी + तुर्की का मिश्रण	एक नई भाषा का उदय

ऋग्वेद में सहिष्णुता का सर्वोत्तम उद्घोष:

> एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।
>
> – ऋग्वेद 1.164.46

(सत्य एक है; ज्ञानी उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।) – यह भारतीय सहिष्णुता का सार-वाक्य है।

4.8.3 अनेकता में एकता (Unity in Diversity)

भारत में 1600 से अधिक बोलियाँ और भाषाएँ, 8 प्रमुख धर्म, सैकड़ों जातियाँ और उपजातियाँ, छह भोजन-परंपराएँ, आठ शास्त्रीय नृत्य-शैलियाँ – इतनी विविधता के बावजूद एक अंतर्निहित एकता है:

- भाषाई विविधता किंतु संस्कृत-आधारित साहित्यिक परंपरा।
- धार्मिक विविधता किंतु 'धर्म' की सामान्य नैतिक अवधारणा।
- क्षेत्रीय विविधता किंतु तीर्थ-यात्रा से राष्ट्रीय एकता।
- जातीय विविधता किंतु 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सार्वभौम आदर्श।
- उत्सव-विविधता किंतु दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस – सबका सामूहिक उत्सव।

अनेकता में एकता का यह स्वरूप संविधान की व्यवस्थाओं में भी दिखाई देता है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है, और अनेक भाषाओं के बावजूद तीर्थ-यात्राओं (चारधाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ), रामायण-महाभारत की कथाओं और पर्वों के माध्यम से सांस्कृतिक एकता बनी रही। आदि शंकराचार्य द्वारा चार दिशाओं में चार मठों की स्थापना जैसे ऐतिहासिक प्रयास भी भारत की सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने वाले माने जाते हैं।

4.8.4 आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय

भारतीय संस्कृति न केवल आध्यात्मिक है, बल्कि यह भौतिक जीवन को भी उतना ही महत्त्व देती है। 'चार पुरुषार्थ' – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – इस समन्वय का सूत्र है। यहाँ न अति-भौतिकता है और न अति-आध्यात्मिकता; बल्कि दोनों का संतुलित समन्वय है।

पुरुषार्थ	अर्थ	आधुनिक समकक्ष
धर्म	नैतिक आचरण	Ethics & Rule of Law
अर्थ	आर्थिक समृद्धि	Economics & Governance
काम	इच्छाओं की संतुष्टि	Human Desires & Arts
मोक्ष	मुक्ति/मोक्ष	Spiritual Freedom

भारतीय परंपरा में जीवन को चार आश्रमों --- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास --- में बाँटा गया है, जो भोग और त्याग के संतुलन का मार्ग दिखाते हैं। ईशावास्य उपनिषद् का पहला मंत्र 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' सिखाता है कि संसार का उपभोग त्याग-भाव के साथ किया जाए। इस प्रकार अर्थ और काम को वर्जित नहीं माना गया, बल्कि उन्हें धर्म के अनुशासन में रखने का आदर्श दिया गया, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का संतुलित विकास संभव होता है।

4.8.5 प्रकृति-पूजा और पर्यावरण-चेतना

भारतीय संस्कृति की एक अनूठी विशेषता प्रकृति के प्रति श्रद्धा और पूजन-भाव है। यहाँ नदी, पर्वत, वृक्ष, पशु-पक्षी — सभी को पवित्र और पूजनीय माना गया है:

- नदी-पूजन: गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी — नदियाँ माँ हैं; उनकी पूजा।
- वृक्ष-पूजन: पीपल (बोधि-वृक्ष), वट, तुलसी, बेल — वृक्षों की पूजा-परंपरा।
- पशु-पूजन: गाय, हाथी, साँप, मोर — पशुओं को देवता और वाहन के रूप में सम्मान।
- भूमि-पूजन: 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' — पृथ्वी माँ है।
- अथर्ववेद की पृथ्वी-सूक्ति: 12.1 — प्रकृति-संरक्षण का प्राचीनतम ग्रंथ।

> वृक्षाद्वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्नसम्भवः।
>
> अन्नाद्भवन्ति भूतानि तस्मात् सर्वं वृक्षाश्रितम्।।
>
> — महाभारत, शांतिपर्व

(वृक्षों से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है, अन्न से प्राणी जीते हैं। इसलिए समस्त जीव-जगत् वृक्षों पर आश्रित है।)

4.8.6 नारी-शक्ति का सम्मान

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति, ज्ञान और सौंदर्य का प्रतीक माना गया है। देवी-पूजन की परंपरा इसी का प्रकट रूप है:

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
>
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।
>
> — मनुस्मृति 3.56

(जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। जहाँ नारियों का सम्मान नहीं, वहाँ सभी कर्म निष्फल होते हैं।)

भारतीय परंपरा में महिलाओं की भूमिका:

क्षेत्र	प्रमुख नाम / परंपरा
वैदिक ऋषिकाएँ	गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, अपाला — ऋग्वेद में 27 महिला ऋषिकाएँ
भक्ति-संतकवयित्री	मीराबाई, अक्काम्हादेवी, अण्डाल — भक्ति-काव्य की स्तम्भ
योद्धा-वीरांगनाएँ	रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुलतान, दुर्गावती
दार्शनिक-विदुषी	गार्गी (जनक की राज्यसभा में), खना (खगोलशास्त्री)
कला-परंपरा	देवदासी-नृत्य, मधुबनी-चित्रकला — महिला-नेतृत्व
आधुनिक काल	इंदिरा गाँधी, सरोजिनी नायडू, कल्पना चावला

4.8.7 गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञान का प्रवाह

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा ज्ञान के संरक्षण और संचरण का मुख्य माध्यम रही है। मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है:

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्।

समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।

– मुण्डकोपनिषद् 1.2.12

(उस ज्ञान को जानने के लिए शिष्य श्रोत्रिय (वेदज्ञ) और ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्म में स्थित) गुरु के पास जाए।)

गुरुकुल परंपरा की विशेषताएँ:

- गुरु के आश्रम में निवास – जंगल में, प्रकृति के निकट।
- व्यावहारिक शिक्षा – केवल पुस्तक नहीं, जीवन-कौशल भी।
- चरित्र-निर्माण – ज्ञान के साथ नैतिक शिक्षा।
- निःशुल्क शिक्षा – 'गुरुदक्षिणा' अपनी सामर्थ्य के अनुसार।
- समानता – राजा का पुत्र और किसान का पुत्र एक साथ।

4.8.8 वैश्विक दृष्टि और विश्व-मानवतावाद

भारतीय संस्कृति कभी संकीर्ण राष्ट्रवाद में नहीं उलझी। उसकी दृष्टि सदा विश्व-मानवतावादी रही है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से लेकर बौद्ध धर्म के प्रचार तक, भारत ने सदा विश्व-कल्याण की कामना की है:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

– बृहदारण्यकोपनिषद्

(सभी सुखी हों, सभी रोग-मुक्त हों, सभी कल्याण देखें, कोई भी दुःख का भागी न हो।)

भारत की वैश्विक सांस्कृतिक यात्रा:

देश / क्षेत्र	भारतीय संस्कृति का प्रभाव
दक्षिण-पूर्व एशिया	अंगकोर वाट (कम्बोडिया), बोरोबुदुर (इंडोनेशिया); हिंदू-बौद्ध मंदिर
श्रीलंका, म्यांमार	बौद्ध धर्म और संस्कृति का केंद्र
मध्य एशिया	तक्षशिला और नालंदा से ज्ञान-प्रसार
चीन-जापान	बौद्ध धर्म, योग, आयुर्वेद
अरब-फारस	गणित, खगोलशास्त्र, शून्य की खोज
यूरोप-अमेरिका	योग, ध्यान, आयुर्वेद; संस्कृत-भाषाविज्ञान
विश्व-साहित्य	पंचतंत्र, हितोपदेश – विश्व-साहित्य में भारतीय कथाएँ

4.9 अपनी प्रगति जाँचें – 4 (Check Your Progress – 4)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

- 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' यह उद्धरण _____ से है।
- भारतीय संस्कृति की सातत्य-परंपरा में ऋग्वेद _____ वर्षों से पढ़ा जा रहा है।
- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...' यह उद्धरण _____ से लिया गया है।
- गुरुकुल परंपरा में शिक्षा _____ आधारित थी।

(ब) निम्नलिखित के दो-दो उदाहरण दीजिए:

- भारतीय संस्कृति में नदी-पूजन के उदाहरण: _____ और _____।
- भारतीय संस्कृति में समन्वय के उदाहरण: _____ और _____।
- वैदिक ऋषिकाओं के नाम: _____ और _____।

4.10 समकालीन प्रासंगिकता: भारतीय राजनीति, कला और संस्कृति आज

4.10.1 जनपद से पंचायती राज तक: लोकतंत्र का निरंतर प्रवाह

भारत में लोकतंत्र कोई आयातित विचार नहीं है। वैदिक सभा-समिति से महाजनपदों के गणतंत्र तक, चोल-पंचायत से आधुनिक ग्राम-सभा तक – यह एक अखंड लोकतांत्रिक परंपरा है। 2023 में भारत G20 की अध्यक्षता करते हुए 'विश्व की माँ लोकतंत्र' (Mother of Democracy) के रूप में अपनी पहचान प्रस्तुत की।

प्राचीन परंपरा	आधुनिक प्रतिरूप
वैदिक सभा-समिति	संसद (लोकसभा-राज्यसभा)
जनपद-शासन	राज्य-सरकारें (Federalism)
ग्राम-पंचायत	73वें संशोधन की पंचायती राज व्यवस्था
ग्राम-सभा	ग्राम-सभा (Direct Democracy)
गणतंत्र (वज्जि)	भारतीय गणतंत्र (Republic of India)
राजधर्म	संवैधानिक नैतिकता और सुशासन
दंडनीति	कानून का शासन (Rule of Law)

यह निरंतरता केवल संस्थाओं में ही नहीं, बल्कि मूल्यों में भी दिखाई देती है। प्राचीन सभा-समिति में विचार-विमर्श और सहमति से निर्णय की प्रक्रिया, गण-संघों में बहुमत से निर्णय (शलाका द्वारा मतदान), तथा गाँव की पंचायत में न्याय और सामुदायिक निर्णय की परंपरा --- ये सब आज के संसदीय लोकतंत्र और पंचायती राज की वैचारिक पृष्ठभूमि रचते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी इन ऐतिहासिक जड़ों को समझते हुए आधुनिक संवैधानिक मूल्यों --- स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व --- का महत्त्व पहचानें।

4.10.2 भारतीय कला और संस्कृति की वैश्विक पहुँच

21वीं सदी में भारतीय कला और संस्कृति एक नई वैश्विक शक्ति के रूप में उभरी है:

- 'सॉफ्ट पावर': योग दिवस (21 जून) – 190 देशों में 30 करोड़ से अधिक अभ्यासी।
- भारतीय सिनेमा: बॉलीवुड और क्षेत्रीय सिनेमा – 100 से अधिक देशों में दर्शक।
- भारतीय संगीत: रवि शंकर का सितार – विश्व-मंचों पर; फ्यूज़न संगीत की विश्वव्यापी लोकप्रियता।
- भारतीय साहित्य: अनुवाद और विश्व-पुरस्कार; रवींद्रनाथ टैगोर का नोबेल पुरस्कार।
- UNESCO विरासत: 40 से अधिक भारतीय स्थल UNESCO विश्व-विरासत सूची में।
- आयुर्वेद और योग: WHO द्वारा मान्यता; वैश्विक स्वास्थ्य में भारत का योगदान।

4.10.3 NEP 2020 और सांस्कृतिक जागरण

NEP 2020 ने भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन किया है। इसमें भारतीय राजनीतिक परंपरा, कला और संस्कृति को पाठ्यक्रम का केंद्र बनाया गया है:

- भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) को स्नातक स्तर पर अनिवार्य विषय।
- कला-शिक्षा को अनिवार्य – शास्त्रीय नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प।
- भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा – मातृभाषा का महत्त्व।
- पंचायती राज और स्थानीय शासन को सामाजिक-विज्ञान पाठ्यक्रम में समाविष्ट।
- नालंदा और तक्षशिला की परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास।

4.11 सारांश (Summary)

इस अध्याय में राजनीति एवं शासन व्यवस्था, जनपद, ग्राम स्वराज्य, भारतीय कला और संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. जनपद का अर्थ: 'जन' (लोग) और 'पद' (स्थान) से बना 'जनपद' भारत की प्राचीन लोकतांत्रिक शासन-इकाई है जो आधुनिक राज्य-व्यवस्था से पहले ही विकसित हो चुकी थी।
2. सोलह महाजनपद: 600-300 ई.पू. के सोलह महाजनपदों में राजतांत्रिक और गणतांत्रिक – दोनों प्रकार की शासन-व्यवस्थाएँ थीं।
3. वज्जि संघ: वैशाली स्थित वज्जि संघ विश्व के प्राचीनतम ज्ञात गणतंत्रों में से एक है। इसकी सन्निपात (Parliament), निर्वाचन-पद्धति और न्याय-व्यवस्था आधुनिक लोकतंत्र की पूर्वगामी थी।
4. सभा और समिति: ऋग्वेद में वर्णित ये दो संस्थाएँ भारत की प्राचीनतम लोकतांत्रिक संस्थाएँ हैं जो आधुनिक संसद की पूर्वगामी हैं।
5. ग्राम स्वराज्य: प्राचीन ग्राम-पंचायत व्यवस्था – विशेषकर चोल-काल की उत्तरमेरूर पद्धति – भारत में स्थानीय स्वशासन की अत्यंत विकसित परंपरा का प्रमाण है।
6. गाँधी और ग्राम स्वराज: महात्मा गाँधी ने प्राचीन ग्राम-परंपरा को आधुनिक भारत के लिए 'सर्वोदय' और 'स्वदेशी' के सिद्धांतों से जोड़कर नए रूप में प्रस्तुत किया।
7. 73वाँ संशोधन: 1992 का यह संशोधन गाँधी के ग्राम-स्वराज के स्वप्न को संवैधानिक रूप देता है।
8. भारतीय कला की विशेषताएँ: आध्यात्मिकता, रस-सिद्धांत, प्रतीकवाद, शास्त्र-आधारितता, विविधता में एकता और सामूहिक सृजन – ये भारतीय कला को विशिष्ट बनाते हैं।

9. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ: सातत्य, सहिष्णुता, समन्वय, अनेकता में एकता, प्रकृति-पूजा, नारी-सम्मान, गुरु-शिष्य परंपरा और वैश्विक दृष्टि – ये आठ विशेषताएँ भारतीय संस्कृति को अद्‌वितीय बनाती हैं।
10. वैश्विक प्रासंगिकता: योग, आयुर्वेद, लोकतंत्र की परंपरा, कला और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – ये भारत की वैश्विक देन हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं।

4.12 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
जनपद	'जन' (लोग) + 'पद' (स्थान) – लोगों का शासन-क्षेत्र; प्राचीन भारतीय राजनीतिक इकाई
महाजनपद	600-300 ई.पू. के 16 प्रमुख राजनीतिक राज्य
वज्जि संघ	वैशाली-केंद्रित गणतांत्रिक संघ; विश्व के प्राचीनतम ज्ञात गणतंत्रों में से एक
सन्निपात	वज्जि संघ की संसद; समस्त सदस्यों की बैठक
गण-संघ	गणतांत्रिक राज्य; जहाँ निर्वाचित प्रमुख शासन करता था
सभा	वरिष्ठ नागरिकों की छोटी परिषद् (ऋग्वेद में वर्णित)
समिति	बड़ी जन-सभा; महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय निर्णयों के लिए
ग्राम स्वराज्य	ग्राम-स्तर पर स्वशासन; गाँधी का राजनीतिक आदर्श
ग्राम-सभा	ग्राम के समस्त वयस्क मतदाताओं की बैठक
पंचायत	पाँच या अधिक वरिष्ठ व्यक्तियों की परिषद्; स्थानीय न्याय और शासन
कुडल ओलई	चोल काल की चुनाव-पद्धति; 'लॉटरी सिस्टम' से प्रतिनिधि चुनाव

73वाँ संशोधन	1992 का संविधान-संशोधन; पंचायती राज को संवैधानिक मान्यता
रस-सिद्धांत	भरतमुनि का कला-दर्शन; नौ रसों की अनुभूति से कला का आनंद
प्रतीकवाद	भारतीय कला में प्रत्येक रूप, रंग, मुद्रा का गहरा आध्यात्मिक अर्थ
सातत्य	भारतीय संस्कृति की अखंड निरंतरता – हजारों वर्षों से
सर्वोदय	गाँधी का सिद्धांत: सबका उदय, अंतिम व्यक्ति तक कल्याण
PESA 1996	Panchayats Extension to Scheduled Areas; आदिवासी क्षेत्रों में ग्राम-शक्ति

4.13 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. 'जनपद' की अवधारणा को विस्तार से समझाइए। महाजनपद काल की शासन-व्यवस्था का वर्णन करते हुए वज्जि संघ के विशेष महत्त्व की विवेचना कीजिए।
2. भारत में 'ग्राम स्वराज्य' की ऐतिहासिक परंपरा का विस्तृत वर्णन कीजिए। महात्मा गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा और 73वें संविधान संशोधन की समीक्षा कीजिए।
3. भारतीय कला की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए। रस-सिद्धांत और प्रतीकवाद को उदाहरण सहित समझाइए।
4. भारतीय संस्कृति की आठ प्रमुख विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए। किसी तीन विशेषताओं को समकालीन उदाहरणों के साथ सिद्ध कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. 'सभा' और 'समिति' में क्या अंतर है? इनकी आधुनिक संसद से तुलना कीजिए।
2. चोल काल की 'कुडल ओलई' चुनाव-पद्धति क्या थी?
3. ग्राम स्वराज्य में 'सर्वोदय' और 'स्वदेशी' का क्या महत्त्व है?
4. भारतीय कला में 'प्रतीकवाद' के कोई तीन उदाहरण दीजिए।
5. भारतीय संस्कृति में 'अनेकता में एकता' का क्या अर्थ है?
6. NEP 2020 में भारतीय राजनीतिक और सांस्कृतिक परंपरा को क्यों सम्मिलित किया गया है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

1. वज्जि संघ की राजधानी कहाँ थी? (अ) राजगृह (ब) वाराणसी (स) वैशाली (द) पाटलिपुत्र
2. उत्तरमेरूर के शिलालेख किस काल के हैं? (अ) मौर्य काल (ब) चोल काल (स) गुप्त काल (द) मुगल काल
3. 73वाँ संविधान संशोधन किस वर्ष हुआ? (अ) 1988 (ब) 1990 (स) 1992 (द) 1995
4. नाट्यशास्त्र के अनुसार रसों की संख्या है: (अ) 7 (ब) 8 (स) 9 (द) 10

5. 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' किस ग्रंथ में है? (अ) अथर्ववेद (ब) ऋग्वेद (स) सामवेद (द) यजुर्वेद
6. PESA अधिनियम कब पारित हुआ? (अ) 1992 (ब) 1994 (स) 1996 (द) 2000
7. महात्मा बुद्ध ने किस गणतंत्र की प्रशंसा की? (अ) मल्ल गणतंत्र (ब) वज्जि संघ (स) कुरु गणतंत्र (द) पांचाल

4.14 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

4.3 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. 'जन' का अर्थ 'लोग/मनुष्य' और 'पद' का अर्थ 'स्थान/चरण' है।
2. वज्जि संघ की राजधानी वैशाली थी।
3. महाजनपदों की संख्या 16 (सोलह) थी।
4. ऋग्वेद में सभा और समिति का उल्लेख मिलता है।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – वज्जि संघ में राजा का पद निर्वाचित था, आनुवंशिक नहीं।
2. सही (✓) – मगध की राजधानी पाटलिपुत्र (और पहले राजगृह) थी।
3. गलत (✗) – महात्मा बुद्ध ने वज्जि संघ की प्रशंसा की थी, आलोचना नहीं।
4. सही (✓) – अश्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था।

4.5 के उत्तर:

1. उत्तरमेरूर के शिलालेख: 920-921 ई. के ये शिलालेख चोल काल की ग्राम-पंचायत व्यवस्था और 'कुडल ओलई' चुनाव-पद्धति का विस्तृत विवरण देते हैं — सिद्ध करते हैं कि भारत में लोकतांत्रिक चुनाव की परंपरा हजार साल से अधिक पुरानी है।
2. गाँधी की ग्राम स्वराज की तीन विशेषताएँ: (1) स्वायत्तता — ग्राम अपनी जरूरतें स्वयं पूरी करे, (2) स्वदेशी — स्थानीय उत्पादन और खपत, (3) सर्वोदय — अंतिम व्यक्ति तक कल्याण।
3. 73वें संविधान संशोधन का उद्देश्य: पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा देना; ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर पर त्रिस्तरीय स्थानीय स्वशासन स्थापित करना।
4. PESA अधिनियम: 1996 में आदिवासी (SC/ST) क्षेत्रों में ग्राम-सभा को जल, जंगल, जमीन पर विशेष अधिकार देने के लिए बनाया गया।

4.7 के उत्तर (सही मिलान):

स्तम्भ-अ	सही मिलान (स्तम्भ-ब)
नटराज	शिव का सृष्टि-संहार नृत्य (सही)
कमल	माया में रहकर शुद्ध आत्मा (सही)
अभय-मुद्रा	भय मत करो — दैवी संरक्षण (सही)
रस-निष्पत्ति	विभाव + अनुभाव + संचारी भाव (सही)
चोल कांस्य	नटराज — विश्व-श्रेष्ठ धातु-मूर्तियाँ (सही)

1. नाट्यशास्त्र के अनुसार 'रस': विभाव, अनुभाव और संचारी/व्यभिचारी भाव के संयोग से हृदय में उत्पन्न होने वाला आनंदात्मक अनुभव।

2. 'साधारणीकरण': यह सिद्धांत अभिनवगुप्त ने दिया। इसका अर्थ है – कला दर्शक को उसके 'स्व' (अहंकार) से मुक्त करके एक सार्वभौम अनुभव तक पहुँचाती है।
3. सामूहिक सृजन: भारत में अनेक महान कलाकृतियाँ अनाम हैं – कलाकार का व्यक्तिगत यश नहीं, ईश्वर-सेवा ही उद्देश्य था। यह सामूहिक भावना भारतीय कला की विशेषता है।

4.9 के उत्तर:

1. 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' – यह ऋग्वेद (1.164.46) से है।
2. ऋग्वेद लगभग 3500 वर्षों से निरंतर पढ़ा जा रहा है।
3. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...' – यह मनुस्मृति (3.56) से लिया गया है।
4. गुरुकुल परंपरा में शिक्षा 'कर्म-आधारित' (व्यावहारिक) थी – केवल पुस्तकीय नहीं।
5. नदी-पूजन के उदाहरण: गंगा और यमुना।
6. समन्वय के उदाहरण: भक्ति आंदोलन और सूफी-परंपरा।
7. वैदिक ऋषिकाएँ: गार्गी और मैत्रेयी।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (4.13 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(स) वैशाली
2	(ब) चोल काल
3	(स) 1992
4	(स) 9 (नौ)
5	(ब) ऋग्वेद
6	(स) 1996
7	(ब) वज्जि संघ

4.15 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- ऋग्वेद – सभा-समिति सूक्त (गीताप्रेस, गोरखपुर)
- अथर्ववेद – पृथ्वी-सूक्त 12.1 (गीताप्रेस)
- कौटिल्य – अर्थशास्त्र – ग्राम-प्रशासन प्रकरण (आर. शामशास्त्री अनुवाद)
- महाभारत – शांतिपर्व, भीष्मपर्व (गीताप्रेस)
- नाट्यशास्त्र – भरतमुनि (मनमोहन घोष अनुवाद)
- मनुस्मृति – गंगानाथ झा अनुवाद
- दीघनिकाय – महापरिनिब्बानसुत्त (बौद्ध ग्रंथ)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- महात्मा गाँधी – हिंद स्वराज (नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद)
- महात्मा गाँधी – ग्राम स्वराज (नवजीवन प्रकाशन)
- वाचस्पति गैरोला – भारतीय राजनीतिक चिंतन (लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा)
- जी.एन. झा – भारतीय कला का इतिहास (राजकमल, दिल्ली)
- हेमचंद्र रायचौधरी – प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास (कलकत्ता)
- वासुदेवशरण अग्रवाल – भारत की सांस्कृतिक एकता (चौखम्बा)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Romila Thapar – A History of India (Vol. 1), Penguin Books
- A.L. Basham – The Wonder That Was India, Rupa Publications

- R.S. Sharma – Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient India
- U.N. Ghoshal – A History of Indian Political Ideas, Oxford University Press
- Coomaraswamy, A.K. – The Arts and Crafts of India and Ceylon
- Ministry of Panchayati Raj – Report on Panchayati Raj in India (2023)

ऑनलाइन संसाधन:

- https://panchayat.gov.in – पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार
- https://egramswaraj.gov.in – ई-ग्राम स्वराज पोर्टल
- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://www.sangeetnatak.gov.in – संगीत नाटक अकादमी
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in – भारतीय शोध-प्रबंध भंडार
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 5	VATTER:DR DHARAMBIR

Unit-3 विज्ञान, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था

प्राचीन भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं गणित
स्वास्थ्य चेतना: आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा
पर्यावरण संरक्षण: भारतीय दृष्टिकोण

Science, Technology & Mathematics | Health Sciences: Ayurveda, Yoga & Naturopathy
Environmental Conservation: Indian Perspective

अनुभाग विषय-वस्तु

5.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

5.1 प्रस्तावना

5.2 प्राचीन भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं गणित

5.2.1 भारतीय गणित की 10 प्रमुख उपलब्धियाँ (तालिका)

5.2.2 8 प्रमुख गणितज्ञ – आर्यभट से रामानुजन तक

5.2.3 भारतीय खगोलशास्त्र – 8 खोजों की तालिका

5.2.4 रसायनशास्त्र – लौह-स्तंभ, वुट्ज़ स्टील, नागार्जुन

5.2.5 प्रौद्योगिकी – नगर-नियोजन से शल्य-यंत्र तक

5.3 Check Your Progress — 1

5.4 आयुर्वेद: जीवन का सम्पूर्ण विज्ञान

5.4.1 आयुर्वेद का अर्थ + चतुर्विध उद्देश्य

5.4.2 त्रिदोष, सप्तधातु, आहार-चिकित्सा सिद्धांत

5.4.3 7 प्रमुख ग्रंथ और आचार्य

5.4.4 सुश्रुत – विश्व के प्रथम शल्य-चिकित्सक

5.4.5 आयुर्वेद की आधुनिक प्रासंगिकता

5.5 Check Your Progress — 2

5.6 योग: शरीर, मन और आत्मा का विज्ञान

5.6.1 योग का उद्गम + पतंजलि की परिभाषा

5.6.2 अष्टांग योग – 8 अंगों की तालिका

5.6.3 योग की 7 शाखाएँ

अनुभाग	विषय-वस्तु
5.6.4	योग का वैज्ञानिक आधार
5.6.5	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
5.7	प्राकृतिक चिकित्सा एवं दिनचर्या-ऋतुचर्या
5.8	Check Your Progress — 3
5.9	पर्यावरण संरक्षण: भारतीय दृष्टिकोण
5.9.1	भूमि-सूक्ति + पर्यावरण-दर्शन
5.9.2	वैदिक साहित्य में पर्यावरण (अथर्ववेद)
5.9.3	पंचतत्त्वों का संरक्षण – तालिका
5.9.4	Sacred Groves, विश्नोई, वृक्ष-पूजन
5.9.5	भारतीय कृषि – 4 ग्रंथों की तालिका
5.9.6	पर्यावरण आंदोलन – चिपको से नर्मदा तक
5.9.7	SDGs और भारतीय पर्यावरण-दर्शन की तुलना
5.10	Check Your Progress — 4
5.11	भारतीय अर्थव्यवस्था – कौटिल्य, स्वदेशी, दान
5.12	समकालीन प्रासंगिकता + NEP 2020
5.13	सारांश (10 बिंदु)
5.14	शब्दावली (17 शब्द)
5.15	Self-Assessment Test
5.16	Answers to Check Your Progress
5.17	References / Suggested Readings

5.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- प्राचीन भारत में गणित, खगोलशास्त्र, रसायन विज्ञान, भौतिकी और जीव विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय गणित की मौलिक देनों – शून्य, दशमलव, बीजगणित, त्रिकोणमिति और अनंत की अवधारणा – को समझ सकेंगे।

- आर्यभट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, वराहमिहिर जैसे प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आयुर्वेद की मूलभूत अवधारणाओं – त्रिदोष सिद्धांत, पंचमहाभूत, धातु, मल – को समझ सकेंगे।
- योग की अष्टांग पद्धति और उसके शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभों की विवेचना कर सकेंगे।
- प्राकृतिक चिकित्सा (Naturopathy) की भारतीय परंपरा और उसके आधुनिक स्वास्थ्य-विज्ञान से संबंध को समझ सकेंगे।
- भारतीय ग्रंथों, वैदिक परंपरा और लोक-संस्कृति में पर्यावरण-संरक्षण की अवधारणाओं की पहचान कर सकेंगे।
- NEP 2020 के संदर्भ में प्राचीन भारतीय विज्ञान, स्वास्थ्य-चेतना और पर्यावरणीय दृष्टिकोण की समकालीन प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

प्रायः यह माना जाता है कि आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण-चेतना पश्चिमी देनें हैं। किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा का गहन अध्ययन इस धारणा को चुनौती देता है। प्राचीन भारत में जिन वैज्ञानिक सिद्धांतों और तकनीकों का विकास हुआ, वे उस काल के किसी भी सभ्यता से बहुत आगे थे।

शून्य की खोज – जो आधुनिक गणित और कंप्यूटर विज्ञान की नींव है – भारत की देन है। पाई (π) का सटीक मान, ऋणात्मक संख्याओं की अवधारणा, पृथ्वी की परिधि की गणना, सूर्यग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या – ये सब भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ हैं जो यूरोप में इन खोजों से शताब्दियों पूर्व हुईं।

आयुर्वेद – 'आयुः' (जीवन) और 'वेद' (ज्ञान) – जीवन का विज्ञान है। यह केवल रोग-उपचार की पद्धति नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की एक समग्र दर्शन-प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर बल देती है। सुश्रुत संहिता में वर्णित शल्य-चिकित्सा की तकनीकें आज भी चकित करती हैं।

भारतीय परंपरा में पर्यावरण-संरक्षण केवल एक नीति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' – पृथ्वी माँ है और हम उसके पुत्र हैं। वृक्ष-पूजन, नदी-पूजन, गो-संरक्षण – ये सब पर्यावरण-प्रेम की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं।

NEP 2020 के अंतर्गत इन विषयों का अध्ययन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टि, स्वास्थ्य-चेतना और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का संस्कार जगाएगा – और साथ ही भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्रति गौरव-भाव भी।

5.2 प्राचीन भारत में विज्ञान एवं गणित

5.2.1 भारतीय गणित: विश्व को सबसे बड़ी देन – शून्य और दशमलव

भारत ने विश्व को जो सबसे मूल्यवान बौद्धिक उपहार दिया, वह है – 'शून्य' (Zero) और 'दशमलव स्थानीय मान प्रणाली' (Decimal Place Value System)। इनके बिना आधुनिक गणित, विज्ञान और कंप्यूटर का अस्तित्व संभव नहीं था।

शून्य का इतिहास:

- ब्रह्मगुप्त (628 ई.) – ब्रह्मस्फुटसिद्धांत में शून्य के नियमों की प्रथम विस्तृत व्याख्या।
- आर्यभट (499 ई.) – दशमलव स्थानीय मान प्रणाली का उपयोग।
- ग्वालियर शिलालेख (876 ई.) – '0' के अंक का प्राचीनतम ज्ञात लिखित उपयोग।

- अलबेरूनी ने 11वीं शताब्दी में अरब देशों में भारतीय अंक-प्रणाली का परिचय कराया।
- यूरोप में 'Indian Numerals' के नाम से जानी जाने वाली यह प्रणाली अरब माध्यम से 12वीं-13वीं शताब्दी में पहुँची।

> स्थानात् स्थानं दशगुणं स्यात्।
>
> एकं च दश च शतं च सहस्रं च।
>
> — आर्यभटीय — आर्यभट

(स्थान से स्थान दस गुना होता है — एक, दस, सौ, हजार — यह दशमलव प्रणाली का मूल सिद्धांत है।)

भारतीय गणित की प्रमुख उपलब्धियाँ:

गणितीय अवधारणा	भारतीय उपलब्धि एवं विद्वान
शून्य (Zero)	ब्रह्मगुप्त (628 ई.) — शून्य के गणितीय नियम; विश्व में पहली बार
दशमलव प्रणाली	आर्यभट (499 ई.) — स्थानीय मान प्रणाली
पाई (π) का मान	आर्यभट — π = 62832/20000 = 3.1416 (आधुनिक मान 3.14159)
बीजगणित (Algebra)	ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य — 'बीजगणित' नाम भारत ने दिया
त्रिकोणमिति	आर्यभट — ज्या (Sine), कोज्या (Cosine) की तालिकाएँ
ऋणात्मक संख्याएँ	ब्रह्मगुप्त — पहली बार ऋण-धन के गणितीय नियम
अनंत (Infinity)	भास्कराचार्य — 'n/0 = ∞' की अवधारणा
द्विपद प्रमेय	पिंगल (200 ई.पू.) — Pascal Triangle से 1800 वर्ष पूर्व
Fibonacci अनुक्रम	विरहांक (600 ई.) — Fibonacci से 600 वर्ष पूर्व

चक्रीय चतुर्भुज	ब्रह्मगुप्त – 'Brahmagupta's Theorem'
गणित-सूत्र (Vedic Math)	शुल्बसूत्र – पाइथागोरस से पूर्व पाइथागोरस प्रमेय

5.2.2 शुल्बसूत्र: ज्यामिति का प्राचीनतम ग्रंथ

'शुल्बसूत्र' (लगभग 800-500 ईसा पूर्व) विश्व के प्राचीनतम ज्यामिति-ग्रंथ हैं। इनमें यज्ञवेदियों के निर्माण के लिए ज्यामितीय सिद्धांतों का प्रयोग किया गया है। उल्लेखनीय है कि 'पाइथागोरस प्रमेय' ($a^2 + b^2 = c^2$) का उल्लेख शुल्बसूत्रों में पाइथागोरस से लगभग 300 वर्ष पूर्व मिलता है:

> दीर्घचतुरश्रस्याक्ष्णया रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यङ्मानी च यत् पृथग्भूते कुरुतस्तदुभयं करोति।
>
> – बौधायन शुल्बसूत्र 1.12 (लगभग 800 ई.पू.)

(एक आयत के विकर्ण की लंबाई उसके दोनों भुजाओं द्वारा पृथक्-पृथक् बनाए गए क्षेत्रफलों के योग के बराबर होती है – अर्थात् $a^2 + b^2 = c^2$)

बौधायन, आपस्तम्ब और कात्यायन के शुल्बसूत्रों में यज्ञवेदियों (जैसे श्येनचिति --- बाज के आकार की वेदी) के निर्माण के लिए आयत, वर्ग, समलंब चतुर्भुज और वृत्त जैसी आकृतियों के नियम दिए गए हैं। बौधायन शुल्बसूत्र में $\sqrt{2}$ का लगभग मान $(1 + 1/3 + 1/(3\times4) - 1/(3\times4\times34))$ दिया गया है, जो आधुनिक मान 1.41421... के बहुत निकट है। इन ग्रंथों से सिद्ध होता है कि वैदिक काल में ही रेखागणित का व्यावहारिक और सैद्धांतिक विकास हो चुका था, जिसकी प्रेरणा धार्मिक अनुष्ठानों की सटीक माप की आवश्यकता से मिली।

5.2.3 प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक और उनकी उपलब्धियाँ

वैज्ञानिक / विद्वान	काल	प्रमुख उपलब्धियाँ
आर्यभट	476-550 ई.	π का सटीक मान, पृथ्वी की घूर्णन गति, सूर्यग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या, ज्या-तालिका
ब्रह्मगुप्त	598-668 ई.	शून्य के नियम, ऋणात्मक संख्याएँ, चक्रीय चतुर्भुज का क्षेत्रफल, ग्रहण गणना
वराहमिहिर	505-587 ई.	पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता – खगोल, ज्योतिष, भूगोल, मौसम विज्ञान
भास्कराचार्य	1114-1185 ई.	लीलावती, बीजगणित, सिद्धांतशिरोमणि; गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख न्यूटन से 500 वर्ष पूर्व
नागार्जुन	2री शती ई.	रसायन-शास्त्र; पारद और धातु-परिवर्तन; रसरत्नाकर
कणाद	6ठी शती ई.पू.	परमाणुवाद (Atomic Theory); वैशेषिकसूत्र – डाल्टन से 2500 वर्ष पूर्व
चरक	2री शती ई.पू.	चरकसंहिता – आयुर्वेद का मूल ग्रंथ; 341 पौधों के औषधीय गुण
सुश्रुत	6ठी शती ई.पू.	सुश्रुत संहिता – शल्य-चिकित्सा; मोतियाबिंद, प्लास्टिक सर्जरी
पाणिनि	4थी शती ई.पू.	अष्टाध्यायी – संस्कृत व्याकरण; आधुनिक भाषाविज्ञान का आधार
पिंगल	3री शती ई.पू.	छंदःशास्त्र – बाइनरी प्रणाली; Pascal Triangle का पूर्वरूप

5.2.4 भारतीय खगोलशास्त्र: आकाश को मापने की परंपरा

भारतीय खगोलशास्त्र (Astronomy) विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक सटीक खगोलशास्त्रीय परंपराओं में से एक है। इसका आरंभ वेदांग ज्योतिष (लगभग 1200 ई.पू.) से होता है:

उपलब्धि	विवरण एवं वैज्ञानिक महत्त्व
पृथ्वी की घूर्णन गति	आर्यभट ने 499 ई. में सिद्ध किया – कोपरनिकस से 1000 वर्ष पूर्व
वर्ष की अवधि	आर्यभट: 365 दिन 6 घं. 12 मि. 30 से. – आधुनिक माप से 3 मि. 20 से. का अंतर
चंद्रमा की त्रिज्या	आर्यभट – 1080 मील (आधुनिक: 1080.4 मील – अत्यंत सटीक)
सूर्यग्रहण	आर्यभट ने सिद्ध किया – पृथ्वी की छाया से चंद्रग्रहण; न कि राहु-केतु से
नक्षत्र गणना	27/28 नक्षत्र मंडल; चंद्रमा की स्थिति का सटीक निर्धारण
ग्रहों की कक्षाएँ	वराहमिहिर ने ग्रहों की गति और स्थिति की सटीक गणना की
पृथ्वी की परिधि	आर्यभट – 39968 किमी (आधुनिक: 40075 किमी – 0.3% अंतर)
सूर्य से पृथ्वी की दूरी	आर्यभट – 1,58,11,200 योजन (गणना पद्धति आधुनिक से मेल)

5.2.5 भारतीय रसायन विज्ञान और धातु-विज्ञान

प्राचीन भारत में रसायन-शास्त्र (Chemistry) का विकास 'रस-विद्या' के रूप में हुआ। 'रस' का अर्थ है – पारद (Mercury), और रस-विद्या पारद तथा अन्य धातुओं के संयोजन का शास्त्र है:

- दिल्ली का लौह-स्तंभ (गुप्त काल, लगभग 415 ई.) – 1600 वर्षों से जंग-रहित! इसमें फास्फोरस-युक्त विशेष मिश्र-धातु का प्रयोग आधुनिक इंजीनियरों को भी आश्चर्यचकित करता है।
- वज्र-संघात (High Carbon Steel) – भारतीय 'वूट्ज़ स्टील' (Wootz Steel) विश्व-प्रसिद्ध था; अरब इसे 'फौलाद' कहते थे।
- नागार्जुन (रसायन-शास्त्री) – 'रसरत्नाकर' में 64 प्रकार के पारद-संस्कार; रंगों और औषधियों का रसायन।
- कांसा और ताँबे की मूर्तियाँ – नटराज की कांस्य-मूर्ति; हड़प्पा काल से धातु-कला।
- इस्पात (Steel) – भारत में लोहे का प्रयोग 1800 ई.पू. से; यूरोप में 1000 वर्ष बाद।

5.3 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ शून्य के गणितीय नियमों की प्रथम विस्तृत व्याख्या _____ ने की थी।

□ 'पाइथागोरस प्रमेय' का उल्लेख भारत में _____ ग्रंथ में मिलता है।

□ आर्यभट ने π का मान _____ बताया था।

□ दिल्ली का लौह-स्तंभ लगभग _____ वर्षों से जंग-रहित है।

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

- □ आर्यभट ने पृथ्वी की घूर्णन गति की खोज कोपरनिकस से पहले की थी। ( )
- □ शून्य की खोज यूरोप में हुई थी। ( )
- □ कणाद ने परमाणुवाद का सिद्धांत डाल्टन से पहले प्रस्तुत किया था। ( )
- □ सुश्रुत संहिता में आयुर्वेदिक औषधियों का वर्णन है, शल्य-चिकित्सा का नहीं। ( )

5.4 आयुर्वेद: जीवन का सम्पूर्ण विज्ञान

5.4.1 आयुर्वेद: परिचय और दार्शनिक आधार

'आयुर्वेद' शब्द दो शब्दों से बना है – 'आयुः' (जीवन/आयु) और 'वेद' (ज्ञान)। इसका अर्थ है – जीवन का विज्ञान। यह विश्व की प्राचीनतम जीवित चिकित्सा-पद्धति है जो लगभग 5000 वर्ष पुरानी है।

आयुर्वेद का उद्देश्य केवल रोग-उपचार नहीं, बल्कि 'स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगी के रोग का निवारण' है:

> स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्य विकारप्रशमनम् च।
> एतदेवास्य लक्षणम्।।
> – चरकसंहिता, सूत्रस्थान 30.26

(स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग को दूर करना – यही आयुर्वेद का लक्षण है।)

आयुर्वेद के मूल ग्रंथ (बृहत्त्रयी):

ग्रंथ	रचनाकार / काल	विषय-वस्तु
चरकसंहिता	चरक (2री शती ई.पू.)	काया-चिकित्सा; 341 पौधे; 8 शाखाएँ; रस-शास्त्र
सुश्रुतसंहिता	सुश्रुत (6ठी शती ई.पू.)	शल्य-चिकित्सा; 120 शल्य-यंत्र; प्लास्टिक सर्जरी
अष्टांगहृदयम्	वाग्भट (7वीं शती ई.)	चरक और सुश्रुत का समन्वय; प्रायोगिक आयुर्वेद

5.4.2 आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांत

आयुर्वेद के कुछ मूलभूत दार्शनिक-वैज्ञानिक सिद्धांत हैं जो इसे आधुनिक चिकित्सा से मौलिक रूप से भिन्न बनाते हैं:

आयुर्वेद की तीन प्रमुख संहिताएँ --- चरक संहिता (कायचिकित्सा), सुश्रुत संहिता (शल्य-चिकित्सा) और अष्टांग हृदय (वाग्भट) --- 'बृहत्त्रयी' कहलाती हैं और आयुर्वेद के सिद्धांतों का आधार हैं। आयुर्वेद का उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग का शमन करना है। इसके अंतर्गत पंचमहाभूत, त्रिदोष, सप्तधातु, मल, अग्नि और प्रकृति (देह-प्रकृति) जैसी अवधारणाएँ मिलकर यह स्पष्ट करती हैं कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन से ही आरोग्य प्राप्त होता है। आगे इन सिद्धांतों को क्रमशः समझाया गया है।

(अ) पंचमहाभूत सिद्धांत

आयुर्वेद के अनुसार समस्त सृष्टि पाँच महाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) से निर्मित है। मानव-शरीर भी इन्हीं पाँच तत्त्वों से बना है और इनके असंतुलन से रोग उत्पन्न होता है।

(ब) त्रिदोष सिद्धांत

आयुर्वेद का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत 'त्रिदोष' है। शरीर में तीन मूलभूत जीवन-शक्तियाँ (दोष) होती हैं:

दोष	पंचभूत-आधार	शरीर में कार्य	असंतुलन से रोग
वात	वायु + आकाश	गति, तंत्रिका-क्रिया, श्वसन	जोड़ों का दर्द, वायु-विकार, नींद की कमी
पित्त	अग्नि + जल	पाचन, चयापचय, ताप-नियमन	अम्लपित्त, त्वचा-रोग, यकृत-विकार
कफ	जल + पृथ्वी	संरचना, स्नेहन, प्रतिरक्षा	सर्दी, मोटापा, मधुमेह, अवसाद

त्रिदोष के संतुलन से स्वास्थ्य और असंतुलन से रोग उत्पन्न होता है। आयुर्वेद का उपचार इस संतुलन को पुनः स्थापित करना है।

(स) सप्तधातु सिद्धांत

शरीर सात धातुओं से निर्मित है जो एक क्रम में एक-दूसरे को पोषित करती हैं:

धातु	आधुनिक समकक्ष
रस	Plasma / Lymph
रक्त	Blood / Haemoglobin
माँस	Muscle Tissue
मेद	Adipose Tissue / Fat
अस्थि	Bone Tissue
मज्जा	Bone Marrow / Nerve Tissue
शुक्र	Reproductive Tissue

5.4.3 सुश्रुत: विश्व का प्रथम शल्य-चिकित्सक

आचार्य सुश्रुत (लगभग 600 ई.पू.) को 'शल्य-चिकित्सा का जनक' (Father of Surgery) माना जाता है। उनकी 'सुश्रुत संहिता' में जो शल्य-तकनीकें वर्णित हैं, वे आज भी प्रासंगिक हैं:

सुश्रुत की उपलब्धि	विवरण
120 शल्य-यंत्र	विभिन्न प्रकार के चाकू, कैंची, सुई, चिमटी का विस्तृत विवरण
राइनोप्लास्टी (नाक-पुनर्निर्माण)	आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी का जनक; गाल की त्वचा से नाक का निर्माण
मोतियाबिंद-शल्य	'जबामुखी शलाका' से मोतियाबिंद हटाने की विधि
अस्थि-भंग उपचार	टूटी हड्डियों को जोड़ने की पद्धति
शल्य-शिक्षा	मृत शरीर पर अभ्यास; कद्दू-तरबूज पर अभ्यास
एनेस्थीसिया	शल्य से पूर्व मदिरा और धूम्र से बेहोश करने का उल्लेख

107 मर्म-बिंदु	शरीर के संवेदनशील स्थान; आधुनिक Acupressure का पूर्वरूप
आहार-पथ्य	शल्य के बाद के आहार-नियम; Post-operative care

5.4.4 आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा: तुलना

आधार	आयुर्वेद	आधुनिक (Allopathy)
दृष्टिकोण	समग्र (Holistic) — शरीर+मन+आत्मा	मुख्यतः भौतिक शरीर
रोग-कारण	दोष-असंतुलन, आहार, मनोभाव	जीवाणु, वायरस, आनुवंशिक
उपचार	आहार, जड़ी-बूटी, पंचकर्म, जीवनशैली	औषधि, शल्य, विकिरण
दुष्प्रभाव	न्यूनतम (प्राकृतिक)	अनेक दुष्प्रभाव संभव
व्यक्तिगत उपचार	प्रत्येक व्यक्ति का प्रकृति-विशिष्ट उपचार	प्रायः मानकीकृत
निवारण	रोग-निवारण पर बल (Preventive)	रोग-उपचार पर बल (Curative)
समय	दीर्घकालीन; जड़ से उपचार	त्वरित; लक्षण-निवारण

यद्यपि आयुर्वेद की अनेक अवधारणाएँ और औषधियाँ आज भी उपयोगी मानी जाती हैं, परंतु उनके प्रभाव को आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर परखने के लिए क्लिनिकल परीक्षण और शोध की आवश्यकता है। 'दुष्प्रभाव न्यूनतम' कहना भी सभी औषधियों और सभी परिस्थितियों के लिए सत्य नहीं है; अनुचित मात्रा या अयोग्य चिकित्सक के हाथों से उपचार हानिकारक हो सकता है। इसलिए वर्तमान में 'एकीकृत चिकित्सा' (Integrative Medicine) की अवधारणा आगे बढ़ रही है, जिसमें रोग-निवारण और जीवनशैली-सुधार में आयुर्वेद का तथा गंभीर रोग और आपातकालीन उपचार में आधुनिक चिकित्सा का सहयोग लिया जाता है।

5.4.5 पंचकर्म: आयुर्वेद की शोधन-चिकित्सा

पंचकर्म आयुर्वेद की पाँच शोधन-क्रियाओं का समूह है जो शरीर से विषाक्त पदार्थों (Toxins) को बाहर निकालता है:

पंचकर्म-क्रिया	प्रक्रिया एवं लाभ
वमन (Emesis)	उल्टी कराकर कफ-विकार दूर करना; श्वास-रोग, अम्लपित्त
विरेचन (Purgation)	दस्त कराकर पित्त-विकार दूर करना; यकृत, त्वचा-रोग
बस्ति (Enema)	आँतों की सफाई; वात-विकार, कब्ज, गठिया
नस्य (Nasal Therapy)	नाक से औषधि; मस्तिष्क, नेत्र-कान-नाक-गले के रोग
रक्तमोक्षण (Blood-letting)	रक्त-विकार दूर करना; त्वचा-रोग, वैरिकोज़

पंचकर्म की प्रक्रिया तीन चरणों में पूरी होती है --- पूर्वकर्म (स्नेहन और स्वेदन द्वारा शरीर को शोधन के लिए तैयार करना), प्रधानकर्म (वमन, विरेचन आदि मुख्य क्रियाएँ) तथा पश्चात्कर्म (संसर्जन-क्रम, अर्थात् हल्के आहार से धीरे-धीरे सामान्य भोजन पर लौटना)। ये क्रियाएँ व्यक्ति की प्रकृति, रोग और ऋतु का विचार करके प्रशिक्षित वैद्य की देखरेख में ही करनी चाहिए, क्योंकि गलत विधि से हानि संभव है।

5.5 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- □ त्रिदोष सिद्धांत के तीन दोषों के नाम और उनके कार्य बताइए।
- □ सुश्रुत को 'शल्य-चिकित्सा का जनक' क्यों कहा जाता है?
- □ पंचकर्म की किन्हीं दो क्रियाओं के नाम और उनके लाभ बताइए।
- □ आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा में मूलभूत अंतर क्या है?

5.6 योग: शरीर, मन और आत्मा का विज्ञान

5.6.1 योग का अर्थ, उद्‌गम और परंपरा

'योग' शब्द संस्कृत की 'युज्' धातु से बना है जिसका अर्थ है – 'जोड़ना, मिलाना।' योग का लक्ष्य है – जीवात्मा और परमात्मा का मिलन; व्यक्तिगत चेतना और विश्व-चेतना का एकीकरण।

पतंजलि का प्रसिद्ध सूत्र:

> योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।
>
> तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।
>
> – पतंजलि योगसूत्र 1.2-1.3

(चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। तब द्रष्टा (आत्मा) अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो जाता है।)

योग की प्रमुख परंपराएँ:

- ज्ञान-योग: ज्ञान और विचार के मार्ग से परमात्मा की खोज।
- भक्ति-योग: भक्ति और प्रेम के मार्ग से ईश्वर-साक्षात्कार।
- कर्म-योग: निष्काम कर्म – फल की चिंता किए बिना कर्तव्य पालन।
- राज-योग: मन को साधने का मार्ग – पतंजलि का अष्टांग-योग।
- हठ-योग: शरीर और प्राण को साधने का मार्ग – आसन और प्राणायाम।
- कुंडलिनी-योग: सुप्त शक्ति को जाग्रत करने का मार्ग।

5.6.2 अष्टांग-योग: पतंजलि का योग-दर्शन

महर्षि पतंजलि (लगभग 200 ई.पू.) ने योग के आठ अंग (अष्टांग) की पद्धति प्रस्तुत की। यह 'राज-योग' या 'अष्टांग-योग' के नाम से प्रसिद्ध है:

योगांग (Limb)	अर्थ एवं विवरण
1. यम (Social Ethics)	अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह — सामाजिक नैतिकता के पाँच नियम
2. नियम (Personal Ethics)	शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान — व्यक्तिगत अनुशासन के पाँच नियम
3. आसन (Posture)	शरीर को स्थिर, सुखद आसन में रखना — योग का शारीरिक आधार
4. प्राणायाम (Breath Control)	श्वास-प्रश्वास का नियमन — प्राण-शक्ति का विस्तार
5. प्रत्याहार (Withdrawal)	इंद्रियों को बाहरी विषयों से वापस खींचना
6. धारणा (Concentration)	चित्त को एक विषय पर केंद्रित करना
7. ध्यान (Meditation)	उस विषय में निरंतर चेतना का प्रवाह
8. समाधि (Absorption)	चेतना का विषय में पूर्ण विलय — परम आनंद की अवस्था

5.6.3 प्रमुख आसन और उनके वैज्ञानिक लाभ

आसन	शरीर-लक्ष्य	लाभ	आधुनिक समकक्ष
सूर्य नमस्कार	सम्पूर्ण शरीर	12 अंगों का क्रमिक व्यायाम; हृदय-फेफड़े	Full Body Workout
शीर्षासन	मस्तिष्क	रक्त-संचार; स्मरण-शक्ति; तनाव-मुक्ति	Inverted Therapy
सर्वांगासन	थायरॉइड	थायरॉइड-नियमन; गले के रोग	Thyroid Therapy
पश्चिमोत्तानासन	रीढ़, उदर	पाचन, मधुमेह, कब्ज	Back Stretch

भुजंगासन	रीढ़, फेफड़े	पीठ-दर्द, श्वास-रोग	Cobra Pose
त्रिकोणासन	कटि, पाँव	कमर-दर्द, पाचन तंत्र	Triangle Pose
शवासन	सम्पूर्ण	तनाव-मुक्ति, रक्तचाप नियंत्रण	Deep Relaxation
वज्रासन	पाचन	भोजन के बाद; पाचन-सहायक	Digestive Pose

आसनों का अभ्यास योग्य प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में, खाली पेट और धीरे-धीरे बढ़ते क्रम में करना चाहिए। पतंजलि के योगसूत्र में आसन की परिभाषा 'स्थिरसुखमासनम्' (जो स्थिर और सुखदायक हो) दी गई है, जिसका अर्थ है कि आसन में शरीर स्थिर और मन सहज रहे। गर्भवती महिलाओं तथा उच्च रक्तचाप, हृदय-रोग या रीढ़ की समस्या वाले व्यक्तियों को चिकित्सक की सलाह से ही कुछ आसन करने चाहिए। नियमित अभ्यास से लचीलापन, संतुलन, एकाग्रता और तनाव-प्रबंधन में सहायता मिलती है।

5.6.4 प्राणायाम और उसके स्वास्थ्य-लाभ

प्राणायाम श्वास-नियंत्रण की विज्ञान-सम्मत पद्धति है। आधुनिक अनुसंधानों ने इसके अनेक स्वास्थ्य-लाभ सिद्ध किए हैं:

प्राणायाम	विधि	वैज्ञानिक लाभ
नाड़ीशोधन	एक-एक नासिका से श्वास	मस्तिष्क के दोनों गोलार्ध का संतुलन; तनाव-नाश
कपालभाति	तीव्र उच्छ्वास	फेफड़ों की सफाई; मेटाबोलिज्म; वजन-नियंत्रण
भस्त्रिका	तीव्र पूर्ण श्वास	रक्त में ऑक्सीजन; अस्थमा; ऊर्जा-वृद्धि
भ्रामरी	ध्वनि सहित उच्छ्वास	सिरदर्द; अनिद्रा; रक्तचाप
उज्जायी	कंठ से श्वास	थायरॉइड; श्वास-रोग; ध्यान-सहायक
अनुलोम-विलोम	बारी-बारी नासिका	हृदय-रोग; मधुमेह; मानसिक शांति

योगसूत्र में प्राणायाम को श्वास-प्रश्वास की गति के नियमन के रूप में बताया गया है और इसे आसन के पश्चात् का साधन माना गया है। इसमें रेचक (श्वास बाहर छोड़ना), पूरक (श्वास भीतर लेना) और कुंभक (श्वास रोकना) --- ये तीन क्रियाएँ मुख्य हैं। उच्च रक्तचाप, हृदय-रोग या श्वास-संबंधी रोगों में कुंभक और तीव्र प्राणायाम किसी योग्य प्रशिक्षक या चिकित्सक की सलाह से ही करना उचित है।

5.6.5 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और वैश्विक योग-आंदोलन

21 जून 2015 से प्रतिवर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाया जाता है। यह भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) द्वारा घोषित किया गया। 177 देशों के समर्थन से यह प्रस्ताव पास हुआ – UN इतिहास में सर्वाधिक सह-प्रस्तावक देशों का रिकॉर्ड।

- 2015 में प्रथम योग दिवस – 192 देशों में एक साथ योग; गिनीज बुक में।
- WHO ने 2019 में योग को पारंपरिक चिकित्सा की वैश्विक दिशा-निर्देश में शामिल किया।
- अमेरिका में 36 मिलियन, यूरोप में 25 मिलियन, विश्व में 300 मिलियन से अधिक योग-अभ्यासी।
- योग-शिक्षकों का वैश्विक बाजार 2023 में 87 अरब डॉलर; 'योग इकोनॉमी' का उदय।

5.7 प्राकृतिक चिकित्सा: भारत की समग्र स्वास्थ्य-दृष्टि

5.7.1 प्राकृतिक चिकित्सा का परिचय

प्राकृतिक चिकित्सा (Naturopathy) वह चिकित्सा-पद्धति है जो शरीर की स्वयं-स्वस्थ होने की शक्ति (Vis Medicatrix Naturae) पर आधारित है। इसमें पाँच प्राकृतिक तत्त्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश – से उपचार किया जाता है।

भारत में इसकी जड़ें अथर्ववेद और आयुर्वेद में हैं। आधुनिक रूप में इसे जर्मन विचारकों (Sebastian Kneipp, Louis Kuhne) ने विकसित किया, किंतु भारतीय परंपरा इसकी जनक है।

उपचार-पद्धति	विधि एवं रोग-निवारण
मृत्तिका चिकित्सा (Earth)	मिट्टी का लेप; त्वचा-रोग, सूजन, बुखार
जल-चिकित्सा (Hydrotherapy)	ठंडे-गर्म जल से स्नान, पट्टी, एनीमा; बुखार, कब्ज
वायु-चिकित्सा (Air Bath)	शुद्ध वायु में व्यायाम; फेफड़े, रक्त-शुद्धि
सूर्य-चिकित्सा (Sun Bath)	सूर्य-किरण; विटामिन D; त्वचा-रोग, टीबी
उपवास (Fasting)	शरीर-शुद्धि; मधुमेह, मोटापा, रक्तचाप
फल-सब्जी आहार	प्राकृतिक आहार; रोग-प्रतिरोधक क्षमता
योग और व्यायाम	शारीरिक-मानसिक संतुलन
ध्यान (Meditation)	तनाव, अनिद्रा, अवसाद

5.7.2 भारत में आधुनिक प्राकृतिक चिकित्सा

भारत में महात्मा गाँधी प्राकृतिक चिकित्सा के सबसे प्रबल समर्थक थे। उन्होंने 'Key to Health' पुस्तक लिखी और स्वयं अनेक रोगों का उपचार प्राकृतिक पद्धति से किया।

- निसर्गोपचार (Naturopathy) – 1945 में पुणे में 'आरोग्यधाम' की स्थापना।
- राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (NIN), पुणे – AYUSH मंत्रालय के अंतर्गत।
- भारत में 13 राज्यों में BNYS (Bachelor of Naturopathy & Yogic Sciences) पाठ्यक्रम।
- WHO ने पारंपरिक चिकित्सा में प्राकृतिक चिकित्सा को मान्यता दी है।

प्राकृतिक चिकित्सा पंचतत्त्वों --- मिट्टी (पृथ्वी), जल, सूर्य-प्रकाश (अग्नि), वायु और आकाश (उपवास) --- के प्रयोग पर आधारित है। इसमें मिट्टी-पट्टी, जल-चिकित्सा (कटि-स्नान, वाष्प-स्नान), सूर्य-स्नान, उपवास, सात्त्विक आहार और योगाभ्यास जैसे उपाय अपनाए जाते हैं। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत 'केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद' (CCRYN) इस क्षेत्र में अनुसंधान और शिक्षा का कार्य करती है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि शरीर में स्वयं रोग से लड़ने और स्वस्थ होने की क्षमता होती है, जिसे प्राकृतिक जीवनशैली द्वारा सशक्त किया जाता है।

5.8 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

(अ) सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ	स्तम्भ-ब
पतंजलि	त्रिदोष सिद्धांत
चरक	शल्य-चिकित्सा का जनक
सुश्रुत	अष्टांग योगसूत्र
त्रिदोष	वात, पित्त, कफ
कपालभाति	मेटाबोलिज्म और वजन-नियंत्रण

(ब) एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कब और क्यों मनाया जाता है?
- सप्तधातु में प्रथम और अंतिम धातु कौन-सी है?
- प्राकृतिक चिकित्सा के किन्हीं तीन तत्त्वों के नाम बताइए।

5.9 पर्यावरण संरक्षण: भारतीय दृष्टिकोण

5.9.1 भारतीय परंपरा में पर्यावरण-दर्शन का आधार

भारतीय सभ्यता में पर्यावरण-संरक्षण कोई नई अवधारणा नहीं है। यहाँ नदी, पर्वत, वृक्ष, वायु, भूमि – सभी को पवित्र और पूजनीय माना गया है। यह पर्यावरण-चेतना किसी कानून या नीति का परिणाम नहीं, बल्कि एक गहरी सांस्कृतिक आस्था है।

> माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
>
> यस्ते पृथिवि सयावः प्रतिष्ठा यत्ते विश्वरूपाः परि भूरसि।
>
> पर्जन्यः पिता स मे वृष्टिं दातु।।
>
> – अथर्ववेद 12.1.12 (भूमि-सूक्त)

(भूमि मेरी माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। हे पृथ्वी, तुम्हारी जो विभिन्न अवस्थाएँ हैं और जो तुम विश्वरूप होकर सर्वत्र व्याप्त हो – पर्जन्य (मेघ) मेरे पिता हैं, वे मुझे वर्षा दें।)

5.9.2 वैदिक साहित्य में पर्यावरण-संरक्षण

वैदिक साहित्य में पर्यावरण के पाँच तत्त्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश – की स्तुति और उनकी रक्षा के लिए प्रार्थनाएँ मिलती हैं:

वैदिक प्रार्थना / सूक्त	पर्यावरणीय संदेश
भूमि सूक्त (अथर्ववेद 12.1)	89 मंत्रों में पृथ्वी की स्तुति; भूमि-संरक्षण का आह्वान
वरुण-सूक्त (ऋग्वेद)	जल-देव वरुण की प्रार्थना; जल-शुद्धि और संरक्षण
पवन-सूक्त (ऋग्वेद)	वायु-देव की स्तुति; वायु की शुद्धता की कामना
आपः सूक्त (ऋग्वेद 10.9)	जल की स्तुति; पवित्र जल का महत्त्व

अरण्यानी सूक्त (ऋग्वेद 10.146)	वन-देवी की स्तुति; वनों का महत्त्व
सूर्य-सूक्त	सूर्य की ऊर्जा और जीवन में उसका योगदान
नदी-सूक्त (ऋग्वेद)	नदियों की स्तुति; नदी-संरक्षण

5.9.3 उपनिषदों और गीता में पर्यावरण-दर्शन

उपनिषदों और गीता में पर्यावरण की रक्षा का संदेश दार्शनिक स्तर पर है – जो समझाता है कि प्रकृति ईश्वर का रूप है और उसे नष्ट करना ईश्वर को नष्ट करना है:

> ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
>
> तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।
>
> – ईशावास्योपनिषद् 1

(इस संसार में जो भी है, वह सब ईश्वर से आच्छादित है। उसका त्याग के साथ उपभोग करो – किसी के धन पर लालच मत करो।)

यह श्लोक पर्यावरण-संरक्षण का मूल मंत्र है – प्रकृति में ईश्वर का वास है और हमें उसका उचित उपभोग करना चाहिए, अत्यधिक दोहन नहीं।

भगवद्गीता में प्रकृति को 'माया' नहीं, बल्कि ईश्वर की 'अपरा प्रकृति' कहा गया है:

> भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
>
> अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।
>
> – भगवद्गीता 7.4

(पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार – ये आठ मेरी अपरा-प्रकृति है।) अर्थात् प्रकृति के ये सभी तत्त्व ईश्वर के ही रूप हैं।

5.9.4 भारतीय पर्यावरण-संरक्षण के व्यावहारिक रूप

भारतीय परंपरा में पर्यावरण-संरक्षण केवल दार्शनिक स्तर पर नहीं रहा, बल्कि इसे दैनंदिन जीवन में उतारा गया:

भारत में 'देव-वन' या पवित्र उपवन (Sacred Groves) की परंपरा रही है --- जैसे महाराष्ट्र की देवराई, कर्नाटक के देवरकाडु, केरल के कावु और मेघालय के लॉ किन्तांग --- जहाँ स्थानीय समुदाय धार्मिक आस्था के कारण वृक्ष काटना वर्जित मानते हैं। इसी प्रकार पीपल, वट, तुलसी, नीम और आँवला जैसे वृक्षों को पूजा से जोड़कर उनका संरक्षण किया गया। जल-स्रोतों के लिए बावड़ियों, कुंडों और तालाबों तथा पशुओं के लिए गौशाला, पक्षियों के लिए चुग्गा-दान और 'जीव-दया' जैसी प्रथाओं ने पर्यावरण-संतुलन में योगदान दिया। इन तीनों पक्षों को आगे विस्तार से बताया गया है।

(अ) वृक्ष-संरक्षण परंपरा

- 'वृक्षारोपण पुण्य' – एक वृक्ष लगाना दस पुत्रों के समान पुण्य देता है (मत्स्यपुराण)।
- 'पंचवट' – घर के पास पाँच पवित्र वृक्ष लगाने की परंपरा: पीपल, वट, नीम, आँवला, बेल।
- 'उपवन' – राजाओं द्वारा सार्वजनिक उद्यान बनाना; अशोक का 'औषधि-वन'।
- बिश्नोई समाज – खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिए 363 जीवन बलिदान (1730 ई.); 'चिपको आंदोलन' का प्रेरणास्रोत।

> अश्वत्थमेकं पिचुमंदमेकं न्यग्रोधमेकं दश पुष्पजातीः।
> द्वे द्वे तथा दाडिमचूतपुष्पे पञ्चाम्रमुख्याः ग्रामतरोर्दशैव।।
>
> – मत्स्यपुराण

(एक पीपल, एक नीम, एक वट, दस फूल देने वाले वृक्ष, दो-दो अनार और आम – यह लगाने वाला पुण्यवान होता है।)

(ब) जल-संरक्षण परंपरा

- 'वापी, कूप, तालाब' – जल-संग्रह के साधनों का निर्माण पुण्य-कर्म माना जाता था।
- चाँद बावड़ी (राजस्थान, 9वीं शती) – 3500 सीढ़ियाँ, 13 मंजिलें; भूमिगत जल-संग्रह।
- खंडिया, बंधेज, कुंड, झालरा – राजस्थान की पारंपरिक जल-संचय व्यवस्था।
- 'जल ही जीवन है' – जल को 'जीवन' (Vital Force) कहा गया है।

(स) पशु-संरक्षण

- 'अहिंसा परमो धर्मः' – पशुओं की हत्या पाप माना गया।
- 'गो-सेवा' – गाय को माता का दर्जा; गोचर भूमि का सरंक्षण।
- अशोक के पशु-संरक्षण आदेश (शिलालेख) – 250 ई.पू. में पशुओं की हत्या पर प्रतिबंध।
- बिश्नोई समुदाय – वन्य-प्राणियों का सरंक्षण; काले हिरण की पूजा।

5.9.5 प्राचीन भारतीय पर्यावरण-नीति और अशोक के आदेश

सम्राट अशोक (250 ई.पू.) ने अपने शिलालेखों में पर्यावरण-संरक्षण के अत्यंत व्यापक आदेश दिए – जो आज भी प्रासंगिक हैं:

अशोक के आदेश	आधुनिक समकक्ष
औषधीय जड़ी-बूटियाँ उगाना	औषधीय पौधों का सरंक्षण
पशु-हत्या पर प्रतिबंध	वन्य-जीव सरंक्षण कानून

सड़कों पर वृक्षारोपण	राष्ट्रीय राजमार्ग वृक्षारोपण
जल-स्रोतों की सफाई	नमामि गंगे, स्वच्छ भारत
पशु-चिकित्सालय	वेटरिनरी अस्पताल
वन-सरंक्षण	वन्य-जीव अभयारण्य
कुएँ और छायादार वृक्ष	सार्वजनिक पार्क और जल-स्रोत

अशोक के शिलालेखों में पर्यावरण से संबंधित कई स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। द्वितीय शिलालेख में मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सा-व्यवस्था, औषधीय पौधों के रोपण तथा मार्गों पर कुएँ खुदवाने और वृक्ष लगवाने का उल्लेख है, जबकि सप्तम स्तंभ-लेख में सड़कों के किनारे वट वृक्ष, आम्र-वाटिकाएँ, कुएँ और विश्राम-गृह बनवाने की बात कही गई है। पंचम स्तंभ-लेख में अनेक पशु-पक्षियों के वध पर प्रतिबंध तथा वन को व्यर्थ जलाने पर निषेध का वर्णन है। ये आदेश सिद्ध करते हैं कि राज्य-स्तर पर भी पर्यावरण-संरक्षण को नैतिक और प्रशासनिक दायित्व माना गया था।

5.9.6 आधुनिक पर्यावरण आंदोलन और भारतीय परंपरा

भारत के आधुनिक पर्यावरण आंदोलन प्राचीन भारतीय पर्यावरण-दर्शन की ही अभिव्यक्ति हैं:

आंदोलन	**वर्ष / नेता**	**मूल प्रेरणा**
चिपको आंदोलन	1973, चमोली / सुंदरलाल बहुगुणा	बिश्नोई परंपरा से प्रेरित; वृक्ष-आलिंगन
नर्मदा बचाओ	1985, मेधा पाटकर	नदी-सरंक्षण की वैदिक भावना
अप्पिको आंदोलन	1983, कर्नाटक / पाण्डुरंग हेगड़े	चिपको का दक्षिण रूप; वन-सरंक्षण
साइलेंट वैली आंदोलन	1978-84, केरल	जैव-विविधता सरंक्षण
बिश्नोई जागरण	17वीं शती से	खेजड़ी और वन्य-जीव का सरंक्षण

गंगा-एक्शन प्लान	1986, राजीव गाँधी	नदी-सरंक्षण की वैदिक परंपरा
नमामि गंगे	2014, मोदी सरकार	गंगा को माँ के रूप में स्वच्छ करना

5.9.7 भारतीय पर्यावरण-दर्शन और SDGs (सतत विकास लक्ष्य)

संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs, 2015-2030) और भारतीय पर्यावरण-दर्शन में गहरी समानता है:

SDG लक्ष्य	भारतीय पर्यावरण-दर्शन का समकक्ष	भारतीय परंपरा
SDG 6: स्वच्छ जल	जल-देव वरुण की प्रार्थना; जल-संरक्षण	बावड़ी, कुंड, तालाब
SDG 7: स्वच्छ ऊर्जा	सौर-ऊर्जा – सूर्य-देव की आराधना	सूर्य नमस्कार; सौर-पूजा
SDG 12: उत्तरदायी उपभोग	'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' (त्याग से उपभोग)	अपरिग्रह; मितव्ययिता
SDG 13: जलवायु कार्रवाई	'वृक्षारोपण पुण्य'; पर्यावरण-पूजन	पंचवट; बिश्नोई
SDG 14: जल-जीव संरक्षण	नदी-पूजन; जलीय जीवों का सम्मान	गंगा-माँ; मकर-पूजा
SDG 15: भूमि संरक्षण	'माता भूमिः'; वन-देवी की स्तुति	अरण्यानी सूक्त; चिपको

5.10 अपनी प्रगति जाँचें – 4 (Check Your Progress – 4)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ अथर्ववेद के 12वें कांड में _____ सूक्त है जो पृथ्वी-संरक्षण का आह्वान करता है।

□ चिपको आंदोलन _____ में शुरू हुआ था और इसके नेता _____ थे।

□ 'ईशावास्यमिदं सर्वं...' यह मंत्र _____ उपनिषद् से है।

□ बिश्नोई समुदाय ने 1730 ई. में _____ वृक्ष की रक्षा के लिए _____ जीवन बलिदान किए।

(ब) दो-दो उदाहरण दीजिए:

□ वैदिक साहित्य में पर्यावरण-सूक्त: _____ और _____।

□ भारत के आधुनिक पर्यावरण आंदोलन: _____ और _____।

□ अशोक के पर्यावरण-संरक्षण आदेशों के उदाहरण: _____ और _____।

5.11 भारतीय आर्थिक परंपरा: कौटिल्य से सर्वोदय तक

5.11.1 भारतीय अर्थचिंतन की विशेषताएँ

भारतीय अर्थव्यवस्था की दृष्टि पाश्चात्य अर्थशास्त्र से मौलिक रूप से भिन्न है। यहाँ 'अर्थ' को चार पुरुषार्थों में स्थान तो दिया गया है, किंतु इसे 'धर्म' के अधीन रखा गया है। 'अर्थ' के लिए 'धर्म' का त्याग भारतीय दृष्टि में अस्वीकार्य है।

पाश्चात्य अर्थशास्त्र	भारतीय अर्थचिंतन
व्यक्तिगत लाभ (Profit Motive) केंद्रीय	धर्म के अनुसार अर्थ-उपार्जन
प्रकृति संसाधन (Resource)	प्रकृति माँ है; उसका सम्मान
असीमित उपभोग (Consumerism)	'अपरिग्रह' – आवश्यकता से अधिक संचय नहीं
GDP माप से समृद्धि	'सर्वोदय' – सबके कल्याण से समृद्धि
प्रतिस्पर्धा (Competition) आधारित	सहयोग और 'दान' आधारित
वर्तमान पीढ़ी केंद्रित	'सप्तपीढ़ी' – सात पीढ़ियों का भविष्य

भारतीय अर्थचिंतन में अर्थ का लक्ष्य केवल व्यक्तिगत लाभ न होकर समाज का समग्र कल्याण रहा है। इसी कारण 'लोभ' को निंदनीय और 'संतोष' को गुण माना गया तथा दान, परोपकार और सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल दिया गया। कौटिल्य के अनुसार राज्य का मुख्य उद्देश्य 'योगक्षेम' --- अर्थात् प्रजा के लिए संपत्ति की प्राप्ति और उसकी सुरक्षा --- सुनिश्चित करना है। यह दृष्टि आधुनिक 'कल्याणकारी राज्य' की अवधारणा के निकट है।

5.11.2 कौटिल्य का अर्थशास्त्र: प्रथम आर्थिक ग्रंथ

कौटिल्य/चाणक्य (लगभग 300 ई.पू.) का 'अर्थशास्त्र' विश्व का प्रथम व्यवस्थित अर्थशास्त्र ग्रंथ है जो Adam Smith के 'Wealth of Nations' (1776) से 2000 वर्ष पूर्व लिखा गया। इसमें:

- कृषि, व्यापार, उद्योग और खनन का विस्तृत आर्थिक विवरण।
- कर-प्रणाली – प्रगतिशील कराधान; व्यापारियों, किसानों, शिल्पकारों से अलग-अलग कर।
- श्रम-कानून – मजदूरों के अधिकार; न्यूनतम मजदूरी का उल्लेख।
- बाजार-नियंत्रण – माप-तौल की मानकीकरण; मिलावट के विरुद्ध दंड।
- आर्थिक जासूसी – व्यापार में गुप्तचर-व्यवस्था।
- कल्याणकारी राज्य – खजाने का उपयोग प्रजा-कल्याण में।

कौटिल्य ने कहा है कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख और प्रजा के हित में ही राजा का हित निहित है --- यह उनके राजनीतिक-आर्थिक चिंतन का सार है (अर्थशास्त्र 1.19)। 'अध्यक्ष-प्रचार' नामक द्वितीय अधिकरण में कोष्ठागार, खान, वाणिज्य, कृषि, सूत्र (वस्त्र), नौका आदि विभिन्न विभागों के अध्यक्षों की नियुक्ति और उनके कर्तव्यों का वर्णन है, जिससे पता चलता है कि उस समय एक सुसंगठित आर्थिक प्रशासन विद्यमान था। साथ ही मूल्य-नियंत्रण, कर-संग्रह और व्यापार-नियमन की भी व्यवस्था थी।

5.11.3 गाँधी का 'सर्वोदय' अर्थशास्त्र

महात्मा गाँधी का 'सर्वोदय' (Welfare of All) अर्थशास्त्र भारतीय परंपरा का आधुनिक पुनर्कथन है। यह जॉन रस्किन की 'Unto This Last' से प्रेरित और भारतीय आध्यात्मिकता से सिंचित है:

- 'ट्रस्टीशिप' (Trusteeship) – धनवान अपनी संपत्ति का ट्रस्टी (संरक्षक) है, स्वामी नहीं।
- 'स्वदेशी' – स्थानीय उत्पाद का उपयोग; स्वावलंबी अर्थव्यवस्था।
- 'खादी' – ग्रामीण रोजगार का प्रतीक; आर्थिक स्वतंत्रता का हथियार।
- 'अपरिग्रह' – न्यूनतम उपभोग; पर्यावरण-मित्र अर्थव्यवस्था।

गाँधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' के विचारों को गुजराती में 'सर्वोदय' नाम से प्रस्तुत किया (1908)। स्वतंत्रता के बाद आचार्य विनोबा भावे ने 1951 में भूदान आंदोलन आरंभ किया, जिसमें भूस्वामियों से स्वेच्छा से भूमि दान लेकर भूमिहीनों को दी गई। जयप्रकाश नारायण ने भी सर्वोदय के विचार को आगे बढ़ाया। इन प्रयासों का मूल उद्देश्य समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का उत्थान करना था।

5.12 समकालीन प्रासंगिकता: आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान

5.12.1 भारतीय विज्ञान-ज्ञान की आधुनिक स्वीकृति

आधुनिक विज्ञान धीरे-धीरे उन सत्यों को सिद्ध कर रहा है जो भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व जाने थे:

भारतीय ज्ञान	आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धि
परमाणुवाद (कणाद)	Atomic Theory – जे.जे. थॉमसन, रदरफोर्ड, बोर
पृथ्वी की घूर्णन गति (आर्यभट)	कोपरनिकस (1543), गैलिलियो (1610) ने पश्चिम में सिद्ध किया

गुरुत्वाकर्षण (भास्कराचार्य)	न्यूटन (1687) – 500 वर्ष बाद
अनंत (भास्कराचार्य 'n/0=∞')	Georg Cantor (1874) ने Infinity Theory विकसित की
योग और ध्यान	Harvard, AIIMS के शोध – तनाव, हृदय, मधुमेह में लाभकारी
आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ	हल्दी (Curcumin), नीम (Azadirachtin) – WHO द्वारा मान्य
DNA में Binary Pattern (पिंगल)	कंप्यूटर की बाइनरी भाषा; Genetic Code
ध्यान में Alpha तरंगें	Neuroscience – ध्यान में Alpha/Theta Brain Waves

5.12.2 AYUSH: भारतीय चिकित्सा पद्धतियों का राष्ट्रीय प्रोत्साहन

भारत सरकार ने 2014 में AYUSH मंत्रालय की स्थापना की – Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha, Homeopathy:

- राष्ट्रीय आयुष मिशन – आयुर्वेद चिकित्सा केंद्रों का विस्तार।
- आयुर्वेद दिवस – धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) पर प्रतिवर्ष।
- WHO-AYUSH सहयोग – पारंपरिक चिकित्सा के वैश्विक मानक।
- COVID-19 में AYUSH – काढ़ा, आयुर्वेदिक दवाओं की मान्यता।
- AYUSH का वैश्विक बाजार 2023 में 20 अरब डॉलर से अधिक।

आयुष मंत्रालय की स्थापना नवंबर 2014 में की गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने गुजरात के जामनगर में पारंपरिक चिकित्सा के लिए 'ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन' की स्थापना की पहल की (2022), जो भारतीय पारंपरिक चिकित्सा की वैश्विक मान्यता का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में शोध, औषधीय पौधों के संरक्षण तथा गुणवत्ता-मानकीकरण पर भी ध्यान दिया जा रहा है ताकि पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार मिल सके।

5.12.3 NEP 2020 और भारतीय विज्ञान-ज्ञान

NEP 2020 ने भारतीय शिक्षा में विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य-चेतना को एकीकृत करने का निर्देश दिया है:

- IKT (Indian Knowledge Tradition) में गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद को शामिल करना।
- योग को स्कूल पाठ्यक्रम में अनिवार्य करना।
- पर्यावरण-शिक्षा को सभी स्तरों पर एकीकृत करना।
- 'जीवन-कौशल' शिक्षा में आयुर्वेदिक जीवनशैली का समावेश।
- प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान को पाठ्यपुस्तकों में उचित स्थान।

5.13 सारांश (Summary)

इस अध्याय में विज्ञान, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था के भारतीय दृष्टिकोण का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. भारतीय गणित की देन: शून्य, दशमलव प्रणाली, पाई का मान, बीजगणित, त्रिकोणमिति — ये सब भारत की विश्व को मौलिक गणितीय देनें हैं जो आधुनिक विज्ञान की नींव हैं।
2. प्रमुख वैज्ञानिक: आर्यभट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, वराहमिहिर, कणाद, नागार्जुन — इन्होंने यूरोपीय वैज्ञानिकों से शताब्दियों पूर्व महत्त्वपूर्ण खोजें कीं।

3. शुल्बसूत्र: 800-500 ई.पू. के ये ग्रंथ पाइथागोरस प्रमेय को पाइथागोरस से 300 वर्ष पूर्व प्रस्तुत करते हैं।
4. आयुर्वेद के सिद्धांत: पंचमहाभूत, त्रिदोष (वात-पित्त-कफ), सप्तधातु – ये आयुर्वेद के तीन स्तंभ हैं जो एक समग्र स्वास्थ्य-दर्शन प्रस्तुत करते हैं।
5. सुश्रुत की उपलब्धियाँ: शल्य-चिकित्सा, प्लास्टिक सर्जरी, मोतियाबिंद-शल्य – सुश्रुत विश्व के प्रथम शल्य-चिकित्सक हैं।
6. योग का अष्टांग मार्ग: पतंजलि के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि – यह शारीरिक-मानसिक-आत्मिक विकास की पूर्ण पद्धति है।
7. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: 21 जून – 190 देशों में 30 करोड़ से अधिक अभ्यासी; भारत का 'सॉफ्ट पावर'।
8. भारतीय पर्यावरण-दर्शन: 'माता भूमिः' से लेकर अशोक के पर्यावरण-आदेशों तक, भारत में पर्यावरण-संरक्षण एक जीवन-दर्शन रहा है।
9. आधुनिक आंदोलन: चिपको, अप्पिको, नर्मदा बचाओ – ये भारतीय पर्यावरण-परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
10. SDGs और भारत: भारतीय पर्यावरण-दर्शन संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों से गहराई से जुड़ा है।

5.14 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
शुल्बसूत्र	800-500 ई.पू. के वैदिक ज्यामिति-ग्रंथ; पाइथागोरस प्रमेय का प्राचीनतम स्रोत
आर्यभटीय	आर्यभट (499 ई.) का खगोल-गणित ग्रंथ; शून्य, π, पृथ्वी की घूर्णन गति
आयुर्वेद	'आयुः + वेद' – जीवन का विज्ञान; विश्व की प्राचीनतम जीवित चिकित्सा-प्रणाली

त्रिदोष	वात, पित्त, कफ – आयुर्वेद की तीन मूलभूत जीवन-शक्तियाँ
सप्तधातु	रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र – शरीर के सात निर्माण-तत्त्व
पंचकर्म	वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, रक्तमोक्षण – आयुर्वेदिक शोधन-चिकित्सा
अष्टांग-योग	पतंजलि के योग के आठ अंग: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि
कपालभाति	योग की तीव्र श्वास-क्रिया; मेटाबोलिज्म सुधार
प्राणायाम	योग में श्वास-नियंत्रण की विज्ञान-सम्मत पद्धति
प्राकृतिक चिकित्सा	पाँच प्राकृतिक तत्त्वों (मृत्तिका, जल, वायु, सूर्य, आकाश) से उपचार
भूमि-सूक्त	अथर्ववेद 12.1 – 89 मंत्रों में पृथ्वी की स्तुति और संरक्षण का आह्वान
चिपको आंदोलन	1973, उत्तराखंड – वृक्षों से लिपटकर कटाई रोकने का आंदोलन
AYUSH	Ayurveda, Yoga, Unani, Siddha, Homeopathy – भारतीय परंपरागत चिकित्सा मंत्रालय
SDGs	Sustainable Development Goals – संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्य (2015-2030)
सर्वोदय	गाँधी का अर्थ-दर्शन: सबका उदय, अंतिम व्यक्ति तक कल्याण
अपरिग्रह	आवश्यकता से अधिक संचय न करना – जैन और गाँधी दर्शन का मूल सिद्धांत
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में केंद्रीय स्थान

5.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. प्राचीन भारत में गणित और खगोलशास्त्र की प्रमुख उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन कीजिए। शून्य की खोज और शुल्बसूत्र के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डालिए।
2. आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों — पंचमहाभूत, त्रिदोष और सप्तधातु — की विस्तार से व्याख्या कीजिए। आयुर्वेद की आधुनिक चिकित्सा से तुलना करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए।
3. पतंजलि के अष्टांग-योग की विस्तृत व्याख्या कीजिए। योग के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभों को वैज्ञानिक दृष्टि से समझाइए।
4. भारतीय पर्यावरण-दर्शन की विवेचना कीजिए। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक पर्यावरण आंदोलनों तक की निरंतरता को उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. शुल्बसूत्र में किस गणितीय सिद्धांत का उल्लेख है और यह क्यों महत्त्वपूर्ण है?
2. सुश्रुत की तीन प्रमुख शल्य-चिकित्सा उपलब्धियाँ बताइए।
3. त्रिदोष सिद्धांत के अनुसार वात, पित्त और कफ के असंतुलन से कौन-कौन से रोग होते हैं?
4. चिपको आंदोलन क्या था और यह किस भारतीय परंपरा से प्रेरित था?
5. 'अपरिग्रह' का अर्थ बताइए और यह आधुनिक पर्यावरण-संरक्षण से किस प्रकार जुड़ा है?
6. AYUSH मंत्रालय की स्थापना का उद्देश्य और इसके कार्य बताइए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

1. शून्य के गणितीय नियमों की प्रथम व्याख्या किसने की? (अ) आर्यभट (ब) ब्रह्मगुप्त (स) भास्कराचार्य (द) वराहमिहिर
2. आयुर्वेद में कितने दोष माने गए हैं? (अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7
3. सुश्रुत संहिता में वर्णित शल्य-यंत्रों की संख्या है: (अ) 50 (ब) 85 (स) 120 (द) 200
4. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कब मनाया जाता है? (अ) 1 जनवरी (ब) 21 मार्च (स) 21 जून (द) 5 जून
5. चिपको आंदोलन किस वर्ष शुरू हुआ? (अ) 1965 (ब) 1970 (स) 1973 (द) 1980
6. 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' किस वेद में है? (अ) ऋग्वेद (ब) यजुर्वेद (स) सामवेद (द) अथर्ववेद
7. पंचकर्म में कितनी चिकित्सा-क्रियाएँ हैं? (अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 7

5.16 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

5.3 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. शून्य के गणितीय नियमों की प्रथम विस्तृत व्याख्या ब्रह्मगुप्त ने की थी।
2. 'पाइथागोरस प्रमेय' का उल्लेख भारत में बौधायन शुल्बसूत्र में मिलता है।

3. आर्यभट ने π का मान 3.1416 (62832/20000) बताया था।
4. दिल्ली का लौह-स्तंभ लगभग 1600 वर्षों से जंग-रहित है।

(ब) सही/गलत:

1. सही (✓) – आर्यभट ने पृथ्वी की घूर्णन गति की खोज कोपरनिकस से 1000 वर्ष पहले की।
2. गलत (✗) – शून्य की खोज भारत में हुई थी।
3. सही (✓) – कणाद ने परमाणुवाद का सिद्धांत डाल्टन से 2500 वर्ष पहले दिया था।
4. गलत (✗) – सुश्रुत संहिता में शल्य-चिकित्सा का भी विस्तृत वर्णन है।

5.5 के उत्तर:

1. त्रिदोष: वात (गति, तंत्रिका-क्रिया), पित्त (पाचन, ताप-नियमन), कफ (संरचना, प्रतिरक्षा)।
2. सुश्रुत को शल्य-चिकित्सा का जनक इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने 6ठी शती ई.पू. में 120 शल्य-यंत्रों का वर्णन, राइनोप्लास्टी (नाक-पुनर्निर्माण), मोतियाबिंद-शल्य और पोस्ट-ऑपरेटिव देखभाल के नियम बताए।
3. पंचकर्म की दो क्रियाएँ: वमन (उल्टी – कफ-विकार; श्वास-रोग), विरेचन (दस्त – पित्त-विकार; यकृत-रोग)।
4. मूलभूत अंतर: आयुर्वेद शरीर+मन+आत्मा की समग्र चिकित्सा है; आधुनिक चिकित्सा मुख्यतः भौतिक शरीर के लक्षण-निवारण पर केंद्रित है।

5.8 के उत्तर (सही मिलान):

स्तम्भ-अ	सही उत्तर
पतंजलि	अष्टांग योगसूत्र
चरक	आयुर्वेद – काया-चिकित्सा
सुश्रुत	शल्य-चिकित्सा का जनक
त्रिदोष	वात, पित्त, कफ
कपालभाति	मेटाबोलिज्म और वजन-नियंत्रण

1. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: 21 जून को मनाया जाता है। 2015 में भारत की पहल पर UN ने इसे घोषित किया – विश्व में योग के प्रचार-प्रसार के लिए।
2. सप्तधातु में प्रथम धातु 'रस' (Plasma) और अंतिम धातु 'शुक्र' (Reproductive Tissue) है।
3. प्राकृतिक चिकित्सा के तीन तत्त्व: मृत्तिका (पृथ्वी), जल और सूर्य।

5.10 के उत्तर:

1. अथर्ववेद के 12वें कांड में 'भूमि-सूक्त' है जो पृथ्वी-संरक्षण का आह्वान करता है।
2. चिपको आंदोलन 1973 में शुरू हुआ था और इसके नेता सुंदरलाल बहुगुणा (और गौरा देवी) थे।
3. 'ईशावास्यमिदं सर्वं...' यह मंत्र ईशावास्योपनिषद् से है।
4. बिश्नोई समुदाय ने 1730 ई. में खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिए 363 जीवन बलिदान किए।
5. वैदिक पर्यावरण-सूक्त: भूमि-सूक्त और अरण्यानी-सूक्त।
6. पर्यावरण आंदोलन: चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन।
7. अशोक के आदेश: औषधीय जड़ी-बूटियाँ उगाना और पशु-हत्या पर प्रतिबंध।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (5.15 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब) ब्रह्मगुप्त
2	(ब) 3 (वात, पित्त, कफ)
3	(स) 120
4	(स) 21 जून
5	(स) 1973
6	(द) अथर्ववेद
7	(स) 5

5.17 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- आर्यभटीय – आर्यभट (499 ई.) – Walter Eugene Clark अनुवाद
- ब्रह्मस्फुटसिद्धांत – ब्रह्मगुप्त (628 ई.)
- लीलावती एवं सिद्धांतशिरोमणि – भास्कराचार्य
- चरकसंहिता – चरक (गीताप्रेस / CCRAS, नई दिल्ली)
- सुश्रुतसंहिता – सुश्रुत (Kaviraj Kunjalal Bhishagratna अनुवाद)
- पतंजलि योगसूत्र – (Georg Feuerstein अनुवाद)
- अथर्ववेद – भूमि-सूक्त 12.1 (गीताप्रेस)
- ईशावास्योपनिषद् (गीताप्रेस)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- बी.वी. सुब्बारायप्पा – भारतीय विज्ञान का इतिहास (राजकमल प्रकाशन)

- देबीप्रसाद चट्टोपाध्याय – भारतीय दर्शन में लोकायत (People's Publishing House)
- महात्मा गाँधी – स्वास्थ्य की कुंजी (नवजीवन प्रकाशन)
- स्वामी विवेकानंद – राज-योग (रामकृष्ण मिशन)
- सुंदरलाल बहुगुणा – चिपको आंदोलन (प्रिया प्रकाशन)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- George Gheverghese Joseph – The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics
- Kim Plofker – Mathematics in India, Princeton University Press
- P.V. Sharma – History of Medicine in India, INSA, New Delhi
- David Frawley – Ayurveda and the Mind, Lotus Press
- B.K.S. Iyengar – Light on Yoga, HarperCollins
- Vandana Shiva – Staying Alive: Women, Ecology and Development
- Subhash Kak – The Astronomical Code of the Rigveda

ऑनलाइन संसाधन:

- https://ayush.gov.in – AYUSH मंत्रालय, भारत सरकार
- https://yoga.ayush.gov.in – राष्ट्रीय योग पोर्टल
- https://www.insa.nic.in – भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी
- https://www.moef.gov.in – पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 6	VATTER:DR DHARAMBIR

भारतीय आर्थिक चिंतन

कृषि, उद्योग, व्यापार एवं समुद्री वाणिज्य

Indian Economic Thought | Agriculture | Industry | Trade & Maritime Commerce

अनुभाग **विषय-वस्तु**

6.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

6.1 प्रस्तावना

6.2 भारतीय आर्थिक चिंतन: मूल अवधारणाएँ

6.2.1 'अर्थ' की भारतीय अवधारणा + 3 स्तरों की तालिका

6.2.2 कौटिल्य का अर्थशास्त्र — 11 आर्थिक विषयों की तालिका

6.2.3 धर्म-अर्थ समन्वय + नैतिक सिद्धांत

6.2.4 ऐतिहासिक समृद्धि के 6 साक्ष्य

6.3 Check Your Progress — 1

6.4 कृषि: भारतीय आर्थिक जीवन का आधार

6.4.1 7000 ई.पू. से मुगल काल तक कृषि-विकास

6.4.2 7 प्रमुख कृषि-ग्रंथ

6.4.3 वैदिक कृषि-सूक्त

6.4.4 8 उन्नत कृषि-पद्धतियाँ

6.4.5 भूमि के 7 प्रकार — कौटिल्य के अनुसार

6.5 Check Your Progress — 2

6.6 भारतीय शिल्प एवं उद्योग

6.6.1 शिल्प-उद्योग का वैश्विक महत्त्व

6.6.2 7 प्रसिद्ध वस्त्र-परंपराओं की तालिका

6.6.3 धातु-उद्योग — लौह-स्तंभ, वुट्ज़ इस्पात

6.6.4 मृत्तिका, काष्ठ, रत्न उद्योग

6.6.5 श्रेणी (Guild) व्यवस्था — 8 विशेषताएँ

6.7 Check Your Progress — 3

अनुभाग	विषय-वस्तु
6.8	भारतीय व्यापार-व्यवस्था
6.8.1	आंतरिक व्यापार की संरचना
6.8.2	प्राचीन मुद्रा-प्रणाली
6.8.3	बैंकिंग और हुंडी
6.9	समुद्री वाणिज्य
6.9.1	8 ऐतिहासिक चरण
6.9.2	8 प्रमुख बंदरगाह
6.9.3	सिल्क रोड और हिंद महासागर व्यापार
6.9.4	मसाला-व्यापार – 6 मसालों की तालिका
6.9.5	चोल नौसेना और दक्षिण-पूर्व एशिया
6.10	Check Your Progress — 4
6.11	वैश्विक व्यापार + आधुनिक प्रासंगिकता + आत्मनिर्भर भारत
6.12	सारांश (10 बिंदु)
6.13	शब्दावली (17 शब्द)
6.14	Self-Assessment Test
6.15	Answers to Check Your Progress
6.16	References / Suggested Readings

6.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारतीय आर्थिक चिंतन के मूल स्वरूप – 'अर्थ' की अवधारणा, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और धर्म-अर्थ के समन्वय को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारत में कृषि की उन्नत परंपरा, कृषि-ग्रंथों और भूमि-प्रबंधन की व्यवस्था का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय शिल्प-उद्योग – वस्त्र, धातु, मृत्तिका, काष्ठ और हस्तशिल्प की परंपराओं का अध्ययन कर सकेंगे।

- प्राचीन भारत की व्यापार-व्यवस्था – श्रेणी, निगम, सार्थवाह और मुद्रा-प्रणाली को समझ सकेंगे।
- भारत की समुद्री वाणिज्य परंपरा – प्राचीन बंदरगाह, व्यापारिक मार्ग और दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापारिक संबंधों का विवेचन कर सकेंगे।
- वैश्विक व्यापार में भारत की ऐतिहासिक भूमिका – सिल्क रोड, मसाला-व्यापार और भारतीय निर्यात की वैश्विक माँग को जान सकेंगे।
- भारतीय आर्थिक दर्शन – अपरिग्रह, स्वदेशी, दान और ट्रस्टीशिप की अवधारणाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय आर्थिक परंपराओं की आधुनिक प्रासंगिकता और NEP 2020 के संदर्भ में उनके महत्त्व को समझ सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारत का इतिहास केवल राजनीतिक उत्थान-पतन का इतिहास नहीं है – यह एक महान आर्थिक सभ्यता का इतिहास भी है। प्राचीन काल से मध्यकाल तक भारत विश्व की सबसे समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं में से एक था। अनुमान है कि 1700 ई. तक भारत का विश्व GDP में हिस्सा लगभग 24-25% था – अमेरिका आज जितना है उससे अधिक। यह समृद्धि किसी एक कारण से नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित आर्थिक चिंतन, उन्नत कृषि, विकसित उद्योग-शिल्प और विशाल व्यापार-नेटवर्क का परिणाम थी।

भारतीय आर्थिक चिंतन पाश्चात्य अर्थशास्त्र से मूलत: भिन्न है। यहाँ 'अर्थ' को पुरुषार्थ-चतुष्टय के एक अंग के रूप में देखा गया – धर्म के मार्गदर्शन में, काम की संतुष्टि के साथ और मोक्ष के लक्ष्य की ओर। कौटिल्य का अर्थशास्त्र (लगभग 300 ई.पू.) Adam Smith के 'Wealth of Nations' से 2000 वर्ष पूर्व लिखा गया था और आज भी आर्थिक नीति-निर्माण में प्रासंगिक है।

भारतीय कृषि विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक विकसित कृषि-प्रणालियों में से एक है। सिंधु-सभ्यता के किसान से लेकर अकबर के जमींदारी-सुधार तक, भारत ने कृषि में अनवरत प्रयोग और विकास किया। शिल्प-उद्योग में भारत ने विश्व को बारीक मलमल, उत्कृष्ट इस्पात, मूल्यवान रत्नाभूषण और अद्वितीय हस्तशिल्प दिए।

भारत की समुद्री व्यापार परंपरा इतनी प्राचीन और व्यापक थी कि रोम के सम्राट ने शिकायत की थी कि 'भारतीय व्यापारी रोम का सोना खींच ले जाते हैं।' लोथल (2400 ई.पू.) से लेकर कालीकट (15वीं शती ई.) तक, भारत के बंदरगाह विश्व-व्यापार के केंद्र थे।

इस अध्याय में हम इसी गौरवशाली भारतीय आर्थिक परंपरा का व्यवस्थित अध्ययन करेंगे।

6.2 भारतीय आर्थिक चिंतन: मूल अवधारणाएँ

6.2.1 'अर्थ' की भारतीय अवधारणा

भारतीय परंपरा में 'अर्थ' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। यह केवल 'धन' या 'पैसा' नहीं है – यह जीवन-यापन के लिए आवश्यक समस्त साधनों का समुच्चय है। 'अर्थशास्त्र' का अर्थ है – 'अर्थ का शास्त्र', अर्थात् जीवन-साधनों की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विज्ञान।

> अर्थस्य अर्थः कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्यं च तस्मात् त्रयी च दण्डनीतिश्च।
>
> एतावान् विद्यासमुद्देशः। तासां अर्थशास्त्रम् उत्तमम्।।
>
> – कौटिल्य – अर्थशास्त्र 1.2.1

(कृषि, पशुपालन और वाणिज्य ही 'अर्थ' है। इन्हीं से राज्य चलता है। इनके साथ दंड-नीति – ये मिलकर आर्थिक जीवन के आधार हैं।)

'अर्थ' के तीन स्तर:

स्तर	अर्थ	आधुनिक समकक्ष
व्यक्तिगत अर्थ	जीवन-यापन के लिए आवश्यक साधन – भोजन, वस्त्र, आवास	Personal Income & Wealth
राजकीय अर्थ	राज्य की आय, खजाना और आर्थिक नीति	Public Finance & GDP
सामाजिक अर्थ	समाज की समग्र समृद्धि; दान-परंपरा; सामूहिक कल्याण	Social Welfare & Development

6.2.2 कौटिल्य का अर्थशास्त्र: विश्व का प्रथम आर्थिक महाग्रंथ

चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त, 350-283 ई.पू.) का 'अर्थशास्त्र' न केवल भारत का, बल्कि विश्व का प्रथम व्यवस्थित अर्थशास्त्र-ग्रंथ है। 1905 में इसकी पुनर्खोज ने विश्व के विद्वानों को चकित कर दिया। इस ग्रंथ में 15 अधिकरण, 150 अध्याय और लगभग 6000 श्लोक हैं।

अर्थशास्त्र की आर्थिक विषय-वस्तु:

आर्थिक विषय	अर्थशास्त्र का प्रतिपादन
कर-प्रणाली (Taxation)	आय के अनुपात में कर; व्यापार पर शुल्क; भूमि-कर की विधि
कृषि-नीति	भूमि-आवंटन; सिंचाई; किसान-संरक्षण; भंडारण
व्यापार-नियमन	मूल्य-नियंत्रण; माप-तौल की जाँच; भ्रष्टाचार-निरोध
उद्योग-प्रबंधन	राजकीय कारखाने; खान-प्रबंधन; श्रमिक-अधिकार
विदेश-व्यापार	आयात-निर्यात नीति; बंदरगाह-प्रबंधन; जासूसी
मुद्रा-व्यवस्था	पण, माशक, काकणी – सुव्यवस्थित मुद्रा-प्रणाली
बैंकिंग प्रणाली	श्रेष्ठी (Banker); ऋण और ब्याज के नियम
उपभोक्ता संरक्षण	मिलावट और धोखाधड़ी के लिए कठोर दंड

पर्यावरण-नीति	वन-संरक्षण; जल-संचय; भूमि-उपयोग नीति
श्रम-नीति	मजदूरी के नियम; कार्य-समय; अनुबंध-कानून

> कोशमूला दण्डः। कोशेन हि सर्वाणि कार्याणि साधयति।
>
> अकोशे तु राजा शत्रुभिः परिभूयते।।
>
> – अर्थशास्त्र 2.8

(दंड-शक्ति का मूल कोश (राजकोश) है। कोश से ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं। खाली राजकोश वाला राजा शत्रुओं से पराजित होता है।)

6.2.3 धर्म-अर्थ का समन्वय: भारतीय आर्थिक नैतिकता

भारतीय परंपरा में 'अर्थ' सदा 'धर्म' की सीमाओं में रहा है। 'धर्मार्थकाममोक्षाणाम्' – इस क्रम में धर्म सर्वप्रथम और मोक्ष अंतिम है। अर्थ को धर्म के विरुद्ध नहीं कमाना चाहिए – यह भारतीय आर्थिक नैतिकता का सर्वोच्च सिद्धांत है:

> धर्म्यमेव यतेत अर्थं धर्म्याद्वा विजयेत अर्थम्।
>
> धर्मार्थौ यत्र नानुष्टौ न तत्र फलमश्नुते।।
>
> – महाभारत, शांतिपर्व 130.3

(धर्म के मार्ग से ही अर्थ कमाए और धर्म से ही अर्थ का उपयोग करे। जहाँ धर्म और अर्थ दोनों नहीं होते, वहाँ फल नहीं मिलता।)

भारतीय आर्थिक नैतिकता के प्रमुख सिद्धांत:

- अपरिग्रह (Non-Possessiveness): आवश्यकता से अधिक संचय पाप है। जैन और गाँधीवादी अर्थशास्त्र का मूल।

- दातव्यम् (Compulsion to Give): 'देना' धार्मिक कर्तव्य है – अन्नदान, विद्यादान, धनदान।
- न्यायोचित लाभ: व्यापार में उचित लाभ लेना उचित है, अत्यधिक लाभ अनैतिक।
- श्रम का सम्मान: 'कर्म ही पूजा है' – सभी व्यवसायों का आदर।
- ट्रस्टीशिप (Trusteeship): गाँधी का सिद्धांत – धनी व्यक्ति समाज का ट्रस्टी है, स्वामी नहीं।

6.2.4 प्राचीन भारत की आर्थिक समृद्धि: ऐतिहासिक साक्ष्य

प्राचीन और मध्यकालीन भारत की आर्थिक समृद्धि के अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं:

स्रोत / काल	साक्ष्य	आर्थिक महत्त्व
मेगस्थनीज (300 ई.पू.)	'भारत में कोई अकाल नहीं; सभी के पास भोजन है'	कृषि-समृद्धि
रोमन लेखक (1ली शती ई.)	'भारत रोम का सोना खींच लेता है'	व्यापार-अधिशेष
चीनी यात्री ह्वेनत्सांग (7वीं शती)	'भारत में धन की कमी नहीं; व्यापार उन्नत है'	आर्थिक विकास
मार्कोपोलो (13वीं शती)	'भारत विश्व का सर्वाधिक धनी देश है'	वाणिज्यिक शक्ति
अंग्रेज व्यापारी (17वीं शती)	'भारत का मलमल विश्व की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है'	शिल्प-उत्कर्ष
आर्थिक इतिहासकार (आधुनिक)	1700 ई. में भारत का विश्व GDP में हिस्सा 24.4%	ऐतिहासिक वर्चस्व

6.3 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ भारतीय आर्थिक चिंतन में 'अर्थ' _____ के एक अंग के रूप में देखा गया।

□ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कुल _____ अधिकरण और _____ अध्याय हैं।

□ 'कोशमूला दण्डः' का अर्थ है – दंड-शक्ति का मूल _____ है।

□ 1700 ई. में भारत का विश्व GDP में हिस्सा लगभग _____ प्रतिशत था।

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

□ कौटिल्य का अर्थशास्त्र Adam Smith के 'Wealth of Nations' के बाद लिखा गया। (

□ 'अपरिग्रह' का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संचय न करना।
( )

□ रोमन लेखकों ने भारत को विश्व का सर्वाधिक धनी देश बताया था।
( )

□ 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणा महात्मा गाँधी ने दी।
( )

6.4 कृषि: भारतीय आर्थिक जीवन का आधार

6.4.1 भारतीय कृषि का ऐतिहासिक विकास

भारत में कृषि का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, लगभग 7000 ई.पू.) में जौ और गेहूँ की खेती के साक्ष्य मिले हैं – यह विश्व की प्राचीनतम ज्ञात कृषि-बस्तियों में से एक है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता (2600-1900 ई.पू.) में उन्नत नगर-नियोजन के साथ-साथ विकसित कृषि-व्यवस्था भी थी।

काल	कृषि-विकास	प्रमुख विशेषता
मेहरगढ़ (7000 ई.पू.)	गेहूँ, जौ, कपास की खेती	विश्व की प्राचीनतम कृषि बस्ती
सिंधु-सभ्यता (2600 ई.पू.)	धान, गेहूँ, तिल, कपास	नियोजित सिंचाई; अनाज-भंडार
वैदिक काल (1500-600 ई.पू.)	कृषि-सूक्त; हल-यज्ञ; पशुपालन	ऋग्वेद में कृषि के उल्लेख
मौर्य काल (300 ई.पू.)	राजकीय कृषि-फार्म; सिंचाई-विभाग	कौटिल्य का कृषि-प्रबंधन
गुप्त काल (320-550 ई.)	फसल-उत्पादकता; उद्यान-कृषि	भारत का 'सुवर्ण युग'
चोल काल (9वी-13वीं शती)	विशाल नहर-तंत्र; देवदान भूमि	दक्षिण की समृद्ध कृषि
मुगल काल (16वीं-18वीं शती)	जमींदारी; तीन-फसली खेती; निर्यात	भारत की कृषि-सम्पन्नता

6.4.2 कृषि विज्ञान के प्राचीन ग्रंथ

भारत में कृषि को एक शास्त्र का दर्जा दिया गया था। 'कृषिशास्त्र' के अनेक प्राचीन ग्रंथ लिखे गए जो आज भी प्रासंगिक हैं:

ग्रंथ	लेखक / काल / विशेषता
कृषिपराशर	पराशर (500 ई.पू. से 500 ई.); कृषि-विज्ञान का प्राचीनतम ग्रंथ; बीज, मौसम, सिंचाई
वृक्षायुर्वेद	सुरपाल (10वीं शती); वनस्पति-चिकित्सा; वृक्षों का रोग-निदान और उपचार
काश्यपीय कृषिसूक्ति	काश्यप; खेती के व्यावहारिक नियम; उर्वरक और बीज-चयन
विश्ववल्लभ	चक्रपाणि मिश्र (17वीं शती); बाग-बगीचा, औषधीय पौधे, सिंचाई

अर्थशास्त्र (कृषि प्रकरण)	कौटिल्य; राजकीय कृषि-प्रबंधन; भूमि-वर्गीकरण; जल-कर
अग्निपुराण (कृषि-अध्याय)	कृषि-देवता; ऋतु-अनुसार खेती; पशुपालन के नियम
मनुस्मृति (कृषि-विधान)	भूमि-स्वामित्व; किसान के अधिकार; कर-नियम; सिंचाई-अधिकार

कृषिपराशर में वर्षा के पूर्वानुमान, बीजों के चयन और उपचार, हल और बैलों की देखभाल, खेत की जुताई तथा खाद के प्रयोग जैसे विषयों का विस्तृत वर्णन है। सुरपाल के वृक्षायुर्वेद में बीजों को बोने से पहले दूध, घी, शहद आदि से उपचारित करने और 'कुणपजल' जैसे तरल जैविक खाद के निर्माण का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में कृषि केवल परंपरा पर नहीं, बल्कि अवलोकन और अनुभव से विकसित व्यवस्थित ज्ञान पर आधारित थी, जिसकी कई विधियाँ आज की जैविक खेती से मेल खाती हैं।

6.4.3 वैदिक कृषि: अथर्ववेद का कृषि-सूक्त

अथर्ववेद में कृषि को एक पवित्र कर्म माना गया है। 'भूमि-सूक्त' (अथर्ववेद 12.1) में कृषि-भूमि की महत्ता और उसके संरक्षण पर बल दिया गया है:

> सीते वन्दामहे त्वा नमस्यामः त्वा महीम्।
>
> यथा नः सुभगा भूया यथा नः सुफला भूयाः।।
>
> — ऋग्वेद 4.57.6

(हे कृषि-भूमि! हम तुम्हें वंदन करते हैं। तुम हमारे लिए सौभाग्यशाली हो और हमें उत्तम फल देने वाली हो।)

कृषिपराशर में कहा गया है:

> कृषिं परमां विद्यां तथा वार्तां त्रयीमपि।
>
> शस्त्रविद्यां च राजेन्द्र विनैताः किं करिष्यसि।।
>
> – कृषिपराशर

(हे राजेंद्र! कृषि ही परम विद्या है, साथ में वार्ता (व्यापार), वेदत्रयी और शस्त्रविद्या हैं। इनके बिना राज्य क्या करेगा?)

6.4.4 प्राचीन भारत की उन्नत कृषि-प्रणाली

प्राचीन भारत में कृषि केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और नैतिक उद्यम था। कई ऐसी कृषि-पद्धतियाँ प्रचलित थीं जो आज 'Sustainable Agriculture' के रूप में पुनः मान्यता पा रही हैं:

कृषि-पद्धति	विवरण	आधुनिक प्रासंगिकता
फसल-चक्र (Crop Rotation)	एक खेत में बारी-बारी अलग फसलें	भूमि-उर्वरता बनाए रखना
मिश्रित खेती (Inter-cropping)	एक ही खेत में कई फसलें साथ	जैव-विविधता; जोखिम-न्यूनीकरण
जैव-उर्वरक	गोबर, हरी खाद, नीम – रासायनिक उर्वरकों के बिना	Organic Farming
जल-संचय (Water Harvesting)	तालाब, बावड़ी, कूप, नहर	Rainwater Harvesting
बीज-संरक्षण	देशी बीजों का भंडारण; वंश-परंपरा से अगली पीढ़ी को	Seed Bank; Biodiversity

वानिकी-कृषि (Agro-forestry)	खेत के किनारे वृक्ष – फल, छाया, उर्वरता	Agroforestry
पशुपालन-कृषि समन्वय	गाय-बैल; गोबर-खाद; श्रम-साझाकरण	Integrated Farming
ऋतु-अनुसार खेती	खरीफ, रबी, जायद – तीन फसली चक्र	Seasonal Cropping

6.4.5 भूमि-प्रबंधन और किसान-अधिकार

प्राचीन भारत में भूमि-प्रबंधन एक सुव्यवस्थित कानूनी व्यवस्था थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भूमि के प्रकार और उनके उपयोग का विस्तृत विवरण मिलता है:

भूमि का प्रकार	उपयोग और विवरण
स्थल (Highlands)	वर्षा-आधारित खेती; कम सिंचाई; फसल-विविधता
मित्त (Midland)	मध्यम उर्वरता; मिश्रित खेती उपयुक्त
अनूप (Wetlands)	धान की खेती; नदी-तट; बाढ़ नियंत्रण
देवमातृका	वर्षा पर निर्भर; वेदमाता = प्रकृति की कृपा
नदीमातृका	नदी-सिंचाई पर निर्भर; स्थायी उत्पादन
अकृष्ट (Fallow)	उपजाऊ भूमि को आराम; प्राकृतिक पुनर्भरण
सीताभूमि	राजकीय कृषि-फार्म; कौटिल्य का 'Crown Land'

प्राचीन भारत में राज्य को भूमि-राजस्व (भाग) के रूप में उपज का एक अंश मिलता था, जिसे धर्मशास्त्रों और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सामान्यतः छठा भाग बताया गया है, हालाँकि विभिन्न कालों और क्षेत्रों में यह दर बदलती रही। राजा द्वारा ब्राह्मणों, मंदिरों और संस्थाओं को 'अग्रहार' और 'ब्रह्मदेय' के रूप में भूमि-अनुदान दिए जाते थे। कौटिल्य ने अकाल और आपदा के समय किसानों को कर-छूट, बीज और पशुधन देने की व्यवस्था का भी उल्लेख किया है, जो राज्य की कृषक-हितैषी भूमिका को दर्शाता है।

6.5 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- 'कृषिपराशर' ग्रंथ की क्या विशेषता है?
- प्राचीन भारत में 'देवमातृका' और 'नदीमातृका' भूमि में क्या अंतर था?
- मेहरगढ़ का ऐतिहासिक कृषि-महत्त्व क्या है?
- 'सीताभूमि' क्या थी? कौटिल्य ने इसे क्यों महत्त्व दिया?

6.6 भारतीय शिल्प एवं उद्योग: विश्व-प्रसिद्ध परंपरा

6.6.1 भारतीय शिल्प-उद्योग का वैश्विक महत्त्व

प्राचीन और मध्यकालीन भारत विश्व का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र था। यहाँ के शिल्पी इतने कुशल थे कि उनके उत्पाद – मलमल, मसाले, रत्नाभूषण, इस्पात – विश्व के हर कोने में माँग रखते थे। भारतीय शिल्प-उद्योग की कुछ मुख्य विशेषताएँ थीं:

- श्रेणी-व्यवस्था (Guild System): व्यावसायिक संघ जो उत्पाद की गुणवत्ता, मूल्य और श्रमिक-अधिकारों की रक्षा करते थे।
- परिवार-आधारित शिल्प: पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित ज्ञान और कौशल।
- मंदिर-केंद्रित उत्पादन: मंदिर आर्थिक केंद्र थे जहाँ शिल्पी काम करते थे।
- प्राकृतिक सामग्री: कपास, रेशम, धातु, मिट्टी, पत्थर – प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग।

6.6.2 वस्त्र-उद्योग: भारत की सर्वाधिक प्रसिद्ध औद्योगिक शाखा

भारतीय वस्त्र-उद्योग विश्व में सर्वाधिक प्रसिद्ध था। यहाँ के वस्त्र न केवल सुंदर थे, बल्कि उनकी तकनीक इतनी उन्नत थी कि आज भी उनकी नकल नहीं हो पाती:

वस्त्र	केंद्र	विशेषता	विश्व-बाजार

ढाका का मलमल (मसलिन)	ढाका (बांग्लादेश)	300+ धागे/इंच; 'बुना हुआ वायु'; पानी में अदृश्य	रोम, मिस्र, ग्रीस में लोकप्रिय
बनारसी सिल्क	वाराणसी	सोने-चाँदी के धागों से बुनाई; जरी	एशिया, अरब, यूरोप
कांजीवरम् सिल्क	कांचीपुरम्, तमिलनाडु	भारी बुनाई; मंदिर-वस्त्र	दक्षिण-पूर्व एशिया
कोटा डोरिया	राजस्थान	कॉटन-सिल्क मिश्रण; ग्रिड पैटर्न	मुगल दरबार
पटोला	गुजरात (पाटन)	डबल-इकत; दोनों तरफ एक जैसा	इंडोनेशिया, जापान
कलमकारी	आंध्र प्रदेश	हाथ से बनाई; प्राकृतिक रंग	फारस, अरब देश
चंदेरी	मध्य प्रदेश	शुद्ध सिल्क; पारदर्शी; बेल-बूटे	मुगल राजघराना

रोमन सम्राट ऑगस्टस (1ली शती ई.) ने भारतीय मलमल के बारे में कहा था:

> India draws away our gold with her silks; India is rich beyond compare.
>
> — Pliny the Elder, Natural History
>
> — प्लिनी द एल्डर, प्राकृतिक इतिहास (1ली शती ई.)

6.6.3 धातु-उद्योग: विश्व-श्रेष्ठ भारतीय कारीगरी

भारतीय धातु-कारीगरी विश्व-प्रसिद्ध थी। लोहा, इस्पात, ताँबा, काँसा, सोना, चाँदी — सभी धातुओं में भारतीय शिल्पियों ने अद्वितीय उपलब्धियाँ प्राप्त कीं:

धातु-उत्पाद	विशेषता	ऐतिहासिक प्रमाण
वुट्ज़ इस्पात (Wootz Steel)	विश्व का सर्वश्रेष्ठ इस्पात; Damascus Steel का आधार	3री शती ई. से निर्यात; रोम, फारस में माँग
दिल्ली का लौह-स्तंभ	1600 वर्ष बाद भी जंग नहीं; 98% लोहा	उन्नत धातु-विज्ञान का प्रमाण
काँसे की मूर्तियाँ (चोल)	नटराज; विशाल मंदिर-मूर्तियाँ	Lost Wax Process की महारत
जस्ता गलाने की तकनीक	जावर (राजस्थान); 9वीं शती	यूरोप से 400 वर्ष पहले
भारतीय आभूषण	सोने-चाँदी की बारीक कारीगरी; कुंदन, मीनाकारी	मुगल काल में विश्व-प्रसिद्ध
घंटे और वाद्य-यंत्र	काँसे, ताँबे के धार्मिक यंत्र	मंदिरों और निर्यात में उपयोग

6.6.4 मृत्तिका, काष्ठ और रत्न-उद्योग

भारतीय मृत्तिका (मिट्टी का काम), काष्ठ (लकड़ी का काम) और रत्न-उद्योग भी विश्व में अतुलनीय थे:

- मृत्तिका उद्योग: सिंधु-सभ्यता की पकी ईंटें आज भी प्रयोगशाला-परीक्षण में खरी उतरती हैं। जयपुर का 'ब्लू पॉटरी' और कुम्हारों की परंपरा अनूठी है।
- काष्ठ-शिल्प: केरल का नौका-निर्माण, राजस्थान का काष्ठ-जड़ाव, कश्मीर का कालीन-उद्योग – विश्व में बेमिसाल।
- रत्न-उद्योग: गोलकुंडा के हीरे, बीजापुर के नीलम, भारतीय माणिक्य और पन्ने – विश्व के राजघरानों में माँग।

- हाथी-दाँत शिल्प: मुर्शिदाबाद और मैसूर का हाथी-दाँत का काम – बारीकी में अद्वितीय।
- चर्म-उद्योग: जूते, ढाल, वाद्य-यंत्र – जोधपुर और आगरे का चर्म-उद्योग।

6.6.5 श्रेणी-व्यवस्था: भारत का Guild System

'श्रेणी' (Guild) भारतीय व्यावसायिक जीवन की एक अनूठी संस्था थी। यह एक ही व्यवसाय के कारीगरों और व्यापारियों का संगठन था जो अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करता था:

श्रेणी की विशेषता	विवरण
श्रेष्ठी (गिल्डमास्टर)	श्रेणी का प्रमुख; अनुभवी और प्रतिष्ठित व्यापारी
गुणवत्ता नियंत्रण	उत्पाद की न्यूनतम गुणवत्ता सुनिश्चित करना
मूल्य-निर्धारण	बाजार में मूल्य की स्थिरता; अत्यधिक शोषण रोकना
श्रमिक-संरक्षण	न्यूनतम मजदूरी; कार्य-समय; शिक्षुता की व्यवस्था
विवाद-निपटारा	सदस्यों के बीच विवादों का आंतरिक समाधान
सामाजिक कार्य	मंदिर-निर्माण, तालाब खुदवाना, दान – सामाजिक उत्तरदायित्व
सरकार से संबंध	राजा को सलाह; कर-संग्रह में सहायता
अंतर-नगर संबंध	विभिन्न नगरों की श्रेणियों के बीच व्यापार-संधियाँ

6.7 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ (वस्त्र)	स्तम्भ-ब (उत्पत्ति-स्थान)
ढाका का मलमल	आंध्र प्रदेश
बनारसी सिल्क	गुजरात (पाटन)
पटोला	ढाका
कलमकारी	राजस्थान
कोटा डोरिया	वाराणसी

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

- □ 'वुट्ज़ इस्पात' क्या था और यह क्यों प्रसिद्ध था?
- □ भारतीय श्रेणी-व्यवस्था में 'श्रेष्ठी' की क्या भूमिका थी?
- □ दिल्ली के लौह-स्तंभ की क्या विशेषता है?

6.8 भारतीय व्यापार-व्यवस्था: प्राचीन से मध्यकाल तक

6.8.1 आंतरिक व्यापार की संरचना

प्राचीन भारत में आंतरिक व्यापार अत्यंत विकसित था। सार्थवाह (Caravan merchants), नगर-महाजन और ग्राम-व्यापारी मिलकर एक सुदृढ़ व्यापार-नेटवर्क का निर्माण करते थे:

व्यापार-इकाई	विवरण	भूमिका
सार्थवाह (Caravan Leader)	माल ले जाने वाले काफिले का नेता	दूरस्थ व्यापार; मार्ग-सुरक्षा
श्रेष्ठी/सेठ	नगर का प्रमुख बनिया; साहूकार	वित्त-प्रबंधन; ऋण-व्यवस्था
वणिक (Merchant)	स्थानीय और अंतर-नगर व्यापारी	वस्तु-विनिमय; थोक व्यापार
महाजन (Money-lender)	ऋण देने वाला; ब्याज पर पैसा	ग्रामीण ऋण-प्रणाली
आपणिक (Shopkeeper)	नगर में दुकानदार; खुदरा विक्रेता	उपभोक्ता को सीधी बिक्री
दलाल (Broker)	क्रेता-विक्रेता को जोड़ने वाला	बाजार-सुविधा

आंतरिक व्यापार के लिए प्राचीन भारत में दो प्रमुख राजमार्ग थे --- उत्तरापथ, जो तक्षशिला से मथुरा और पाटलिपुत्र होते हुए ताम्रलिप्ति तक जाता था, और दक्षिणापथ, जो उत्तर भारत को प्रतिष्ठान (पैठण) जैसे नगरों के माध्यम से दक्षिण से जोड़ता था। इन मार्गों पर सार्थवाह दल बनाकर यात्रा करते थे ताकि चोर-डाकुओं से सुरक्षा हो सके। 'हाट' (साप्ताहिक बाजार), मेले और नगर-बाजार स्थानीय व्यापार के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ कृषि-उपज, वस्त्र, धातु-पात्र और नमक जैसी वस्तुओं का विनिमय होता था।

6.8.2 प्राचीन भारत की मुद्रा-प्रणाली

भारत में मुद्रा का प्रयोग अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वेद में 'निष्क' का उल्लेख मिलता है जो एक स्वर्ण-आभूषण था जिसका उपयोग विनिमय में होता था। छठी शती ई.पू. तक भारत में सिक्के प्रचलित हो गए थे:

काल	मुद्रा	धातु	विशेषता
वैदिक काल	निष्क, शतमान	सोना, चाँदी	आभूषण के रूप में; तौल से मूल्य

महाजनपद काल (600 ई.पू.)	पण, माशक, काकणी	चाँदी, ताँबा	Punch-marked Coins; व्यापार-प्रसार
मौर्य काल (300 ई.पू.)	पण (कर्षापण), रूपक	चाँदी	कौटिल्य का मुद्रा-विज्ञान
गुप्त काल (320-550 ई.)	दीनार, रूपक	सोना, चाँदी	विश्व की सर्वश्रेष्ठ मुद्राएँ
दक्षिण भारत	काशु, पण, तंगम	सोना, ताँबा	चोल; पल्लव; विजयनगर
मुगल काल (16वी-18वीं शती)	रुपया, दाम, जीतल	चाँदी, ताँबा	आधुनिक 'रुपये' का उद्गम

6.8.3 प्राचीन भारतीय बैंकिंग और वित्त-व्यवस्था

आधुनिक बैंकिंग से बहुत पहले भारत में एक सुव्यवस्थित वित्त-प्रणाली थी। 'श्रेष्ठी' (बैंकर), 'हुंडी' (Bill of Exchange) और 'ऋण-पत्र' (Bond) जैसी अवधारणाएँ भारत में सदियों पहले विकसित हो गई थीं:

- हुंडी (Hundi/Bill of Exchange): एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन हस्तांतरण का साधन; आधुनिक Bank Draft का पूर्वगामी।
- 'आदेश' (Letter of Credit): एक नगर का बैंकर दूसरे नगर में भुगतान की गारंटी देता था।
- ऋण और ब्याज: कौटिल्य ने ब्याज-दरों के नियम बताए; मनुस्मृति में अधिकतम ब्याज-सीमा।
- बीमा जैसी व्यवस्था: समुद्री व्यापार में जोखिम-साझाकरण की व्यवस्था — व्यापारी-संघ में।
- निधि (Trust Fund): धार्मिक और सामाजिक कार्यों के लिए निधि-व्यवस्था।

6.9 समुद्री वाणिज्य: भारत का विश्व-व्यापार

6.9.1 भारतीय समुद्री परंपरा का उद्‌गम

भारत की समुद्री परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितनी उसकी सभ्यता। लोथल (गुजरात, लगभग 2400 ई.पू.) में विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड मिला है – यह सिद्‌ध करता है कि भारत 4500 वर्ष पहले समुद्री व्यापार कर रहा था। अथर्ववेद में समुद्री यात्रा का वर्णन मिलता है:

> समुद्राय त्वा क्षिणोतु समुद्राय देवस्य सवितुः प्रसवे।
>
> आप ओषधयः शाम्यन्तु नः।।
>
> – अथर्ववेद

(हे समुद्र! देव सविता की प्रेरणा से जल प्रसन्न हो। जल और ओषधियाँ हमारे लिए शांतिकारक हों।)

भारतीय समुद्री परंपरा के मुख्य चरण:

काल	समुद्री व्यापार की विशेषता
सिंधु-सभ्यता (2600-1900 ई.पू.)	लोथल डॉकयार्ड; मेसोपोटामिया से व्यापार; सील और मुद्राएँ
वैदिक काल (1500-600 ई.पू.)	अरब सागर में व्यापारिक यात्राएँ; 'समुद्र-यात्रा' का उल्लेख
मौर्य-काल (300-185 ई.पू.)	अशोक के समय श्रीलंका, म्यांमार तक व्यापार
सातवाहन (230 ई.पू.-220 ई.)	दक्षिण-पूर्व एशिया, रोम से व्यापार; पश्चिमी बंदरगाह
गुप्त काल (320-550 ई.)	समुद्री व्यापार का 'स्वर्ण युग'; इंडोनेशिया, चीन तक
चोल साम्राज्य (9-13वीं शती)	'चोल नौसेना' – श्रीलंका, मलाया, सुमात्रा पर नियंत्रण
विजयनगर (1336-1646 ई.)	कालीकट बंदरगाह; अरबी, चीनी, यूरोपीय व्यापारी
मुगल काल (1526-1707 ई.)	सूरत बंदरगाह; ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन

6.9.2 प्राचीन भारतीय बंदरगाह: विश्व-व्यापार के केंद्र

भारत के पश्चिमी और पूर्वी दोनों तटों पर विश्व-प्रसिद्ध बंदरगाह थे जो विश्व-व्यापार के प्रमुख केंद्र थे:

बंदरगाह	स्थान / काल	व्यापारिक महत्त्व
लोथल	गुजरात (2400 ई.पू.)	विश्व का प्राचीनतम डॉकयार्ड; मेसोपोटामिया से व्यापार
भृगुकच्छ (भरूच)	गुजरात	रोम, अरब, ग्रीस से व्यापार; मसाले, वस्त्र निर्यात
मुजिरिस (कोडुंगल्लूर)	केरल	रोमन व्यापारियों का केंद्र; मसाले; रत्न
कावेरीपट्टनम	तमिलनाडु	चोल काल; चीन, दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापार
ताम्रलिप्ति (तमलुक)	पश्चिम बंगाल	बर्मा, श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया
कालीकट (कोझिकोड)	केरल	अरब व्यापारियों का केंद्र; वास्को-दि-गामा 1498 ई.
सूरत	गुजरात (मुगल काल)	यूरोपीय व्यापारियों का प्रमुख केंद्र; मुगल साम्राज्य का मुख्य बंदरगाह
मसुलीपट्टनम	आंध्र प्रदेश	डच, अंग्रेज, फ्रेंच व्यापार; पूर्व का प्रमुख बंदरगाह

6.9.3 भारत के व्यापारिक मार्ग: समुद्री और स्थलीय

भारत दो प्रमुख प्राचीन व्यापारिक नेटवर्क का केंद्र था – 'सिल्क रोड' (स्थलीय) और 'मसाला-मार्ग' (समुद्री):

भारत की भौगोलिक स्थिति ने उसे स्थल और समुद्र दोनों मार्गों के संगम पर स्थापित किया। स्थल-मार्गों में उत्तरापथ पश्चिमोत्तर में तक्षशिला से जुड़कर मध्य एशिया और फारस की ओर जाने वाले मार्गों से मिलता था। समुद्री मार्गों में पश्चिमी तट के भड़ौच (भरुकच्छ), सोपारा

और मुजिरिस तथा पूर्वी तट के ताम्रलिप्ति, अरिकामेडु और कावेरीपट्टनम जैसे बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केंद्र थे। इन्हीं मार्गों से भारत का मसाला, वस्त्र, रत्न और हाथी-दाँत रोम, अरब, दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन तक पहुँचता था।

(अ) सिल्क रोड (Silk Road) पर भारत की भूमिका

सिल्क रोड केवल चीन और यूरोप को जोड़ने वाला मार्ग नहीं था – भारत इसका एक महत्वपूर्ण नोड था। तक्षशिला, मथुरा, पाटलिपुत्र – ये सभी सिल्क रोड पर प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे:

- तक्षशिला (गांधार) – मध्य एशिया, फारस, रोम से व्यापारिक संपर्क का प्रमुख केंद्र।
- पाटलिपुत्र – उत्तर भारत का वितरण-केंद्र; सभी दिशाओं से व्यापारी आते थे।
- भारतीय मसाले, कपास, लोहा, रत्न – सिल्क रोड पर सर्वाधिक माँग में।
- बौद्ध व्यापारी – धर्म और व्यापार दोनों लेकर मध्य एशिया और चीन तक गए।

(ब) हिंद महासागर व्यापार (Indian Ocean Trade)

हिंद महासागर भारत का 'घर' था – भारतीय व्यापारी और नाविक इस सागर के 'स्वामी' थे। पश्चिम में अरब और अफ्रीका से, और पूर्व में दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन तक – भारत का समुद्री व्यापार-जाल फैला था:

व्यापारिक दिशा	प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ
पश्चिम – अरब, फारस	मसाले, वस्त्र, रत्न → घोड़े, सोना, खजूर
उत्तर-पश्चिम – रोम, ग्रीस	मलमल, काली मिर्च, हाथी-दाँत → सोना, काँच
पूर्व – दक्षिण-पूर्व एशिया	कपड़ा, धर्म, संस्कृति → मसाले, टिन
दूर पूर्व – चीन, जापान	कपास, रत्न, बौद्ध ग्रंथ → रेशम, चीनी मिट्टी
दक्षिण – श्रीलंका	चावल, वस्त्र, धर्म → मोती, रत्न, दालचीनी
पश्चिम – अफ्रीका	भारतीय व्यापारी (ज़ंजीबार तक)

6.9.4 मसाला-व्यापार: भारत की 'काली सोना' परंपरा

भारतीय मसाले – काली मिर्च, इलायची, जायफल, लौंग, दालचीनी – मध्यकालीन विश्व में सोने से अधिक मूल्यवान थे। इन्हीं 'काले सोने' (Black Gold = काली मिर्च) की तलाश में यूरोपीय नाविक भारत आए और यही वह इतिहास है जिसने पूरी दुनिया का नक्शा बदल दिया:

मसाला	उत्पत्ति-क्षेत्र
काली मिर्च (Black Pepper)	केरल (मलाबार तट)
इलायची (Cardamom)	केरल, कर्नाटक
जायफल (Nutmeg)	बांदा द्वीप (इंडोनेशिया – भारतीय प्रभाव)
लौंग (Cloves)	मलूकु (इंडोनेशिया – भारतीय व्यापारी)
दालचीनी (Cinnamon)	श्रीलंका
हल्दी (Turmeric)	भारत (सर्वत्र)

6.9.5 चोल नौसेना और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय प्रसार

चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी) ने विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली प्राचीन नौ-सेनाओं में से एक का निर्माण किया था। राजेंद्र चोल प्रथम (1014-1044 ई.) ने श्रीविजय (सुमात्रा) तक समुद्री अभियान किया था:

- 'कटाहम्' (केडाह, मलेशिया), 'श्रीविजय' (सुमात्रा) पर चोल नौसेना का आधिपत्य।
- 'नगपट्टनम', 'कावेरीपट्टनम' – विशाल नौसैनिक बंदरगाह।
- अंगकोर वाट (कम्बोडिया), प्रम्बानन (इंडोनेशिया) – भारतीय सांस्कृतिक प्रसार के स्मारक।
- 'नानेगट' और 'श्रेणी' – व्यापारी-संघ जो समुद्री व्यापार नियंत्रित करते थे।

चोल-काल में व्यापारी-संघों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी। ऐय्यावोले-500 (ऐहोले के पाँच सौ स्वामी), मणिग्रामम् और नानादेशी जैसे संघ दक्षिण भारत से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक व्यापार करते थे। सुमात्रा के लोबो तुआ (बारूस) से प्राप्त 1088 ई. के तमिल अभिलेख में तमिल व्यापारी-संघ का उल्लेख मिलता है। राजेंद्र चोल प्रथम के श्रीविजय-अभियान (लगभग 1025 ई.) को प्रायः समुद्री व्यापार-मार्गों की सुरक्षा और व्यापारिक हितों से जोड़कर देखा जाता है।

6.10 अपनी प्रगति जाँचें – 4 (Check Your Progress – 4)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड _____ में पाया गया जो लगभग _____ ईसा पूर्व का है।

□ 'काली मिर्च' को _____ कहा जाता था और रोम में इसे _____ से तौला जाता था।

□ राजेंद्र चोल प्रथम ने _____ तक समुद्री अभियान किया था।

□ वास्को-दि-गामा _____ ई. में भारत के _____ बंदरगाह पर पहुँचा था।

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

□ हुंडी क्या थी? इसे आधुनिक बैंकिंग से कैसे जोड़ा जा सकता है?

□ मसाला-व्यापार ने विश्व-इतिहास को कैसे प्रभावित किया?

□ भारतीय व्यापार-नेटवर्क में 'सार्थवाह' की क्या भूमिका थी?

6.11 वैश्विक व्यापार में भारत की भूमिका एवं आर्थिक दर्शन

6.11.1 रोम और भारत: प्रथम वैश्विक व्यापार-संबंध

रोमन साम्राज्य और भारत के बीच व्यापारिक संबंध इतिहास के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आर्थिक संबंधों में से एक थे। रोमन लेखक प्लिनी द एल्डर (1ली शती ई.) ने लिखा था कि भारत

प्रतिवर्ष रोम से 50 मिलियन सेस्टर्शियस (सोने के सिक्के) खींच लेता है। भारत से रोम में जाने वाली वस्तुएँ थीं: काली मिर्च, सूती वस्त्र, रेशम, हाथी-दाँत, रत्न, नील (Indigo)।

रोम से भारत में आने वाली वस्तुएँ थीं: सोना (Gold), चाँदी, काँच, शराब (Wine), जैतून का तेल।

यह व्यापार-संतुलन भारत के पक्ष में था – अर्थात् भारत निर्यात अधिक करता था, आयात कम। यही कारण है कि भारत में प्राचीन रोमन सोने के सिक्के (Aureus) बड़ी मात्रा में पाए गए हैं।

6.11.2 अरब-भारत व्यापार संबंध

अरब व्यापारियों और भारत के बीच व्यापारिक संबंध हजारों वर्षों से थे। केरल के 'मापिला' (मुस्लिम) समुदाय का निर्माण इसी व्यापारिक संपर्क का परिणाम है। अरब व्यापारियों ने भारतीय गणित (शून्य और दशमलव), खगोलशास्त्र और दवाइयाँ यूरोप तक पहुँचाईं:

- भारतीय मसाले और वस्त्र – अरब बाजारों में भारी माँग।
- अरबी घोड़े – भारत में उच्च माँग।
- भारतीय गणित – 'अरबी अंक' वास्तव में भारतीय हैं जो अरबों के माध्यम से यूरोप पहुँचे।
- सूफी परंपरा – अरब-भारत सांस्कृतिक संपर्क का आध्यात्मिक परिणाम।

भारतीय अंकों और दशमलव पद्धति के प्रसार में अरबों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। ब्रह्मगुप्त के ग्रंथों के अरबी अनुवाद (आठवीं शताब्दी) बगदाद में हुए, तथा अल-ख्वारिज़्मी (लगभग 9वीं शताब्दी) ने भारतीय अंक-प्रणाली पर कार्य किया, जिसके लैटिन अनुवाद से यह पद्धति यूरोप पहुँची। इस प्रकार भारत-अरब व्यापार केवल वस्तुओं का नहीं, बल्कि ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान का भी माध्यम बना।

6.11.3 भारतीय आर्थिक दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता

भारतीय आर्थिक चिंतन आज की वैश्विक चुनौतियों के समाधान में अत्यंत प्रासंगिक है:

भारतीय अवधारणा	आधुनिक प्रासंगिकता
अपरिग्रह (Non-Possessiveness)	Sustainable Consumption; Carbon Footprint कम करना
धर्म-अर्थ समन्वय	ESG (Environmental, Social, Governance) निवेश
ट्रस्टीशिप	Corporate Social Responsibility (CSR)
दान-परंपरा	Philanthropy; Impact Investing
स्वदेशी	Local Sourcing; Circular Economy; 'Vocal for Local'
श्रेणी-व्यवस्था	Trade Unions; Professional Associations; Self-Help Groups
कृषि-ज्ञान	Organic Farming; Zero Budget Natural Farming
समुद्री व्यापार-नीति	India's Maritime Vision 2030; SAGARMALA योजना

6.11.4 आत्मनिर्भर भारत और प्राचीन आर्थिक दर्शन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'आत्मनिर्भर भारत' पहल (2020) प्राचीन भारतीय 'स्वदेशी' और 'ग्राम-स्वराज' की अवधारणाओं का आधुनिक रूपांतर है:

- 'मेक इन इंडिया' – कौटिल्य के स्थानीय उद्योग-संरक्षण की नीति का आधुनिक रूप।
- 'वोकल फॉर लोकल' – गाँधी के स्वदेशी आंदोलन की प्रेरणा।
- 'डिजिटल इंडिया' – प्राचीन 'श्रेणी' की डिजिटल अभिव्यक्ति।

- 'SAGARMALA' – चोल नौसेना और प्राचीन समुद्री परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास।
- 'PM-KISAN' और 'MSP' – प्राचीन किसान-संरक्षण नीति का आधुनिक रूप।

6.12 सारांश (Summary)

इस अध्याय में भारतीय आर्थिक चिंतन, कृषि, उद्योग, व्यापार और समुद्री वाणिज्य का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. भारतीय 'अर्थ' की अवधारणा: पाश्चात्य 'Economics' से भिन्न – धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के चतुर्दोष में 'अर्थ' की व्यवस्था; नैतिक सीमाओं में आर्थिक गतिविधि।
2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र: विश्व का प्रथम व्यवस्थित आर्थिक ग्रंथ (300 ई.पू.); Adam Smith से 2000 वर्ष पूर्व; कर, व्यापार, उद्योग, कृषि, श्रम – सभी का विवेचन।
3. भारत की ऐतिहासिक समृद्धि: 1700 ई. तक विश्व GDP में 24.4% हिस्सा – एक समृद्ध कृषि, शिल्प और व्यापार-परंपरा का परिणाम।
4. कृषि-विरासत: मेहरगढ़ (7000 ई.पू.) से आधुनिक काल तक; कृषिपराशर, वृक्षायुर्वेद जैसे ग्रंथ; फसल-चक्र, जैव-उर्वरक, जल-संचय – टिकाऊ कृषि की प्राचीन परंपरा।
5. वस्त्र-उद्योग: ढाका का मलमल (300 धागे/इंच), बनारसी सिल्क, पटोला – भारतीय वस्त्र विश्व में सर्वोच्च माँग में थे।
6. धातु-उद्योग: वुट्ज़ इस्पात, दिल्ली का जंग-रहित लौह-स्तंभ, चोल काँस्य-मूर्तियाँ – भारतीय धातु-विज्ञान विश्व-श्रेष्ठ था।
7. श्रेणी-व्यवस्था: भारत का प्राचीन Guild System – गुणवत्ता, मूल्य और श्रमिक-अधिकारों की रक्षा करने वाली व्यावसायिक संस्था।
8. समुद्री व्यापार: लोथल (2400 ई.पू.) से चोल नौसेना (11वीं शती) तक; हिंद महासागर पर भारत का वर्चस्व; मसाला-व्यापार ने विश्व-इतिहास बदला।

9. वैश्विक व्यापार-संबंध: रोम, अरब, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन – भारत विश्व-व्यापार का केंद्र था।
10. समकालीन प्रासंगिकता: 'अपरिग्रह', 'स्वदेशी', 'ट्रस्टीशिप' – ये प्राचीन अवधारणाएँ आज ESG, CSR, Sustainable Development के नाम से वैश्विक स्तर पर स्वीकृत हैं।

6.13 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
अर्थ	धन, सम्पत्ति, जीवन-यापन के साधन; पुरुषार्थ-चतुष्टय का दूसरा तत्त्व
कौटिल्य/चाणक्य	विष्णुगुप्त (350-283 ई.पू.); मौर्य साम्राज्य के महामंत्री; अर्थशास्त्र के रचयिता
अपरिग्रह	आवश्यकता से अधिक संचय न करना; जैन और गाँधीवादी अर्थशास्त्र का मूल सिद्धांत
ट्रस्टीशिप	गाँधी का सिद्धांत: धनी व्यक्ति समाज का ट्रस्टी है; धन उसका नहीं, समाज का है
श्रेणी (Guild)	समान व्यवसाय के लोगों का संगठन; गुणवत्ता, मूल्य और श्रमिक-संरक्षण
श्रेष्ठी	श्रेणी का प्रमुख; बैंकर या प्रमुख व्यापारी; आधुनिक 'सेठ' का उद्गम
सार्थवाह	लंबे व्यापारिक काफिले का नेता; दूरस्थ व्यापार का संचालक
हुंडी	प्राचीन भारतीय 'Bill of Exchange'; एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन-हस्तांतरण का साधन
कृषिपराशर	पराशर-रचित कृषि-विज्ञान का प्राचीनतम ग्रंथ; बीज, मौसम, सिंचाई का वैज्ञानिक विवेचन

वुट्ज़ इस्पात (Wootz Steel)	विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राचीन इस्पात; Damascus Steel का आधार; भारत से निर्यात
लोथल	गुजरात का सिंधु-सभ्यता स्थल (2400 ई.पू.); विश्व का प्राचीनतम डॉकयार्ड
सिल्क रोड	चीन-रोम को जोड़ने वाला प्राचीन व्यापार-मार्ग; भारत इसका महत्त्वपूर्ण नोड था
मसाला-व्यापार	काली मिर्च, इलायची, लौंग आदि का भारत से वैश्विक निर्यात; यूरोपीय अन्वेषण का कारण
चोल नौसेना	चोल साम्राज्य की शक्तिशाली समुद्री सेना; श्रीविजय अभियान (11वीं शती)
स्वदेशी	अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग; गाँधी का आर्थिक आंदोलन; 'Vocal for Local'
आत्मनिर्भर भारत	2020 में प्रारम्भ पहल; स्थानीय उत्पादन और आत्मनिर्भरता; प्राचीन स्वदेशी का आधुनिक रूप
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति; भारतीय आर्थिक परंपरा को शिक्षा में समाहित करने का प्रयास

6.14 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. कौटिल्य के अर्थशास्त्र की विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए। इसे आधुनिक अर्थशास्त्र से तुलना करते हुए इसकी प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।
2. प्राचीन भारत की कृषि-परंपरा का विस्तृत विवेचन कीजिए। भारतीय कृषि-ग्रंथों और कृषि-पद्धतियों की आधुनिक 'Sustainable Agriculture' से तुलना कीजिए।

3. भारत की समुद्री व्यापार परंपरा का विस्तार से वर्णन कीजिए। मसाला-व्यापार ने विश्व-इतिहास को किस प्रकार प्रभावित किया?
4. भारतीय शिल्प-उद्योग की प्रमुख शाखाओं — वस्त्र, धातु, रत्न — का वर्णन कीजिए। श्रेणी-व्यवस्था के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. भारतीय 'अर्थ' की अवधारणा और पाश्चात्य 'Economics' में क्या मूल अंतर है?
2. 'अपरिग्रह' और 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणाएँ क्या हैं?
3. ढाका के मलमल की क्या विशेषता थी और यह विश्व में क्यों प्रसिद्ध था?
4. लोथल का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है?
5. हुंडी प्रणाली क्या थी और यह आधुनिक बैंकिंग से कैसे संबंधित है?
6. 'स्वदेशी' और 'आत्मनिर्भर भारत' के बीच क्या संबंध है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

1. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कितने अधिकरण हैं? (अ) 10 (ब) 12 (स) 15 (द) 18
2. 'ढाका का मलमल' किस विशेषता के लिए प्रसिद्ध था? (अ) मजबूती (ब) 300+ धागे/इंच; बेहद बारीक (स) सस्ता दाम (द) रंगीन डिजाइन
3. विश्व का प्राचीनतम डॉकयार्ड कहाँ पाया गया? (अ) मोहनजोदड़ो (ब) हड़प्पा (स) लोथल (द) धोलावीरा

4. 'हुंडी' का आधुनिक समकक्ष क्या है? (अ) सोना (ब) Bill of Exchange / Bank Draft (स) आभूषण (द) भूमि-पत्र
5. वास्को-दि-गामा भारत में किस बंदरगाह पर पहुँचा था? (अ) मुम्बई (ब) सूरत (स) कालीकट (द) पुदुच्चेरी
6. भारतीय 'वुट्ज़ इस्पात' किस पश्चिमी इस्पात का आधार बना? (अ) Toledo Steel (ब) Damascus Steel (स) Sheffield Steel (द) Pittsburgh Steel
7. 1700 ई. में भारत का विश्व GDP में हिस्सा लगभग कितना था? (अ) 10% (ब) 15% (स) 24% (द) 35%

6.15 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

6.3 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. भारतीय आर्थिक चिंतन में 'अर्थ' को 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' के एक अंग के रूप में देखा गया।
2. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण और 150 अध्याय हैं।
3. 'कोशमूला दण्डः' का अर्थ है – दंड-शक्ति का मूल 'राजकोश (कोश)' है।
4. 1700 ई. में भारत का विश्व GDP में हिस्सा लगभग 24.4% था।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – कौटिल्य का अर्थशास्त्र Adam Smith से लगभग 2000 वर्ष पूर्व (300 ई.पू.) लिखा गया।

2. सही (✓) – 'अपरिग्रह' का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संचय न करना।
3. सही (✓) – रोमन लेखकों ने भारत की असाधारण समृद्धि का उल्लेख किया।
4. सही (✓) – 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणा महात्मा गाँधी ने दी।

6.5 के उत्तर:

1. कृषिपराशर: पराशर-रचित यह कृषि-विज्ञान का प्राचीनतम ग्रंथ है जिसमें बीज-चयन, मौसम-पूर्वानुमान, सिंचाई और फसल-प्रबंधन का विस्तृत विवेचन है।
2. देवमातृका: वर्षा पर आश्रित भूमि। नदीमातृका: नदी-सिंचाई पर आश्रित भूमि जो अधिक स्थायी उत्पादक होती है।
3. मेहरगढ़ (7000 ई.पू.): विश्व की प्राचीनतम ज्ञात कृषि-बस्तियों में से एक; यहाँ गेहूँ, जौ और कपास की खेती के साक्ष्य मिले हैं।
4. सीताभूमि: राजकीय स्वामित्व की कृषि-भूमि जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'Crown Land' के रूप में वर्णित है; इसकी आय सीधे राजकोश में जाती थी।

6.7 के उत्तर (सही मिलान):

वस्त्र	सही उत्पत्ति-स्थान
ढाका का मलमल	ढाका (सही)
बनारसी सिल्क	वाराणसी (सही)
पटोला	गुजरात/पाटन (सही)
कलमकारी	आंध्र प्रदेश (सही)
कोटा डोरिया	राजस्थान (सही)

1. वुट्ज़ इस्पात: यह भारत का विशेष इस्पात था जो अत्यंत मजबूत और लचीला होता था। यह 'Damascus Steel' का आधार था और विश्व में सर्वाधिक माँग में था।
2. 'श्रेष्ठी' की भूमिका: श्रेणी का प्रमुख था जो बैंकर, उद्यमी और व्यापारी-नेता के रूप में कार्य करता था; उत्पाद की गुणवत्ता और मूल्य सुनिश्चित करता था।
3. दिल्ली का लौह-स्तंभ: लगभग 1600 वर्ष पुराना होने के बाद भी इस पर जंग नहीं लगी – यह भारतीय धातु-विज्ञान की अद्वितीय उपलब्धि का प्रमाण है।

6.10 के उत्तर:

1. विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड लोथल (गुजरात) में पाया गया जो लगभग 2400 ईसा पूर्व का है।
2. 'काली मिर्च' को 'काला सोना (Black Gold)' कहा जाता था और रोम में इसे 'सोने' से तौला जाता था।
3. राजेंद्र चोल प्रथम ने श्रीविजय (सुमात्रा, इंडोनेशिया) तक समुद्री अभियान किया था।
4. वास्को-दि-गामा 1498 ई. में भारत के कालीकट (कोझिकोड) बंदरगाह पर पहुँचा था।
5. हुंडी: प्राचीन भारत की Bill of Exchange प्रणाली। एक नगर का व्यापारी दूसरे नगर में भुगतान की गारंटी 'हुंडी' के माध्यम से देता था – यह आधुनिक Bank Draft का पूर्वगामी है।
6. मसाला-व्यापार का प्रभाव: भारतीय मसाले इतने मूल्यवान थे कि यूरोपीय देशों ने सीधा व्यापार-मार्ग खोजने की कोशिश की – इसी से Columbus ने अमेरिका और Vasco da Gama ने भारत खोजा।
7. सार्थवाह: दूरस्थ व्यापारिक काफिले का नेता जो सुरक्षित मार्ग, ठहरने का स्थान और माल-परिवहन का प्रबंध करता था – आधुनिक Logistics Manager का पूर्वगामी।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (6.14 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(स) 15 अधिकरण
2	(ब) 300+ धागे/इंच; बेहद बारीक
3	(स) लोथल
4	(ब) Bill of Exchange / Bank Draft
5	(स) कालीकट
6	(ब) Damascus Steel
7	(स) 24%

6.16 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- कौटिल्य – अर्थशास्त्र (R. Shamasastry अनुवाद, मैसूर, 1915; L.N. Rangarajan अनुवाद, Penguin)
- कृषिपराशर – पराशर (G.J. Meulenbeld & Dominik Wujastyk एड्स)
- वृक्षायुर्वेद – सुरपाल (Nalini Sadhale अनुवाद, Agri-History Bulletin)
- मनुस्मृति – कृषि-विधान प्रकरण
- महाभारत – शांतिपर्व, कर्णपर्व (व्यापार-संबंधी संदर्भ)
- ऋग्वेद – व्यापार और कृषि-सूक्त

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- रमेशचंद्र मजूमदार – प्राचीन भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन

- उदय राज शर्मा – कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास
- दिलीप चक्रवर्ती – भारत का आर्थिक इतिहास, हिंदी माध्यम
- गोविंद सदाशिव घुर्ये – भारतीय सभ्यता और उद्योग, हिंदी अनुवाद

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Angus Maddison – The World Economy: Historical Statistics, OECD
- K.M. Panikkar – India and the Indian Ocean, George Allen & Unwin
- Om Prakash – The Dutch East India Company and the Economy of Bengal
- Romila Thapar – A History of India (Vol. 1), Penguin Books
- Sanjeev Sanyal – The Ocean of Churn (India's Maritime History), Penguin
- Lotika Varadarajan – India and the Indian Ocean (Ancient Trade Routes)
- Sheldon Pollock (Ed.) – Literary Cultures in History: Reconstructions from South Asia

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.indiamaritimefoundation.org – भारतीय समुद्री इतिहास
- https://www.sagarmala.gov.in – SAGARMALA परियोजना, भारत सरकार
- https://commerce.gov.in – वाणिज्य मंत्रालय; व्यापार आँकड़े
- https://www.vikaspedia.in – कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संसाधन
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in – भारतीय शोध-प्रबंध भंडार
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 7	VATTER:DR DHARAMBIR

Unit-4 मानचित्र (भारत)

प्राचीन भारतवर्ष की राजनीतिक सीमाएँ

प्राचीन काल में भारतीय कला के प्रमुख केंद्र

Maps of India | Political Boundaries | Major Art Centers in Ancient India

अनुभाग	विषय-वस्तु
7.0	अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)
7.1	प्रस्तावना
7.2	**मानचित्र 1** — प्राचीन भारतवर्ष की राजनीतिक सीमाएँ (महाजनपद काल 600-300 ई.पू.)
	→ हिमालय, सभी 16 महाजनपद, प्रमुख नदियाँ, राजधानियाँ, सिंधु-सभ्यता स्थल
7.3	सोलह महाजनपद – विस्तृत तालिका (राजधानी, भौगोलिक क्षेत्र, शासन-प्रकार)
7.3.1	महाजनपद काल की भौगोलिक विशेषताएँ
7.3.2	नदी-व्यवस्था और राजनीतिक भूगोल
7.4	Check Your Progress — 1
7.5	**मानचित्र 2** — प्राचीन काल में भारतीय कला के प्रमुख केंद्र (2500 ई.पू.-1700 ई.)
	→ बौद्ध कला ■, हिंदू मंदिर ★, गुफा-चित्र ◆, मूर्तिकला ▲, वस्त्र-शिल्प ●, नाट्य ⬡
7.6	कला-केंद्रों का विस्तृत विवरण
7.6.1	बौद्ध कला – 9 केंद्रों की तालिका
7.6.2	हिंदू मंदिर-स्थापत्य – 9 केंद्र
7.6.3	गुफा-चित्रकला – 6 केंद्र
7.6.4	मूर्तिकला – 8 शैलियाँ (मथुरा, गांधार, चोल काँस्य)
7.6.5	वस्त्र-शिल्प और नाट्य-कला केंद्र
7.7	Check Your Progress — 2

अनुभाग	विषय-वस्तु
7.8	भारतीय कला और भूगोल – नदी-घाटियाँ + UNESCO विरासत (12 स्थल)
7.9	Check Your Progress — 3
7.10	समकालीन प्रासंगिकता + डिजिटल मानचित्र
7.11	सारांश (10 बिंदु)
7.12	शब्दावली (15 शब्द)
7.13	Self-Assessment Test
7.14	Answers to Check Your Progress
7.15	References / Suggested Readings

7.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के मानचित्रों के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- प्राचीन भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओं – हिमालय से समुद्र तक – का दृश्य-बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- महाजनपद काल (600-300 ई.पू.) के 16 प्रमुख राजनीतिक राज्यों की भौगोलिक स्थिति पहचान सकेंगे।
- प्राचीन भारत की प्रमुख नदियों – गंगा, यमुना, सिंधु, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी – की स्थिति मानचित्र पर ढूँढ सकेंगे।
- भारत के प्रमुख बौद्ध कला केंद्रों – अजंता, एलोरा, सारनाथ, साँची – की भौगोलिक स्थिति जान सकेंगे।
- हिंदू मंदिर-स्थापत्य के प्रमुख केंद्रों – खजुराहो, कोणार्क, महाबलीपुरम् – की पहचान कर सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के प्रमुख केंद्रों – मथुरा, गांधार, अमरावती – की क्षेत्रीय विशेषताएँ समझ सकेंगे।
- भारतीय कला-केंद्रों और नदी-घाटियों, समुद्री तटों एवं व्यापार-मार्गों के बीच संबंध को समझ सकेंगे।
- मानचित्र-पठन के कौशल का विकास करते हुए भारत की सांस्कृतिक विविधता की भौगोलिक आधार-भूमि को समझ सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

मानचित्र इतिहास और भूगोल का संगम है। जब हम भारत के प्राचीन राजनीतिक मानचित्र को देखते हैं, तो हम केवल सीमाएँ नहीं देखते – हम एक विशाल सभ्यता की जीवंत स्मृति देखते हैं। जब हम कला-केंद्रों का मानचित्र देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि भारतीय कला का प्रसार किसी दरबार तक सीमित नहीं था – यह नदी-घाटियों से पर्वतों तक, समुद्र-तटों से वनों तक सर्वत्र फैली थी।

'भारतवर्ष' की भौगोलिक कल्पना विष्णुपुराण में इस प्रकार व्यक्त हुई है:

> उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
> वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।
>
> – विष्णुपुराण 2.3.1

(जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वह 'भारत' नाम का देश है और वहाँ की संतान 'भारती' कहलाती है।)

महाजनपद काल (600-300 ई.पू.) भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक निर्णायक दौर था जब 16 प्रमुख राज्य एक-दूसरे के साथ राजनीतिक और व्यापारिक संबंधों में थे। इसी काल में बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ, कौटिल्य ने अर्थशास्त्र लिखा और मौर्य साम्राज्य की नींव पड़ी।

भारतीय कला के प्रमुख केंद्र भारत के कोने-कोने में फैले हैं। अजंता-एलोरा (महाराष्ट्र) से लेकर खजुराहो (मध्य प्रदेश), कोणार्क (ओडिशा) से लेकर महाबलीपुरम् (तमिलनाडु) तक – भारतीय कला की विविधता उसकी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण है। इस अध्याय में दो मानचित्र प्रस्तुत किए गए हैं जो इस विविधता को दृश्य-रूप में प्रस्तुत करते हैं।

7.2 मानचित्र 1: प्राचीन भारतवर्ष की राजनीतिक सीमाएँ

निम्नलिखित मानचित्र में महाजनपद काल (600-300 ई.पू.) के प्रमुख राजनीतिक राज्यों और भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओं को दर्शाया गया है। यह मानचित्र अनुमानित है और विद्वानों के शोध के आधार पर निर्मित किया गया है:

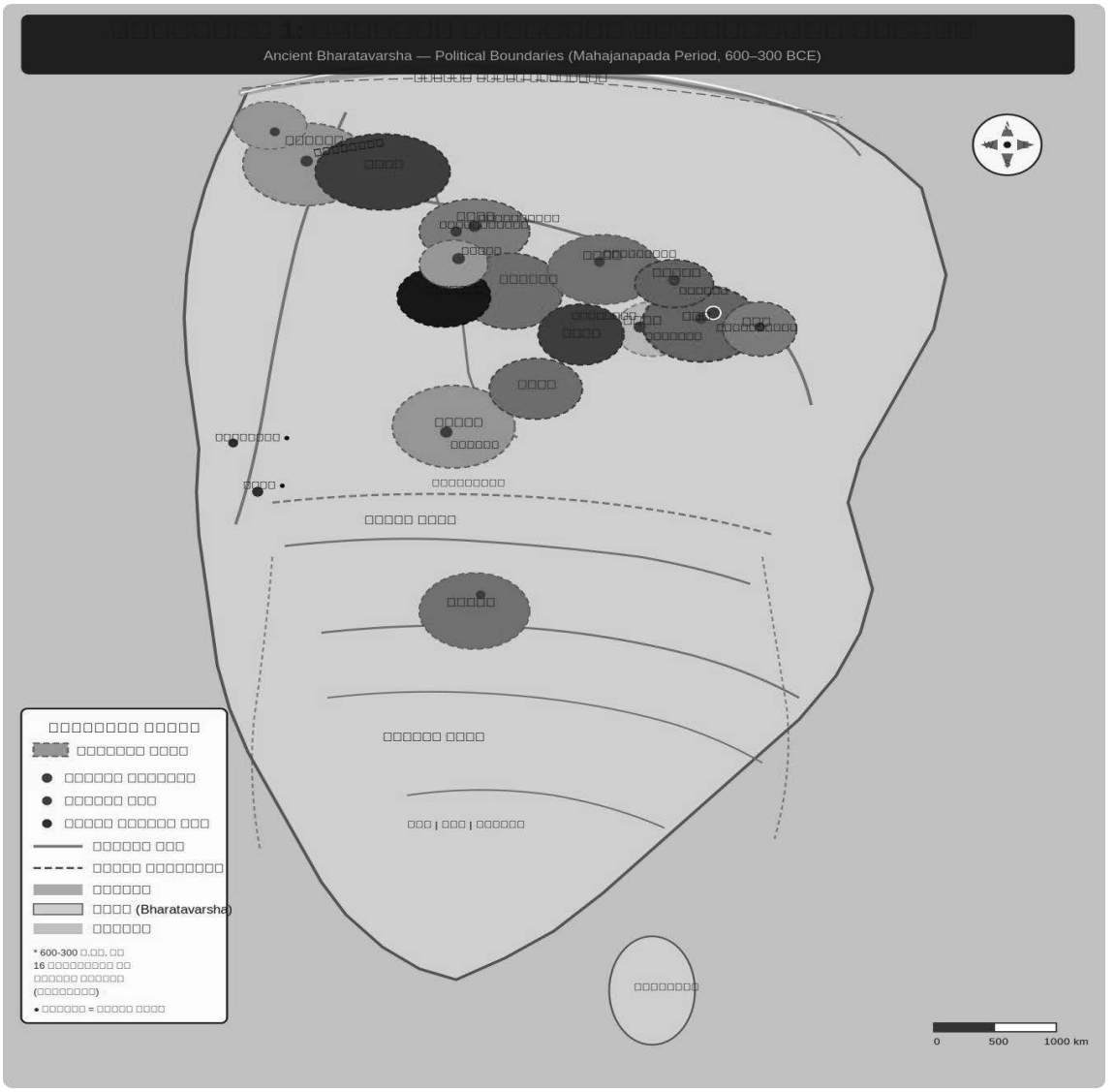

मानचित्र 1: प्राचीन भारतवर्ष — महाजनपद काल (600-300 ई.पू.) की राजनीतिक सीमाएँ

मानचित्र-पठन सहायिका:

रंग/प्रतीक	अर्थ	उदाहरण	विशेषता
रंगीन बिंदु-रेखा क्षेत्र	महाजनपद सीमाएँ (अनुमानित)	मगध, कोशल, वज्जि	600-300 ई.पू. के राज्य
लाल बिंदु (बड़ा)	प्रमुख राजधानी	पाटलिपुत्र	मगध साम्राज्य की राजधानी
लाल बिंदु (छोटा)	प्रमुख नगर	वाराणसी, वैशाली	ऐतिहासिक महत्त्व के नगर
बैंगनी बिंदु	सिंधु सभ्यता स्थल	लोथल, धोलावीरा	2600-1900 ई.पू.
नीली रेखाएँ	प्रमुख नदियाँ	गंगा, यमुना, सिंधु	भारत की प्रमुख नदी-प्रणाली
भूरी बिंदु-रेखा	पर्वत श्रृंखलाएँ	विंध्याचल	उत्तर-दक्षिण विभाजन

7.3 सोलह महाजनपद: मानचित्र-सहित विवरण

महाजनपद काल में भारत 16 प्रमुख राज्यों में विभाजित था। इनमें से कुछ राजतांत्रिक (Monarchies) और कुछ गणतांत्रिक (Republics) थे। प्रत्येक महाजनपद की अपनी राजधानी, सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक विशेषता थी:

महाजनपद	राजधानी	भौगोलिक क्षेत्र	शासन-प्रकार
1. मगध	राजगृह → पाटलिपुत्र	दक्षिण बिहार	राजतंत्र (सर्वाधिक शक्तिशाली)
2. कोशल	श्रावस्ती	अवध (उ.प्र.)	राजतंत्र
3. वज्जि (लिच्छवि)	वैशाली	उत्तरी बिहार	गणतंत्र (विश्व का प्रथम)

4. मल्ल	कुशीनगर/पावा	पूर्वी उ.प्र.	गणतंत्र
5. काशी	वाराणसी	पूर्वी उ.प्र.	राजतंत्र
6. अंग	चंपा	भागलपुर (बिहार)	राजतंत्र
7. वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद (उ.प्र.)	राजतंत्र
8. पांचाल	अहिच्छत्र/काम्पिल्य	उत्तर प्रदेश	मिश्रित
9. कुरु	हस्तिनापुर/इंद्रप्रस्थ	दिल्ली/मेरठ क्षेत्र	गणतंत्र
10. मत्स्य	विराटनगर	जयपुर (राजस्थान)	राजतंत्र
11. शूरसेन	मथुरा	मथुरा-आगरा क्षेत्र	गणतंत्र
12. अवंति	उज्जैन / माहिष्मती	मध्य प्रदेश	राजतंत्र
13. गांधार	तक्षशिला	रावलपिंडी (पाक.)	राजतंत्र
14. कांभोज	राजपुर (हाटक)	उ.-पश्चिम सीमा	गणतंत्र
15. चेदि	शुक्तिमती	मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़	राजतंत्र
16. अश्मक	पोटन/पैठान	गोदावरी तट (महा.)	राजतंत्र (एकमात्र दक्षिणी)

7.3.1 महाजनपद काल की भौगोलिक विशेषताएँ

मानचित्र में महाजनपदों की भौगोलिक स्थिति से कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट होते हैं:

- गंगा-यमुना का मैदान: अधिकांश महाजनपद इस उपजाऊ क्षेत्र में थे – इसीलिए इसे 'आर्यावर्त' कहा गया।
- दक्षिण में केवल अश्मक: विंध्याचल के दक्षिण में केवल अश्मक महाजनपद था – गोदावरी के तट पर।
- पश्चिमोत्तर में गांधार: आज के पाकिस्तान-अफगानिस्तान में – व्यापार का प्रमुख द्वार।
- वज्जि संघ का महत्त्व: विश्व के प्रथम गणतंत्र के रूप में वैशाली (वर्तमान बिहार) का स्थान।

- मगध की केंद्रीयता: पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) – जो कालांतर में मौर्य साम्राज्य की राजधानी बना।

7.3.2 प्राचीन भारत की नदी-व्यवस्था और राजनीतिक भूगोल

प्राचीन भारत में नदियाँ केवल जल-स्रोत नहीं थीं – वे राजनीतिक सीमाएँ, व्यापार-मार्ग और सांस्कृतिक पहचान भी थीं:

नदी	संबंधित राजनीतिक क्षेत्र
गंगा (गंगा-यमुना दोआब)	कुरु, पांचाल, काशी, कोशल, मगध का केंद्र
यमुना	कुरु-पांचाल विभाजन; इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) की नींव
सिंधु	गांधार; पश्चिम भारत का द्वार; सिंधु सभ्यता
सरयू	कोशल (अयोध्या – राम की जन्म-भूमि)
गंडक	वज्जि संघ (वैशाली) की सीमा
नर्मदा	उत्तर-दक्षिण भारत का विभाजन; अवंति की दक्षिणी सीमा
गोदावरी	अश्मक (एकमात्र दक्षिणी महाजनपद) की धुरी
ब्रह्मपुत्र	पूर्वोत्तर सीमा; बंग और अंग के समीप

नदियाँ प्राचीन भारत में केवल प्राकृतिक सीमाएँ ही नहीं थीं, बल्कि कृषि, परिवहन और नगरीकरण का आधार भी थीं। गंगा-यमुना के उपजाऊ मैदान और गंगा के जल-मार्ग ने मगध, काशी और कोशल जैसे महाजनपदों को आर्थिक शक्ति दी। नदियों के संगम पर अनेक नगर बसे, तथा घाट और तीर्थ-स्थल व्यापार एवं धार्मिक यात्राओं के केंद्र बने। इसी कारण राजनीतिक मानचित्र को समझने के लिए नदी-तंत्र का अध्ययन अनिवार्य है।

7.4 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) मानचित्र-1 देखकर उत्तर दीजिए:

□ गंगा नदी किन-किन महाजनपदों से होकर गुजरती है? मानचित्र देखकर कोई तीन बताइए।

□ मगध महाजनपद की राजधानी का नाम क्या था और वह वर्तमान में किस राज्य में है?

□ मानचित्र में गणतांत्रिक राज्यों (Republics) की पहचान करते हुए उनमें से दो के नाम बताइए।

□ विंध्याचल पर्वत किन दो भौगोलिक क्षेत्रों को अलग करता है?

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

□ अश्मक उत्तर भारत का महाजनपद था।
( )

□ वैशाली को विश्व के प्रथम गणतंत्र का केंद्र माना जाता है।
( )

□ गांधार महाजनपद की राजधानी तक्षशिला थी।
( )

□ सिंधु नदी गंगा के पूर्व में बहती है।
( )

7.5 मानचित्र 2: प्राचीन काल में भारतीय कला के प्रमुख केंद्र

यह मानचित्र प्राचीन भारत (2500 ई.पू. से 1700 ई. तक) के प्रमुख कला-केंद्रों को दर्शाता है। इनमें बौद्ध कला, हिंदू मंदिर-स्थापत्य, गुफा-चित्रकला, मूर्तिकला, वस्त्र-शिल्प और नाट्य-कला के केंद्र सम्मिलित हैं:

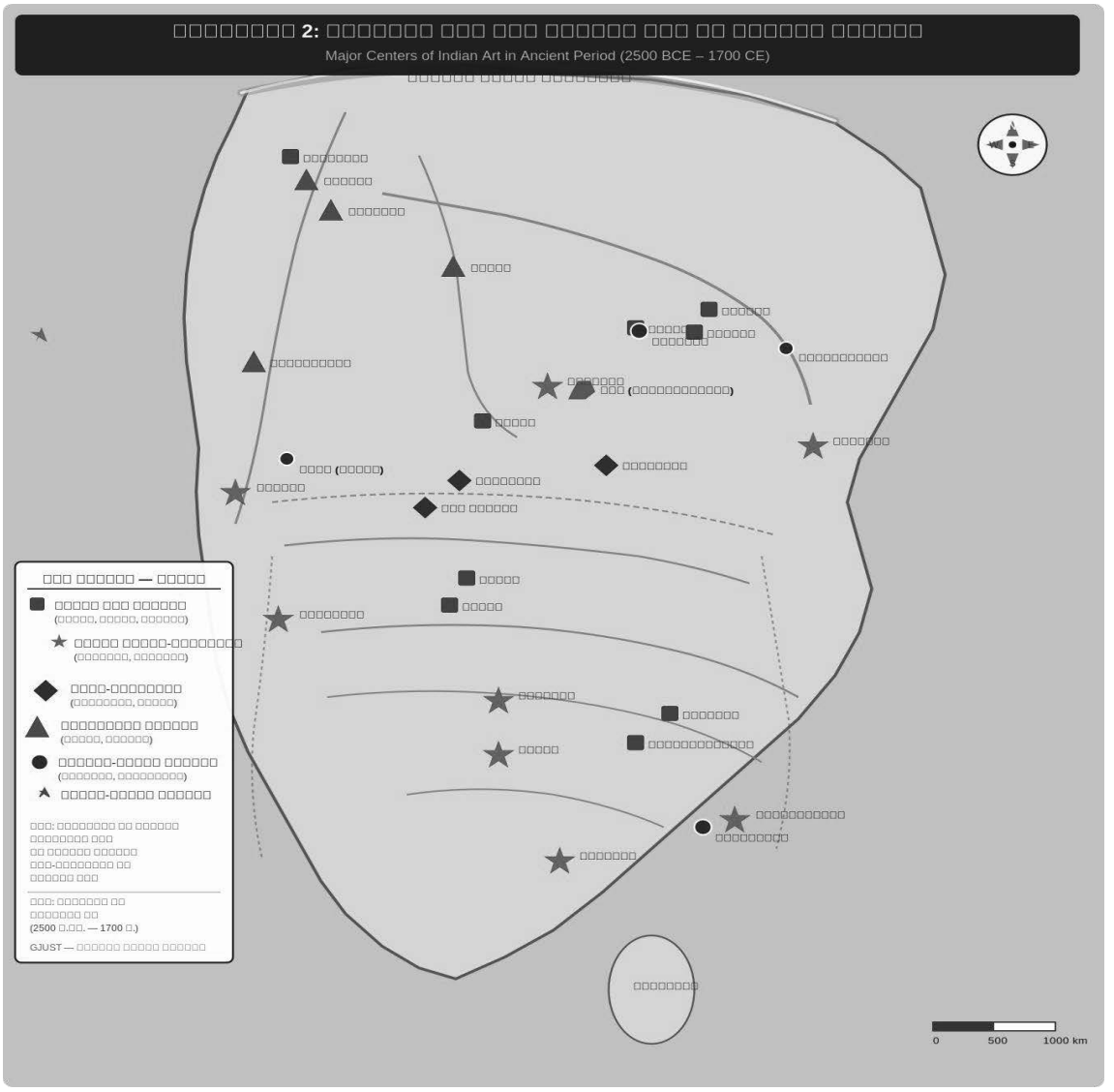

मानचित्र 2: प्राचीन काल में भारतीय कला के प्रमुख केंद्र (2500 ई.पू. - 1700 ई.)

मानचित्र-2 में प्रयुक्त संकेत:

संकेत (रंग + आकार)	कला-परंपरा	प्रमुख केंद्र
■ नीला वर्ग	बौद्ध कला	अजंता, साँची, सारनाथ, नालंदा
★ नारंगी तारा	हिंदू मंदिर-स्थापत्य	खजुराहो, कोणार्क, महाबलीपुरम्

◆ बैंगनी हीरा	गुफा-चित्रकला	भीमबेटका, बाघ गुफाएँ
▲ हरा त्रिभुज	मूर्तिकला केंद्र	मथुरा, गांधार, हड़प्पा
● गहरा लाल वृत्त	वस्त्र-शिल्प केंद्र	वाराणसी, काँचीपुरम्
⬡ लाल षट्भुज	नाट्य-संगीत केंद्र	भरत का नाट्यशास्त्र-क्षेत्र

7.6 प्राचीन भारतीय कला केंद्रों का विस्तृत विवरण

7.6.1 बौद्ध कला के प्रमुख केंद्र

बौद्ध कला (ī. 3ई शती – 12वीं शती) ने भारतीय कला को एक नया आयाम दिया। स्तूप, विहार, चैत्य और गुफा-चित्रकला – ये सभी बौद्ध कला की विशिष्ट देन हैं:

केंद्र	राज्य (आज का)	काल	विशेषता
अजंता	महाराष्ट्र	ई.पू. 2री – 7वीं शती ई.	29 गुफाएँ; भित्ति-चित्र; बोधिसत्त्व; बुद्ध-जीवन
एलोरा	महाराष्ट्र	6वीं-11वीं शती	34 गुफाएँ; हिंदू+बौद्ध+जैन; कैलास मंदिर
साँची	मध्य प्रदेश	ई.पू. 3री – 12वीं शती	महास्तूप; अशोक-स्तंभ; तोरण-मूर्तिकला
सारनाथ	उत्तर प्रदेश	ई.पू. 3री – 12वीं शती	धर्मराजिका स्तूप; सिंह-शीर्ष; धम्मेक स्तूप
बोधगया	बिहार	ई.पू. 3री – आज	महाबोधि मंदिर; बुद्ध-ज्ञानप्राप्ति स्थल
नालंदा	बिहार	5वीं-12वीं शती	विश्व विश्वविद्यालय; बौद्ध-ग्रंथालय; बिहार
अमरावती	आंध्र प्रदेश	ई.पू. 3री – 3री शती ई.	महास्तूप; सातवाहन कला; मूर्ति-पट्टिकाएँ

नागार्जुनकोंड	आंध्र प्रदेश	3री-4थी शती	इक्ष्वाकु-काल; श्रेष्ठ बौद्ध मूर्तियाँ
तक्षशिला	पाकिस्तान	ई.पू. 6ठी – 5वीं शती	गांधार-शैली का उद्गम; यूनानी-बौद्ध कला

7.6.2 हिंदू मंदिर-स्थापत्य के प्रमुख केंद्र

हिंदू मंदिर-स्थापत्य ने भारतीय कला को उसकी सर्वोच्च ऊँचाई तक पहुँचाया। नागर, द्रविड़ और वेसर – तीन प्रमुख शैलियों में निर्मित मंदिर भारत के कोने-कोने में हैं:

केंद्र	शैली / काल	विशेषता
खजुराहो (मध्य प्रदेश)	नागर; 950-1050 ई.	25 मंदिर; कंदरिया महादेव; मिथुन-मूर्तियाँ; UNESCO
कोणार्क (ओडिशा)	नागर; 1250 ई.	सूर्य मंदिर; 24 पहिए; 7 घोड़े; UNESCO
महाबलीपुरम् (तमिलनाडु)	द्रविड़; 7वीं-8वीं शती	पल्लव; रथ-मंदिर; अर्जुन-तपस्या उत्कीर्णन; UNESCO
बृहदेश्वर/तंजावुर (तमिलनाडु)	द्रविड़; 1010 ई.	चोल; 66 मीटर ऊँचा विमान; UNESCO
हम्पी/विजयनगर (कर्नाटक)	वेसर; 14वीं-16वीं शती	विट्ठल मंदिर; 56 भगवान; UNESCO
पट्टदकल (कर्नाटक)	वेसर; 8वीं शती	चालुक्य; विरुपाक्ष मंदिर; UNESCO
एलीफेंटा (मुम्बई)	मध्यकालीन; 5वीं-8वीं शती	त्रिमूर्ति शिव; पर्वत-गुफा मंदिर; UNESCO
सोमनाथ (गुजरात)	नागर; पुनर्निर्मित	12 ज्योतिर्लिंगों में प्रथम; अरब सागर-तट
काँचीपुरम् (तमिलनाडु)	द्रविड़; 7वीं-8वीं शती	पल्लव-चोल; 100+ मंदिर; 'मंदिरों का नगर'

7.6.3 गुफा-चित्रकला के केंद्र

भारत में गुफा-चित्रकला की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। भीमबेटका की शैल-कला लगभग 30,000 वर्ष पुरानी मानी जाती है:

केंद्र	स्थान	काल	विशेषता
भीमबेटका	मध्य प्रदेश	30,000 ई.पू. से	700+ गुफाएँ; शिकार, नृत्य, पशु-चित्र; UNESCO
अजंता गुफाएँ	महाराष्ट्र	ई.पू. 2री शती – 7वीं शती ई.	29 बौद्ध गुफाएँ; भित्ति-चित्र; प्राकृतिक रंग
बाघ गुफाएँ	मध्य प्रदेश	4थी-5वीं शती	9 गुफाएँ; अजंता जैसी पेंटिंग; नृत्य दृश्य
जोगीमारा	छत्तीसगढ़	ई.पू. 3री-2री शती	प्राचीनतम देवनागरी-समान लिपि; प्रेम-गीत
एलोरा	महाराष्ट्र	6वीं-12वीं शती	34 गुफाएँ; बौद्ध+हिंदू+जैन; 3 धर्मों का समन्वय
एलीफेंटा	मुम्बई (महाराष्ट्र)	5वीं-8वीं शती	शिव मंदिर; त्रिमूर्ति; द्वीप पर स्थित

7.6.4 मूर्तिकला के प्रमुख केंद्र

भारतीय मूर्तिकला विश्व की महानतम मूर्तिकला परंपराओं में से एक है। विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं:

केंद्र	शैली	काल	विशिष्ट देन
मथुरा (उ.प्र.)	मथुरा-शैली	ई.पू. 2री – 12वीं शती	लाल बलुआ पत्थर; बुद्ध की प्रथम मानवीय छवि
तक्षशिला/गांधार	गांधार-शैली	ई.पू. 1ली – 5वीं शती ई.	ग्रीको-बौद्ध; बुद्ध-अपोलो समन्वय; लहरदार बाल

अमरावती (आ.प्र.)	अमरावती-शैली	ई.पू. 2री – 3री शती ई.	श्वेत संगमरमर; गतिशील मूर्तियाँ; सातवाहन
हड़प्पा (पाकिस्तान)	सिंधु-शैली	2600-1900 ई.पू.	नृत्यांगना; पशुपति मुहर; लघु मूर्तियाँ
मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान)	सिंधु-शैली	2600-1900 ई.पू.	पुजारी-राजा मूर्ति; ताँबे का नर्तकी
तंजावुर (तमिलनाडु)	चोल-काँस्य	9वीं-13वीं शती	नटराज; Lost Wax Process; विश्व-श्रेष्ठ
मामल्लपुरम् (तमि.न.)	पल्लव-शैली	7वीं-8वीं शती	एकाश्म मंदिर; बड़ी उत्कीर्णन-चट्टानें
होयसाल (कर्नाटक)	होयसाल-शैली	11वीं-14वीं शती	बेलूर, हालेबिड; अत्यंत बारीक नक्काशी

7.6.5 वस्त्र-शिल्प और प्रदर्शन-कला के केंद्र

केंद्र	शिल्प-परंपरा	विशेषता
वाराणसी (उ.प्र.)	बनारसी सिल्क	जरी बुनाई; मुगल-हिंदू समन्वय; पीढ़ी-दर-पीढ़ी
काँचीपुरम् (तमि.न.)	काँजीवरम् सिल्क	भारी बुनाई; मंदिर-बॉर्डर; दक्षिण की पहचान
पाटन/गुजरात	पटोला	डबल इकत; दोनों तरफ डिजाइन; इंडोनेशिया निर्यात
ढाका (बांग्लादेश)	मलमल/मसलिन	300+ धागे/इंच; 'बुना हुआ वायु'; रोम-मिस्र में माँग
मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल)	रेशम + हाथी-दाँत	मुगल दरबार की आपूर्ति; बारीक कारीगरी
तंजावुर (तमि.न.)	भरतनाट्यम	मंदिर-नृत्य; देवदासी परंपरा; भाव-अभिव्यक्ति

मणिपुर	मणिपुरी नृत्य	राधा-कृष्ण; रासलीला; वृत्ताकार गति
केरल	कथकली + मोहिनीअट्टम	मुखौटा + लास्य; Kerala classical tradition

इन शिल्प-केंद्रों की विशेषता यह है कि वे केवल उत्पादन के केंद्र नहीं, बल्कि कलात्मक परंपरा और ज्ञान के संरक्षक भी रहे। वाराणसी, काँचीपुरम् और पाटन जैसे नगरों में बुनाई की तकनीकें पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित हुईं। दूसरी ओर मंदिर और दरबार प्रदर्शन-कलाओं के आश्रयदाता रहे, जहाँ नृत्य, संगीत और नाट्य का विकास हुआ। कला के इन केंद्रों को मानचित्र पर देखने से कला के भौगोलिक प्रसार और व्यापारिक मार्गों से उसके संबंध को समझना सरल हो जाता है।

7.7 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

मानचित्र-2 देखकर उत्तर दीजिए:

- मानचित्र में बौद्ध कला के कोई तीन केंद्रों की पहचान कीजिए और उनके राज्यों के नाम बताइए।
- खजुराहो और कोणार्क में से कौन-सा उत्तर भारत में है और कौन-सा पूर्वी भारत में?
- भीमबेटका किस राज्य में है और यह किस प्रकार की कला के लिए प्रसिद्ध है?
- वस्त्र-शिल्प के केंद्रों (लाल वृत्त) में से दो के नाम बताइए।

सही मिलान कीजिए:

कला-केंद्र (स्तम्भ-अ)	विशेषता (स्तम्भ-ब)
अजंता	चोल काँस्य नटराज – विश्वश्रेष्ठ
साँची	महास्तूप; अशोक-स्तंभ; तोरण-मूर्तिकला
तंजावुर	भित्ति-चित्र; 29 बौद्ध गुफाएँ
भीमबेटका	30,000 वर्ष पुरानी शैल-चित्रकला; UNESCO
महाबलीपुरम्	पल्लव; रथ-मंदिर; एकाश्म निर्माण; UNESCO

7.8 भारतीय कला और भूगोल: परस्पर संबंध

7.8.1 नदी-घाटियाँ और कला-परंपराएँ

भारतीय कला और नदियों के बीच गहरा संबंध है। नदियाँ न केवल जीवन-स्रोत थीं, बल्कि व्यापार-मार्ग और सांस्कृतिक-प्रसार के माध्यम भी थीं:

नदी-घाटी	विकसित कला-परंपरा
गंगा-यमुना दोआब	मथुरा-शैली मूर्तिकला; बनारसी सिल्क; सारनाथ बौद्ध कला
सिंधु-सरस्वती घाटी	सिंधु-सभ्यता कला; नृत्यांगना; पशुपति मुहर
गोदावरी घाटी	नासिक; त्र्यंबकेश्वर मंदिर; अजंता-एलोरा
कृष्णा-तुंगभद्रा	विजयनगर; हम्पी; होयसाल मंदिर
कावेरी घाटी	तंजावुर; काँचीपुरम्; महाबलीपुरम्; चोल कला
महानदी	कोणार्क; भुवनेश्वर; पुरी; उड़िया कला
नर्मदा	अमरकंटक; ओंकारेश्वर; मंडला – मध्य भारत की कला
ब्रह्मपुत्र	असम की सत्त्रिया परंपरा; मूर्तिकला

नदी-घाटियों और कला के संबंध का मुख्य कारण यह था कि नदियाँ उपजाऊ भूमि, पत्थर जैसी निर्माण-सामग्री और व्यापार-मार्ग उपलब्ध कराती थीं, जिससे शासकों और व्यापारियों को मंदिर, स्तूप और विहार बनवाने के लिए संसाधन मिले। साथ ही नदी-तटों पर बसे तीर्थ-स्थलों ने कलाकारों, भक्तों और विद्वानों को एकत्र किया, जिससे स्थानीय शैलियों का विकास हुआ।

7.8.2 UNESCO विश्व-विरासत: भारतीय कला-केंद्र

भारत के 40 से अधिक स्थल UNESCO की विश्व विरासत सूची में हैं। इनमें से अनेक प्राचीन कला-केंद्र हैं:

UNESCO स्थल	राज्य	विरासत वर्ष

अजंता गुफाएँ	महाराष्ट्र	1983
एलोरा गुफाएँ	महाराष्ट्र	1983
साँची का स्तूप	मध्य प्रदेश	1989
खजुराहो मंदिर-समूह	मध्य प्रदेश	1986
महाबलीपुरम्	तमिलनाडु	1984
कोणार्क सूर्य मंदिर	ओडिशा	1984
एलीफेंटा गुफाएँ	महाराष्ट्र	1987
हम्पी स्मारक	कर्नाटक	1986
पट्टदकल स्मारक	कर्नाटक	1987
भीमबेटका शैलाश्रय	मध्य प्रदेश	2003
महाबोधि मंदिर	बिहार	2002
चोल मंदिर (तंजावुर)	तमिलनाडु	1987

UNESCO की विश्व धरोहर सूची में स्थलों को सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित --- इन तीन श्रेणियों में रखा जाता है। 1972 के विश्व धरोहर अभिसमय को भारत ने 1977 में स्वीकार (ratify) किया। विश्व धरोहर घोषित होने से स्थल के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता और जागरूकता बढ़ती है, परंतु इसके साथ पर्यटन के दबाव, प्रदूषण और अनियंत्रित निर्माण जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं, जिनका प्रबंधन आवश्यक है।

7.9 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ अजंता की गुफाएँ _____ राज्य में हैं और इन्हें _____ में UNESCO विरासत घोषित किया गया।

□ कोणार्क का सूर्य मंदिर _____ शैली में बना है और _____ राज्य में स्थित है।

□ भीमबेटका की शैल-कला लगभग _____ वर्ष पुरानी मानी जाती है।

□ गांधार कला-शैली का उद्‌गम _____ में हुआ और यह _____ कला का मिश्रण है।

(ब) दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए:

□ नदी-घाटियों और भारतीय कला-केंद्रों के बीच क्या संबंध है? उदाहरण सहित बताइए।

□ मानचित्र-2 में कितने UNESCO विरासत स्थल हैं? किन्हीं तीन के नाम और राज्य बताइए।

7.10 समकालीन प्रासंगिकता: मानचित्र-पठन और सांस्कृतिक जागृति

7.10.1 मानचित्र-पठन का शैक्षिक महत्त्व

मानचित्र-पठन केवल भूगोल का विषय नहीं – यह इतिहास, संस्कृति, अर्थशास्त्र और राजनीति को समझने का समग्र साधन है। NEP 2020 के अंतर्गत मानचित्र-पठन को भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन का अनिवार्य अंग बनाया गया है:

- ऐतिहासिक समझ: प्राचीन राज्यों की भौगोलिक स्थिति से उनकी शक्ति और सीमाओं का बोध।
- सांस्कृतिक पहचान: कला-केंद्रों का भौगोलिक वितरण भारतीय संस्कृति की विविधता को दर्शाता है।
- पर्यटन जागरूकता: विरासत स्थलों की पहचान राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देती है।

- पर्यावरण-बोध: नदियों और कला-केंद्रों के संबंध से प्रकृति-संरक्षण की प्रेरणा।
- राष्ट्रीय एकता: विविध क्षेत्रों की कला-परंपराओं का मानचित्र 'अनेकता में एकता' को दृश्यमान करता है।

7.10.2 डिजिटल मानचित्र और भारतीय धरोहर

आज के डिजिटल युग में भारतीय धरोहर के मानचित्र ऑनलाइन उपलब्ध हैं:

- Archaeological Survey of India (ASI): https://asi.nic.in – सभी संरक्षित स्थलों का मानचित्र
- Google Arts & Culture: भारतीय कला-केंद्रों का वर्चुअल भ्रमण
- UNESCO World Heritage: https://whc.unesco.org – भारतीय विरासत स्थलों का डेटाबेस
- IGNCA (इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र): https://ignca.gov.in – भारतीय कला का डिजिटल संग्रह
- National Atlas & Thematic Mapping Organisation (NATMO): ऐतिहासिक मानचित्रों का भंडार

डिजिटल तकनीक ने मानचित्र-आधारित अध्ययन को अधिक सुलभ बनाया है। भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के 'भुवन' भू-पोर्टल जैसी सेवाएँ उपग्रह-चित्रों के माध्यम से ऐतिहासिक स्थलों की स्थिति, भू-आकृति और परिवेश को समझने में सहायता करती हैं। विद्यार्थी इनके द्वारा प्राचीन महाजनपदों और कला-केंद्रों को आधुनिक मानचित्र पर चिह्नित कर सकते हैं, जिससे इतिहास का अध्ययन अधिक सजीव और अनुभव-आधारित बनता है।

7.11 सारांश (Summary)

इस अध्याय में दो मानचित्रों के माध्यम से प्राचीन भारतवर्ष की राजनीतिक सीमाओं और भारतीय कला-केंद्रों का अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. भारतवर्ष की भूगोल: हिमालय से समुद्र तक और सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक – यह प्राचीन 'भारतवर्ष' की भौगोलिक सीमा थी।
2. 16 महाजनपद: 600-300 ई.पू. में 16 महाजनपद – जिनमें राजतांत्रिक और गणतांत्रिक दोनों व्यवस्थाएँ थीं – उत्तर से दक्षिण तक फैले थे।
3. वज्जि संघ (वैशाली): विश्व का प्रथम ज्ञात गणतंत्र; मानचित्र पर उत्तरी बिहार में स्थित।
4. मगध का केंद्रीय स्थान: पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) – मौर्य साम्राज्य की राजधानी जो भारत के केंद्र में थी।
5. बौद्ध कला के केंद्र: अजंता, एलोरा, साँची, सारनाथ, नालंदा – मानचित्र पर मुख्यतः मध्य और उत्तर-पूर्वी भारत में।
6. हिंदू मंदिर-स्थापत्य: खजुराहो (उत्तर-मध्य), कोणार्क (पूर्व), महाबलीपुरम् (दक्षिण) – समग्र भारत में।
7. गुफा-चित्रकला: भीमबेटका (30,000 वर्ष पुरानी) से अजंता तक – मध्य भारत में केंद्रित।
8. वस्त्र-शिल्प: वाराणसी (उत्तर), काँचीपुरम् (दक्षिण), ढाका (पूर्व) – तटों और नदी-तटों पर।
9. UNESCO विरासत: 12 से अधिक प्राचीन कला-केंद्र UNESCO की विश्व-विरासत सूची में।
10. भूगोल और कला का संबंध: नदी-घाटियाँ, समुद्री तट और व्यापार-मार्ग भारतीय कला-केंद्रों के विकास के आधार थे।

7.12 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
महाजनपद	600-300 ई.पू. के 16 प्रमुख राजनीतिक राज्य; जनपद का विस्तारित रूप
भारतवर्ष	हिमालय से समुद्र तक का प्राचीन भू-खंड; विष्णुपुराण में वर्णित
गणतंत्र (Gana-sangha)	निर्वाचित नेतृत्व वाला राज्य; वज्जि संघ विश्व का प्रथम
मथुरा-शैली	उत्तर भारत की मूर्तिकला-शैली; लाल बलुआ पत्थर; गुप्त काल में चरम
गांधार-शैली	तक्षशिला-केंद्रित; ग्रीको-बौद्ध कला; बुद्ध की यूनानी-छवि
अमरावती-शैली	आंध्र प्रदेश; श्वेत संगमरमर; गतिशील मूर्तियाँ; सातवाहन काल
नागर शैली	उत्तर भारतीय मंदिर-शैली; शिखर; वक्ररेखीय शीर्ष; खजुराहो, कोणार्क
द्रविड़ शैली	दक्षिण भारतीय मंदिर-शैली; गोपुरम्; तंजावुर, महाबलीपुरम्
वेसर शैली	नागर+द्रविड़ का समन्वय; हम्पी, पट्टदकल, होयसाल
भित्ति-चित्र (Fresco)	दीवार पर बनाई गई चित्रकारी; अजंता और बाघ की विशेषता
स्तूप	बौद्ध-स्मारक; अर्धगोलाकार संरचना; बुद्ध-अवशेष; साँची प्रसिद्ध
UNESCO विरासत	United Nations Educational, Scientific & Cultural Organization द्वारा मान्यता
शैल-कला (Rock Art)	पत्थर पर खोदी/बनाई गई प्रागैतिहासिक कला; भीमबेटका
Lost Wax Process	मोम से साँचा बनाकर धातु-मूर्ति ढालने की तकनीक; चोल काँस्य
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति; मानचित्र-पठन और कला-परंपरा को IKT में शामिल

7.13 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए)

1. मानचित्र-1 के आधार पर महाजनपद काल की राजनीतिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए। गंगा-यमुना दोआब के महाजनपदों की विशेष भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. मानचित्र-2 के आधार पर भारतीय बौद्ध कला के प्रमुख केंद्रों का वर्णन कीजिए। अजंता, साँची और सारनाथ की विशेषताएँ बताइए।
3. भारतीय कला-केंद्रों और नदी-घाटियों के परस्पर संबंध को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. हिंदू मंदिर-स्थापत्य की तीन शैलियों — नागर, द्रविड़, वेसर — के प्रमुख केंद्रों का मानचित्र के आधार पर वर्णन कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100-150 शब्दों में दीजिए)

1. मानचित्र-1 में कौन-से महाजनपद गणतांत्रिक थे?
2. भीमबेटका और अजंता में क्या अंतर है?
3. तंजावुर (चोल) कला की क्या विशेषता है?
4. गांधार-शैली की विशेषताएँ क्या हैं?
5. UNESCO विरासत सूची में भारत के कोई पाँच कला-केंद्र बताइए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही विकल्प चुनिए:

1. वज्जि संघ की राजधानी कहाँ थी? (अ) पाटलिपुत्र (ब) वैशाली (स) वाराणसी (द) राजगृह
2. अजंता की गुफाएँ किस राज्य में हैं? (अ) मध्य प्रदेश (ब) गुजरात (स) महाराष्ट्र (द) कर्नाटक
3. कोणार्क का सूर्य मंदिर किस शैली में है? (अ) द्रविड़ (ब) नागर (स) वेसर (द) गांधार
4. भीमबेटका किस राज्य में है? (अ) छत्तीसगढ़ (ब) झारखंड (स) मध्य प्रदेश (द) उत्तर प्रदेश
5. चोल काँस्य-मूर्तियाँ किस तकनीक से बनाई जाती थीं? (अ) हस्त-कर्तन (ब) Lost Wax Process (स) पत्थर-शिल्प (द) मिट्टी-ढलाई
6. गांधार-शैली किस दो कलाओं का समन्वय है? (अ) हिंदू + बौद्ध (ब) ग्रीको-बौद्ध (यूनानी-बौद्ध) (स) जैन + बौद्ध (द) फारसी + भारतीय
7. महाबलीपुरम् किस राज्य में है? (अ) केरल (ब) कर्नाटक (स) आंध्र प्रदेश (द) तमिलनाडु

7.14 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

7.4 के उत्तर:

(अ) मानचित्र-1 के आधार पर:

1. गंगा नदी से गुजरने वाले महाजनपद: पांचाल, काशी, मगध (अन्य: कोशल, अंग)।
2. मगध की राजधानी पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार) थी।
3. गणतांत्रिक राज्य: वज्जि संघ (वैशाली), कुरु (हस्तिनापुर), मल्ल (कुशीनगर), कांभोज।
4. विंध्याचल पर्वत उत्तर भारत (आर्यावर्त) और दक्षिण भारत (दक्कन) को अलग करता है।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – अश्मक दक्षिण भारत का (गोदावरी तट) का महाजनपद था।
2. सही (✓) – वैशाली को विश्व के प्रथम गणतंत्र का केंद्र माना जाता है।
3. सही (✓) – गांधार की राजधानी तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान) थी।
4. गलत (✗) – सिंधु नदी गंगा के पश्चिम में बहती है।

7.7 के उत्तर:

1. बौद्ध कला के केंद्र: अजंता (महाराष्ट्र), साँची (मध्य प्रदेश), सारनाथ (उत्तर प्रदेश)।
2. खजुराहो उत्तर-मध्य भारत (मध्य प्रदेश) में है और कोणार्क पूर्वी भारत (ओडिशा) में।
3. भीमबेटका मध्य प्रदेश में है और यह शैल-चित्रकला (Rock Painting) के लिए प्रसिद्ध है।
4. वस्त्र-शिल्प के केंद्र: वाराणसी (बनारसी सिल्क), काँचीपुरम् (काँजीवरम् सिल्क)।

सही मिलान:

कला-केंद्र	सही विशेषता
अजंता	भित्ति-चित्र; 29 बौद्ध गुफाएँ (सही)
साँची	महास्तूप; अशोक-स्तंभ; तोरण-मूर्तिकला (सही)
तंजावुर	चोल काँस्य नटराज — विश्वश्रेष्ठ (सही)
भीमबेटका	30,000 वर्ष पुरानी शैल-चित्रकला; UNESCO (सही)
महाबलीपुरम्	पल्लव; रथ-मंदिर; एकाश्म निर्माण; UNESCO (सही)

7.9 के उत्तर:

1. अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में हैं और इन्हें 1983 में UNESCO विरासत घोषित किया गया।
2. कोणार्क का सूर्य मंदिर 'नागर' शैली में बना है और ओडिशा राज्य में स्थित है।
3. भीमबेटका की शैल-कला लगभग 30,000 वर्ष पुरानी मानी जाती है।
4. गांधार कला-शैली का उद्गम तक्षशिला (पाकिस्तान) में हुआ और यह 'ग्रीको-बौद्ध' (यूनानी-बौद्ध) कला का मिश्रण है।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (7.13 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब) वैशाली
2	(स) महाराष्ट्र
3	(ब) नागर
4	(स) मध्य प्रदेश

5	(ब) Lost Wax Process
6	(ब) ग्रीको-बौद्ध (यूनानी-बौद्ध)
7	(द) तमिलनाडु

7.15 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ और आधिकारिक स्रोत:

- Archaeological Survey of India (ASI) – Annual Reports and Site Reports
- UNESCO World Heritage Centre – India: https://whc.unesco.org/en/statesparties/in
- National Atlas & Thematic Mapping Organisation (NATMO), Kolkata
- विष्णुपुराण – भारतवर्ष-वर्णन प्रकरण (गीताप्रेस, गोरखपुर)
- महाभारत – भीष्मपर्व, जम्बूखंड विनिर्माण पर्व

भारतीय कला पर संदर्भ ग्रंथ (हिंदी):

- आनंद केंटिश कुमारस्वामी – भारतीय कला का इतिहास (हिंदी अनुवाद)
- वासुदेव शरण अग्रवाल – भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी
- राधाकुमुद मुखर्जी – प्राचीन भारतीय संस्कृति (हिंदी अनुवाद)
- नरेंद्र नाथ भट्टाचार्य – भारतीय इतिहास और संस्कृति

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Percy Brown – Indian Architecture (2 vols.), D.B. Taraporevala, Mumbai
- Stella Kramrisch – The Hindu Temple (2 vols.), Motilal Banarsidass
- A.L. Basham – The Wonder That Was India, Rupa Publications
- Vidya Dehejia – Indian Art, Phaidon Press
- Romila Thapar – Ancient Indian Social History, Orient Longman

ऑनलाइन संसाधन:

- https://asi.nic.in – Archaeological Survey of India
- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://artsandculture.google.com – Google Arts & Culture (India)
- https://www.natmo.gov.in – National Atlas Organization
- https://www.indiaculture.gov.in – संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24HIS101T – 101	AUTHOR:DR. SANDEEP BISHNOI
LESSON NO : 8	VATTER:DR DHARAMBIR

प्राचीन भारत के प्रमुख जनपद
एवं
प्राचीन भारत में समुद्री वाणिज्य

Major Janapadas of Ancient India | Maritime Commerce in Ancient India

अनुभाग	विषय-वस्तु
8.0	अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)
8.1	प्रस्तावना
भाग-अ: जनपद	
8.2	जनपद से महाजनपद तक – अंगुत्तरनिकाय श्लोक
8.3	16 महाजनपदों का विस्तृत परिचय (मगध, कोशल, वज्जि संघ, काशी, गांधार, अवंति + शेष 10)
8.4	Check Your Progress — 1
8.5	लघु गणराज्य – शाक्य (बुद्ध), कोलिय, मोरिय + मगध-उदय के 5 चरण
8.6	Check Your Progress — 2
भाग-ब: समुद्री वाणिज्य	
8.7	उद्गम, लोथल डॉकयार्ड, नावाध्यक्ष, हिंद-रोम व्यापार, पश्चिमी+पूर्वी बंदरगाह, पेरीप्लस
8.8	Check Your Progress — 3
8.9	चोल नौसेना + दक्षिण-पूर्व एशिया में सांस्कृतिक प्रसार (8 देश)
8.10	जहाज-निर्माण और मानसून-नेविगेशन
8.11	Check Your Progress — 4
8.12	समकालीन प्रासंगिकता (SAGARMALA, QUAD, NEP 2020)
8.13	सारांश (10 बिंदु)

अनुभाग	विषय-वस्तु
8.14	शब्दावली (18 शब्द)
8.15	Self-Assessment Test
8.16	Answers to Check Your Progress
8.17	References

8.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- प्राचीन भारत में 'जनपद' की अवधारणा के उद्गम, विकास और राजनीतिक महत्त्व को समझ सकेंगे।
- 16 महाजनपदों में से प्रत्येक की भौगोलिक स्थिति, राजधानी, शासन-प्रणाली और सांस्कृतिक विशेषताओं का विस्तृत परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रमुख गणतांत्रिक जनपदों – वज्जि, मल्ल, कुरु, शाक्य, कोलिय – की विशेषताओं और उनके लोकतांत्रिक तत्त्वों को पहचान सकेंगे।
- जनपदों के पारस्परिक राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारत की समुद्री वाणिज्य-परंपरा – सिंधु-सभ्यता से मुगल-काल तक – के विकास-क्रम को जान सकेंगे।
- भारत के प्राचीन बंदरगाहों, व्यापारिक मार्गों और नाविक-तकनीक की विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- हिंद महासागर में भारत के व्यापारिक वर्चस्व और रोम, अरब, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं चीन से व्यापारिक संबंधों की विवेचना कर सकेंगे।
- भारतीय समुद्री परंपरा की आधुनिक प्रासंगिकता और NEP 2020 के संदर्भ में इसके महत्त्व को समझ सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारत की सभ्यता दो महान परंपराओं की संगम-भूमि है – स्थलीय और समुद्री। एक ओर जहाँ जनपदों की राजनीतिक व्यवस्था ने भारत को शासन-कला का पाठ पढ़ाया, वहीं दूसरी ओर समुद्री वाणिज्य ने भारत को विश्व के आर्थिक मानचित्र पर स्वर्णिम स्थान दिलाया। इन दोनों परंपराओं को एक साथ समझना भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्र दृष्टि का अनिवार्य अंग है।

'जनपद' – जन (लोग) और पद (स्थान) – यह शब्द स्वयं में लोकतंत्र की बीज-भावना लिए हुए है। जहाँ जनता का पाँव पड़े, जहाँ जनता बसे – वही जनपद है। महाजनपद-काल (600-300 ई.पू.) में भारत में एक ऐसी राजनीतिक प्रयोगशाला थी जहाँ राजतंत्र और गणतंत्र दोनों प्रणालियाँ एक साथ विकसित हो रही थीं। वज्जि संघ, मल्ल गणराज्य, शाक्य गणराज्य (जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ) – ये सब इसी परंपरा की देन हैं।

समुद्री वाणिज्य की दृष्टि से भारत का इतिहास और भी प्राचीन है। लोथल (2400 ई.पू.) के डॉकयार्ड से लेकर चोल नौसेना के श्रीविजय-अभियान (11वीं शती) तक, भारत ने हिंद महासागर को अपना 'घर' माना। 'समुद्र-वाणिज्य' केवल व्यापार नहीं था – यह संस्कृति, धर्म और विचारों का भी महासेतु था। बौद्ध धर्म जिस मार्ग से दक्षिण-पूर्व एशिया पहुँचा, वह समुद्री मार्ग ही था।

यह अध्याय इन दोनों विषयों को क्रमशः और सविस्तार प्रस्तुत करता है, ताकि विद्यार्थी भारत की राजनीतिक-आर्थिक विरासत को उसकी पूर्णता में समझ सकें।

8.2 भाग-अ: प्राचीन भारत के प्रमुख जनपद

8.2.1 जनपद से महाजनपद तक: ऐतिहासिक विकास

वैदिक काल में 'जन' शब्द का प्रयोग जनजातीय समूहों के लिए होता था। ऋग्वेद में पाँच प्रमुख 'जन' का उल्लेख है – पंचजनः यदु, तुर्वश, द्रुह्यु, अनु और पुरु। जब इन जनों ने

निश्चित भूखंडों पर स्थायी निवास स्थापित किया और राजनीतिक संगठन बनाया, तो 'जनपद' का जन्म हुआ।

उत्तर-वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) में छोटे-छोटे जनपद बड़े राज्यों में विलीन होने लगे। इस प्रक्रिया में महाजनपदों का उदय हुआ। बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तरनिकाय' में सोलह महाजनपदों (सोलसमहाजनपदा) का उल्लेख मिलता है:

> सोलसिमे, भिक्खवे, महाजनपदा अहेसुं।
>
> अंगा, मगधा, काशी, कोशला, वज्जी, मल्ला, चेती, वंसा,
>
> कुरू, पंचाला, मच्छा, सुरसेना, असकं, अवंती, गंधारा, कंबोजा।।
>
> – अंगुत्तरनिकाय 1.213 (पाली)

(हे भिक्षुओ! सोलह महाजनपद थे – अंग, मगध, काशी, कोशल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवंति, गांधार, कांभोज।)

8.2.2 जनपद-काल की राजनीतिक व्यवस्था का वर्गीकरण

महाजनपद-काल में दो प्रकार की शासन-व्यवस्थाएँ विद्यमान थीं – राजतंत्र (Monarchies) और गणतंत्र (Republics/Oligarchies):

वर्गीकरण	प्रमुख जनपद	शासन की विशेषता
राजतांत्रिक जनपद	मगध, कोशल, काशी, अवंति, अंग, वत्स	एक राजा का शासन; वंशानुगत उत्तराधिकार; सशक्त केंद्रीय प्रशासन
गणतांत्रिक जनपद	वज्जि, मल्ल, कुरु, पांचाल (अंशतः)	निर्वाचित/परिषद-नेतृत्व; सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया
संघ-राज्य (Confederacy)	वज्जि संघ (8 राज्यों का)	अनेक राज्यों का परिसंघ; साझी सैन्य-शक्ति
मिश्रित व्यवस्था	गांधार, कांभोज	राजा+परिषद का समन्वय

बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' में सोलह महाजनपदों की सूची मिलती है, जबकि जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में भी ऐसी सूची है, जिसके कुछ नामों में अंतर है। गणतांत्रिक राज्यों में निर्णय सभा (संस्थागार/सन्निपात) में सामूहिक रूप से लिए जाते थे और मतदान के लिए 'शलाका' (मत-पर्ची) की विधि अपनाई जाती थी। इन राज्यों का नेतृत्व 'गण-मुख्य' या 'राजा' कहलाने वाले निर्वाचित प्रमुख करते थे, जो वंशानुगत सम्राटों से भिन्न था। यह व्यवस्था प्राचीन भारत की विविध शासन-परंपरा का प्रमाण है।

8.3 सोलह महाजनपदों का विस्तृत परिचय

8.3.1 मगध – सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद

मगध प्राचीन भारत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महाजनपद था जो कालांतर में मौर्य साम्राज्य की नींव बना। इसका राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्त्व अतुलनीय था:

विशेषता	विवरण
भौगोलिक स्थिति	दक्षिण बिहार; गंगा और सोन नदियों के मध्य
राजधानियाँ	गिरिव्रज/राजगृह (प्रारम्भ), पाटलिपुत्र (बाद में)
प्रमुख राजवंश	हर्यंक, शिशुनाग, नंद, मौर्य – क्रमशः
प्रमुख शासक	बिम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद, चंद्रगुप्त मौर्य
शक्ति के कारण	लोहे की खानें; उपजाऊ भूमि; गंगा-व्यापार; कुशल कूटनीति
धार्मिक महत्त्व	बुद्ध का ज्ञान-प्राप्ति क्षेत्र; महावीर का निर्वाण यहीं
आर्थिक आधार	कृषि, व्यापार, खनन (लोहा, सोना)
सैन्य शक्ति	हस्ति-सेना, रथ-सेना, नौ-सेना – चतुरंगिणी

> पाटलिपुत्रं महानगरं। तत्र हि सर्वे व्यापाराः।
>
> पाटलिपुत्रेण विना न किञ्चिद् वाणिज्यमस्ति।।
>
> – अर्थशास्त्र – कौटिल्य

(पाटलिपुत्र एक महानगर है। वहाँ सभी प्रकार के व्यापार होते हैं। पाटलिपुत्र के बिना वाणिज्य की कल्पना नहीं की जा सकती।)

8.3.2 कोशल – भगवान राम की भूमि

कोशल प्राचीन भारत का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और समृद्ध राज्य था। यह रामायण की पृष्ठभूमि है – अयोध्या इसी की राजधानी थी:

विशेषता	विवरण
भौगोलिक स्थिति	अवध क्षेत्र (उत्तर प्रदेश); सरयू नदी के तट पर
राजधानी	श्रावस्ती (उत्तरी कोशल) और अयोध्या
प्रमुख शासक	प्रसेनजित (बुद्ध के समकालीन); इक्ष्वाकु वंश
धार्मिक महत्त्व	भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या; बुद्ध का श्रावस्ती प्रवास
आर्थिक विशेषता	उपजाऊ भूमि; श्रावस्ती – व्यापार का प्रमुख केंद्र
बाद का इतिहास	अजातशत्रु ने कोशल को मगध में मिलाया

कोशल का शासक प्रसेनजित बुद्ध का समकालीन और संरक्षक था। श्रावस्ती में अनाथपिंडक (सुदत्त) द्वारा जेतवन विहार बुद्ध और संघ को दान किया गया, जहाँ बुद्ध ने अनेक वर्षावास व्यतीत किए। परंपरा के अनुसार प्रसेनजित की बहन कोसलदेवी का विवाह मगध-राजा बिंबिसार से हुआ और दहेज में काशी का एक भाग दिया गया, जिससे दोनों राज्यों में संबंध बने, परंतु

बाद में संघर्ष भी हुआ। अंततः कोशल मगध की बढ़ती शक्ति के सामने कमजोर हो गया और उसमें विलीन हो गया।

8.3.3 वज्जि संघ – विश्व का प्रथम गणतंत्र

वज्जि संघ (Vajjian Confederacy) प्राचीन विश्व की सर्वाधिक उल्लेखनीय राजनीतिक संस्थाओं में से एक थी। यह आठ छोटे-छोटे गणराज्यों का एक परिसंघ था:

वज्जि संघ के सदस्य-राज्य	राजधानी	विशेषता
लिच्छवि (सर्वप्रमुख)	वैशाली	सर्वाधिक शक्तिशाली; बुद्ध की मातामही यहाँ
विदेही	मिथिला	राजा जनक की भूमि; सीता की जन्मभूमि
ज्ञातृक	वैशाली क्षेत्र	महावीर का जन्म यहाँ
उग्र	वैशाली क्षेत्र	लिच्छवि के सहयोगी
भोग	वैशाली क्षेत्र	वैशाली के पूर्व में
कौरव	वैशाली क्षेत्र	लिच्छवि सहयोगी
इक्ष्वाकु	-	पूर्वी वज्जि क्षेत्र
चेटक का कुल	वैशाली	महावीर के संबंधी; जैन परंपरा

वज्जि संघ की शासन-व्यवस्था – 'लिच्छवि गणतंत्र' के सात स्वर्णिम नियम (बुद्ध द्वारा वर्णित):

1. नियमित सभाएँ (सन्निपात) करना और सहमति से निर्णय लेना।
2. एकमत से निर्णय लेना – अल्पमत का सम्मान।
3. वृद्धों और परिषद-सदस्यों का आदर करना।
4. स्त्रियों और बालकों की सुरक्षा करना।

5. चैत्यों (पवित्र स्थलों) की रक्षा करना।
6. अर्हतों (सिद्ध व्यक्तियों) की देखभाल करना।
7. श्रेष्ठ व्यक्तियों का सत्कार करना।

यह सात नियम आधुनिक संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांतों से कितने मिलते-जुलते हैं!

8.3.4 काशी – ज्ञान और व्यापार का केंद्र

काशी (वाराणसी) प्राचीन भारत का सर्वाधिक पवित्र और ऐतिहासिक नगर है। यह न केवल एक महाजनपद था बल्कि भारतीय सभ्यता का प्रतीक-नगर है:

विशेषता	विवरण
भौगोलिक स्थिति	गंगा-वरुणा-असि के संगम पर; पूर्वी उत्तर प्रदेश
राजधानी	वाराणसी (वरणा+असि से निर्मित नाम)
धार्मिक महत्त्व	शिव की नगरी; मोक्षदायिनी; सारनाथ (5 कि.मी.) – बुद्ध का प्रथम उपदेश
व्यापारिक महत्त्व	वस्त्र-उद्योग; बनारसी सिल्क; गंगा-व्यापार का केंद्र
शैक्षिक महत्त्व	संस्कृत-पंडितों का केंद्र; काशी विश्वनाथ-परंपरा
कलात्मक महत्त्व	संगीत, नृत्य, कविता – काशी का शास्त्रीय संगीत
बाद का इतिहास	मगध ने काशी को अधिग्रहित किया

काशी का नाम जातक-कथाओं में बार-बार आता है, जहाँ इसे समृद्ध राज्य बताया गया है और कई कथाओं में काशी के राजा ब्रह्मदत्त का उल्लेख मिलता है। प्रारंभ में काशी बहुत शक्तिशाली

था, किंतु कोशल से लंबे संघर्ष के बाद वह कोशल राज्य का भाग बन गया। काशी के निकट सारनाथ (ऋषिपतन/इसिपतन) में बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश --- धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्त --- दिया, जिससे यह स्थान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थों में सम्मिलित हुआ।

8.3.5 गांधार – पश्चिम का द्वार

गांधार प्राचीन भारत का सर्वाधिक पश्चिमी महाजनपद था। यह मध्य एशिया, फारस और भारत के मध्य व्यापारिक और सांस्कृतिक सेतु था:

विशेषता	विवरण
भौगोलिक स्थिति	वर्तमान पाकिस्तान का पश्चिमोत्तर (पेशावर और रावलपिंडी क्षेत्र)
राजधानी	तक्षशिला (Taxila) – विश्वविद्यालय-नगर
सांस्कृतिक महत्त्व	गांधार-शैली मूर्तिकला (ग्रीको-बौद्ध कला)
शैक्षिक महत्त्व	तक्षशिला विश्वविद्यालय – कौटिल्य, चाणक्य यहाँ के
व्यापारिक महत्त्व	सिल्क रोड पर प्रमुख पड़ाव; मध्य एशिया-भारत व्यापार
फारसी प्रभाव	अचेमेनिद फारसी साम्राज्य का हिस्सा रहा (518-326 ई.पू.)
यूनानी प्रभाव	सिकंदर का आगमन (326 ई.पू.); यूनानी-भारतीय कला-समन्वय

गांधार से जुड़ा एक महान नाम पाणिनि का है, जिन्होंने संस्कृत व्याकरण का अद्वितीय ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' रचा; परंपरा के अनुसार उनका जन्म शलातुर (गांधार क्षेत्र) में हुआ था। तक्षशिला में वेद, व्याकरण, चिकित्सा, धनुर्विद्या और राजनीति जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। बौद्ध परंपरा के अनुसार बुद्ध के चिकित्सक जीवक ने भी वहीं शिक्षा प्राप्त की थी। गांधार कला-शैली में बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी-रोमन प्रभाव के साथ गढ़ी गईं, जिसे ग्रीको-बौद्ध कला कहा जाता है।

8.3.6 अवंति – पश्चिम का शक्ति-केंद्र

अवंति (उज्जैन) मध्य भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद था। यह मगध के बाद सबसे प्रभावशाली राज्य था:

विशेषता	विवरण
भौगोलिक स्थिति	मध्य प्रदेश; मालवा पठार; नर्मदा और क्षिप्रा नदी क्षेत्र
राजधानियाँ	उज्जैन (उत्तरी अवंति) और माहिष्मती (दक्षिणी)
प्रमुख शासक	चंड प्रद्योत (बुद्ध के समकालीन); महासेन
धार्मिक महत्त्व	12 ज्योतिर्लिंगों में महाकालेश्वर; उज्जैन – धार्मिक नगर
खगोलशास्त्र	कर्क-रेखा का नगर; मध्याह्न-रेखा का प्राचीन केंद्र
व्यापारिक महत्त्व	उत्तर-दक्षिण व्यापार-मार्ग का केंद्र
कलात्मक विरासत	विक्रमोर्वशीयम्; कालिदास और उज्जैन का संबंध

अवंति की शक्ति का एक कारण यहाँ के लौह-अयस्क भंडार और लौह-उद्योग को माना जाता है, जिससे अस्त्र-शस्त्र निर्माण में उसे लाभ मिला। चंड प्रद्योत के काल में अवंति और मगध के बीच प्रतिद्वंद्विता रही। परंपरा के अनुसार बाद में शिशुनाग वंश के शासकों ने अवंति को मगध में मिला लिया। मौर्य काल में उज्जयिनी महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र रही --- अशोक स्वयं युवराज के रूप में यहाँ के प्रांतपति रहे। उज्जयिनी आगे चलकर खगोलशास्त्र और संस्कृत साहित्य का भी प्रमुख केंद्र बनी।

8.3.7 अन्य महत्त्वपूर्ण महाजनपद

शेष दस महाजनपदों का संक्षिप्त विवरण:

महाजनपद	राजधानी	क्षेत्र	विशेष उपलब्धि
मल्ल	कुशीनगर/पावा	पूर्वी उ.प्र.	बुद्ध का महापरिनिर्वाण; लोकतांत्रिक संस्थाएँ

वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद क्षेत्र	उदयन-गाथाएँ; बुद्धकाल का प्रसिद्ध राज्य
पांचाल	अहिच्छत्र	उ.प्र. (बरेली-फर्रुखाबाद)	महाभारत की पृष्ठभूमि; द्रौपदी की भूमि
कुरु	हस्तिनापुर	दिल्ली-मेरठ	महाभारत; धर्मराज युधिष्ठिर; कुरुक्षेत्र
मत्स्य	विराटनगर	जयपुर (राजस्थान)	पांडव का अज्ञातवास; मत्स्य-मार्कण्डेय
शूरसेन	मथुरा	मथुरा-आगरा	कृष्ण की जन्मभूमि; यादव-संघ
अंग	चंपा	भागलपुर (बिहार)	कर्ण का राज्य; महाभारत; जूट-व्यापार
चेदि	शुक्तिमती	बुंदेलखंड	शिशुपाल – कृष्ण-विरोधी; महाभारत
अश्मक	पोटन/पैठान	गोदावरी तट	एकमात्र दक्षिणी महाजनपद; बुद्धकाल
कांभोज	राजपुर	अफगान सीमा	गणतंत्र; घुड़सवारी और सैन्य-विद्या

8.4 अपनी प्रगति जाँचें – 1 (Check Your Progress – 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ _____ में मिलता है।

□ वज्जि संघ में कुल _____ सदस्य-राज्य थे जिनमें _____ सर्वप्रमुख था।

□ गांधार की राजधानी _____ थी जो _____ विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध थी।

□ अवंति की दो राजधानियाँ _____ और _____ थीं।

(ब) सही (✓) या गलत (X) बताइए:

□ काशी (वाराणसी) मगध की राजधानी थी।
( )

□ मल्ल महाजनपद एक गणतांत्रिक राज्य था।
( )

□ अश्मक उत्तर भारत का एकमात्र महाजनपद था।
( )

□ शूरसेन की राजधानी मथुरा थी जो कृष्ण से संबंधित है।
( )

8.5 लघु गणराज्य: प्राचीन भारत की लोकतांत्रिक विरासत

8.5.1 शाक्य गणराज्य – गौतम बुद्ध की जन्मभूमि

शाक्य गणराज्य एक छोटा परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण गणराज्य था। यहीं कपिलवस्तु में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ जो बाद में गौतम बुद्ध बने:

विशेषता	विवरण
राजधानी	कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल-भारत सीमा पर)
शासन-प्रणाली	गणतंत्र; राजसभा द्वारा सामूहिक शासन
प्रमुख परिवार	शुद्धोदन (बुद्ध के पिता); गोपिका, यशोधरा
ऐतिहासिक महत्त्व	बुद्ध का जन्म (563 ई.पू.) – विश्व-इतिहास का निर्णायक क्षण
भौगोलिक स्थिति	नेपाल की तराई; हिमालय की तलहटी
पतन	विरुधक कोशल-शासक ने शाक्यों का विनाश किया

शाक्यों का राज्य कोशल के अधीन था, फिर भी उनकी शासन-व्यवस्था गणतांत्रिक थी, जिसमें महत्त्वपूर्ण निर्णय 'संस्थागार' (सभा-भवन) में लिए जाते थे। बुद्ध का जन्म लुंबिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ, जहाँ अशोक ने लगभग 249 ई.पू. में स्तंभ स्थापित कर उसे अभिलेखित किया। कपिलवस्तु की पहचान नेपाल के तिलौराकोट अथवा भारत के उत्तर प्रदेश के पिपरहवा से की जाती है। यहाँ से प्राप्त पुरावशेषों से बौद्ध इतिहास को पुरातात्त्विक आधार मिलता है।

8.5.2 कोलिय, मोरिय और अन्य लघु गणराज्य

महाजनपदों के अतिरिक्त अनेक छोटे गणराज्य भी थे जो भारतीय लोकतांत्रिक परंपरा के प्रमाण हैं:

गणराज्य	स्थान	ऐतिहासिक महत्त्व
कोलिय	देवदह (नेपाल)	यशोधरा (बुद्ध की पत्नी) का घर; शाक्यों के पड़ोसी
मोरिय/मौर्य	पिप्पलिवन	चंद्रगुप्त मौर्य का मूल; मौर्य साम्राज्य का उद्गम
भग्ग	सुंसुमारगिरि (झाँसी)	बुद्ध के समकालीन; घड़ियाल-संरक्षण की कथा
बुली	अल्लकप्प (बिहार)	बुद्ध की अस्थि-भस्म का एक भाग मिला
कलाम	वेसाली क्षेत्र	आलार कलाम – बुद्ध के प्रथम गुरु
विदेह	मिथिला (जनकपुर)	राजा जनक की भूमि; नचिकेता-उपाख्यान; सीता
रम्मग्राम	काशी के समीप	बुद्ध की अस्थि का एक कलश यहाँ; नागों ने रक्षा की

8.5.3 महाजनपद-काल की समाप्ति: मगध साम्राज्य का उदय

महाजनपद-काल का अंत मगध के क्रमिक विस्तार से हुआ। अजातशत्रु (492-460 ई.पू.) ने वज्जि संघ और कोशल को जीता। नंद-वंश ने शेष महाजनपदों को मगध में मिला लिया। अंततः चंद्रगुप्त मौर्य (321 ई.पू.) ने नंदों को उखाड़कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की – जो भारत का प्रथम विशाल एकीकृत साम्राज्य था:

चरण	घटना
प्रथम चरण	बिम्बिसार का विस्तार; काशी, अंग पर अधिकार
द्वितीय चरण	अजातशत्रु – वज्जि संघ और कोशल पर विजय
तृतीय चरण	शिशुनाग वंश – अवंति को मगध में मिलाया

चतुर्थ चरण	नंद वंश – पहली बार समस्त उत्तर भारत एकीकृत
पंचम चरण	चंद्रगुप्त मौर्य – मौर्य साम्राज्य; लगभग संपूर्ण भारत

8.6 अपनी प्रगति जाँचें – 2 (Check Your Progress – 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

- शाक्य गणराज्य का ऐतिहासिक महत्त्व क्यों है?
- वज्जि संघ के सात स्वर्णिम नियमों में से कोई तीन बताइए।
- मगध साम्राज्य के उदय के पाँच प्रमुख चरण कौन-से थे?
- 'कोलिय गणराज्य' किस प्रकार बुद्ध के जीवन से जुड़ा है?

8.7 भाग-ब: प्राचीन भारत में समुद्री वाणिज्य

8.7.1 भारतीय समुद्री परंपरा का उद्गम और महत्त्व

भारत तीन समुद्रों से घिरा है – अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर। यह भौगोलिक स्थिति भारत को स्वाभाविक रूप से एक समुद्री-राष्ट्र बनाती है। भारतीय नाविक और व्यापारी सहस्राब्दियों तक हिंद महासागर के 'स्वामी' रहे।

ऋग्वेद में 'समुद्र-यात्रा' का उल्लेख है जो भारतीय समुद्री चेतना की प्राचीनता का प्रमाण है:

> समुद्रं गच्छतां नावं पूर्णां वसुना सदा।
> आपो दिव्या उत पृश्निः समुद्रः।।
> – ऋग्वेद 7.88.3 / अथर्ववेद

(जहाज जो वस्तुओं से भरे समुद्र को जाते हैं – वे दिव्य जल और विशाल समुद्र को पार करते हैं।)

भारतीय समुद्री परंपरा के विकास-क्रम का सिंहावलोकन:

काल	समुद्री गतिविधि
सिंधु-सभ्यता (2600-1900 ई.पू.)	लोथल डॉकयार्ड; मेसोपोटामिया व्यापार; 'सेलर सील'
वैदिक काल (1500-600 ई.पू.)	समुद्र-यात्रा के ऋग्वेद-उल्लेख; 'शत-आरित्र' (100 पतवार) जहाज
महाजनपद काल (600-300 ई.पू.)	ताम्रलिप्ति, भृगुकच्छ के व्यापार; नौ-व्यापार में वृद्धि
मौर्य काल (321-185 ई.पू.)	कौटिल्य की नौ-नीति; नौ-सेनाध्यक्ष; तटीय व्यापार
सातवाहन काल (230 ई.पू.-220 ई.)	रोमन व्यापार का स्वर्ण-काल; अरब सागर से व्यापार
गुप्त काल (320-550 ई.)	समुद्री व्यापार का 'सुवर्ण युग'; इंडोनेशिया-चीन तक
चोल काल (9-13वीं शती)	चोल नौसेना – विश्व की सर्वशक्तिमान; श्रीविजय अभियान
विजयनगर (14-16वीं शती)	कालीकट बंदरगाह; अरब-यूरोपीय व्यापार
मुगल काल (16-18वीं शती)	सूरत बंदरगाह; ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रवेश

8.7.2 लोथल: विश्व का प्राचीनतम डॉकयार्ड

लोथल (गुजरात, लगभग 2400 ई.पू.) सिंधु-सभ्यता का एक प्रमुख नगर था जहाँ विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड (बंदरगाह) मिला है। यह भारतीय समुद्री वाणिज्य की 4500 वर्ष पुरानी परंपरा का जीवंत प्रमाण है:

लोथल की विशेषता	विवरण
डॉकयार्ड का आकार	216 मीटर × 37 मीटर; ईंट-निर्मित; ज्वार-भाटा नियंत्रित
जल-प्रबंधन	गेट-व्यवस्था जो जहाजों को अंदर-बाहर जाने देती थी
गोदाम (Warehouse)	उत्खनन में 65 'मुहरें' (Seals) मिलीं; माल-प्रबंधन का साक्ष्य
मेसोपोटामिया संपर्क	लोथल में 'पर्सियन गल्फ' शैली की मुहरें मिलीं
निर्यात वस्तुएँ	मनके, हाथी-दाँत, ताँबे की वस्तुएँ, कपास, मसाले
आयात	सोना, चाँदी, टिन, अर्ध-मूल्यवान पत्थर
दिशा-निर्धारण	लोथल में 'कम्पास' जैसे यंत्र के प्रमाण मिले हैं

8.7.3 वैदिक-काल से मौर्य-काल तक की समुद्री परंपरा

वैदिक ग्रंथों में समुद्र-यात्रा और व्यापार के अनेक उल्लेख मिलते हैं। अथर्ववेद (7.12) में जहाजों और नाविकों का वर्णन है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नौसेना और समुद्री व्यापार के लिए एक विशेष अधिकारी 'नावाध्यक्ष' (Superintendent of Ships) का उल्लेख है:

कौटिल्य का 'नावाध्यक्ष' अध्याय:

- नदियों, झीलों और समुद्र पर चलने वाले जहाजों का नियमन।
- नाविकों (नाविक) की योग्यता-परीक्षा और नियुक्ति।
- जहाजों पर माल-सूची (Manifest) रखने का नियम।
- बंदरगाह-कर (Port Duties) का निर्धारण।
- जल-डकैतों (Pirates) के विरुद्ध कार्रवाई।
- तूफान में फँसे व्यापारियों की सहायता का प्रावधान।

मौर्य काल में समुद्री संपर्क और अधिक विस्तृत हुआ। अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु श्रीलंका भेजा, जिन्होंने समुद्री मार्ग का उपयोग किया --- यह भारतीय सांस्कृतिक विस्तार का प्रारंभिक उदाहरण है। ताम्रलिप्ति (बंगाल) पूर्वी तट का प्रमुख बंदरगाह था, जहाँ से श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया की ओर जहाज़ जाते थे। इन प्रयासों ने आगे चलकर दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति के प्रसार की भूमिका तैयार की।

8.7.4 हिंद-रोम व्यापार: प्रथम वैश्विक व्यापार का स्वर्ण-युग

ईसा पूर्व 1ली शती से लेकर 5वीं शती ई. तक भारत और रोमन साम्राज्य के बीच एक विशाल और समृद्ध समुद्री व्यापार चला। यह मानव-इतिहास के प्रथम व्यापक 'वैश्वीकरण' का उदाहरण है:

भारत-रोम व्यापार — मुख्य तथ्य:

व्यापार का पक्ष	भारत → रोम	रोम → भारत
मुख्य वस्तुएँ	काली मिर्च, मलमल, हाथी-दाँत, रत्न, लाह	सोने-चाँदी के सिक्के, काँच, शराब (Wine), ताँबा
व्यापार-मार्ग	मुजिरिस, भृगुकच्छ → अदन → रोम	अलेक्जेंड्रिया → अरब → मुजिरिस
परिमाण	प्लिनी के अनुसार 50 मिलियन सेस्टर्शियस/वर्ष का आयात	रोम का स्वर्ण-व्यय; व्यापार-घाटा
प्रमाण	दक्षिण भारत में रोमन सोने के सिक्के	मुजिरिस पपाइरस; ताबर्न ऑफ पेपर
जहाज	भारतीय जहाज बड़े और कुशल; मानसून का उपयोग	रोमन व्यापारी मुजिरिस तक आते थे

रोमन लेखक प्लिनी द एल्डर (23-79 ई.) ने अपनी 'Natural History' में लिखा:

> India draws our gold away with her merchandise.
>
> In no year does India absorb less than 50 million sesterces
>
> from Rome.
>
> – Pliny the Elder, Natural History VI.101

(भारत हमारा सोना अपनी वस्तुओं से खींच लेती है। किसी भी वर्ष भारत रोम से 50 मिलियन सेस्टर्शियस से कम नहीं लेती।)

8.7.5 प्राचीन भारतीय बंदरगाह: पश्चिमी तट

भारत के पश्चिमी तट (अरब सागर) पर अनेक समृद्ध बंदरगाह थे जो अरब, फारस, रोम और अफ्रीका से व्यापार का केंद्र थे:

बंदरगाह	आधुनिक स्थान	काल	प्रमुख व्यापार
लोथल	गुजरात	2400 ई.पू.	विश्व का प्राचीनतम डॉकयार्ड; मेसोपोटामिया
भृगुकच्छ (Bharuch)	गुजरात	500 ई.पू. से	रोम, अरब, ग्रीस; पेरीप्लस में उल्लिखित
सुपारक (Sopara)	मुम्बई के पास	300 ई.पू. से	अशोक का शिलालेख; प्राचीन व्यापारिक केंद्र
कल्याण	ठाणे (मुम्बई)	मौर्य काल से	शक, कुषाण काल में प्रमुख; सातवाहन
मुजिरिस (Kodungallur)	केरल	200 ई.पू.	रोमन-भारत व्यापार का प्रमुख केंद्र; पेपर में उल्लेख

नेलसिंडा (Kottayam)	केरल	200 ई.पू.	पेरीप्लस-उल्लिखित; काली मिर्च-व्यापार
बेयपोर	कोझिकोड (केरल)	प्राचीन से	जहाज-निर्माण परंपरा – 'ऊरु' नौका आज भी
कालीकट (Kozhikode)	केरल	मध्यकाल	अरब व्यापारियों का केंद्र; वास्को-दि-गामा 1498
मंगलौर	कर्नाटक	6वीं शती से	अरब व्यापार; नारियल-व्यापार; मसाले

8.7.6 प्राचीन भारतीय बंदरगाह: पूर्वी तट

भारत के पूर्वी तट (बंगाल की खाड़ी) पर भी अनेक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह थे जो दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन और श्रीलंका से व्यापार करते थे:

बंदरगाह	आधुनिक स्थान	काल	प्रमुख व्यापार
ताम्रलिप्ति (Tamluk)	पश्चिम बंगाल	500 ई.पू. से	बर्मा, श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया; बौद्ध-यात्री
कावेरीपट्टनम	तमिलनाडु	200 ई.पू.-500 ई.	चोल; रोमन व्यापार; पत्तिनप्पालै काव्य में
नागपट्टनम	तमिलनाडु	600 ई. से	चीन, श्रीलंका; बौद्ध मठ; चोल नौसेना-केंद्र
पुहर (पुहर/कावेरी)	तमिलनाडु	200 ई.पू.	शिलप्पदिकारम् में वर्णित; समृद्ध बंदरगाह-नगर
महाबलीपुरम्	तमिलनाडु	7वीं-8वीं शती	पल्लव; दक्षिण-पूर्व एशिया व्यापार
कोरकाई (Korkai)	तमिलनाडु	200 ई.पू.	मोती-व्यापार; पांड्य साम्राज्य का प्राचीन बंदरगाह

मसुलीपट्टनम्	आंध्र प्रदेश	300 ई.पू. से	कृष्णा-डेल्टा; रोमन, डच, अंग्रेज व्यापार
विशाखापट्टनम	आंध्र प्रदेश	मध्यकाल	पूर्वी घाट का प्रमुख बंदरगाह; आंध्र राज्य

8.7.7 पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी: भारतीय व्यापार का यूनानी विवरण

'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' (लगभग 60-100 ई.) एक अज्ञात यूनानी नाविक द्वारा लिखित वह अमूल्य ग्रंथ है जो भारत के समुद्री व्यापार का प्रथम-हस्त विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें भारत के बंदरगाहों, व्यापारिक वस्तुओं और मार्गों का विस्तृत वर्णन है:

- भृगुकच्छ (Barygaza) – 'सर्वाधिक बड़ा भारतीय बंदरगाह; यहाँ से कपास, मलमल, नील, हिंग, लाख निर्यात होते थे।'
- मुजिरिस (Muziri) – 'काली मिर्च का प्रमुख बाजार; यहाँ सदा यूनानी और रोमन जहाज लगे रहते थे।'
- लिमीरिक (Quilon, केरल) – 'यहाँ से इलायची और हल्दी का निर्यात।'
- तगारा (औरंगाबाद) – 'आंतरिक व्यापारिक केंद्र; कपड़ा और चमड़े के उत्पाद।'
- पैठान (Pratishthana) – 'दक्कन का प्रमुख व्यापार-केंद्र; भृगुकच्छ से 10 दिन की यात्रा।'

8.8 अपनी प्रगति जाँचें – 3 (Check Your Progress – 3)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' एक _____ नाविक द्वारा लगभग _____ ई. में लिखा गया।

□ लोथल में मिला डॉकयार्ड लगभग _____ ई.पू. का है और _____ में स्थित है।

□ रोमन लेखक _____ ने भारत से 50 मिलियन सेस्टर्शियस/वर्ष के स्वर्ण-व्यय का उल्लेख किया।

□ ताम्रलिप्ति बंदरगाह वर्तमान _____ राज्य में स्थित है।

(ब) सही मिलान कीजिए:

बंदरगाह (स्तम्भ-अ)	तट/क्षेत्र (स्तम्भ-ब)
मुजिरिस	पूर्वी तट (पश्चिम बंगाल)
ताम्रलिप्ति	पश्चिमी तट (गुजरात)
भृगुकच्छ	पश्चिमी तट (केरल)
कावेरीपट्टनम	पूर्वी तट (तमिलनाडु)
नागपट्टनम	पूर्वी तट (तमिलनाडु)

8.9 चोल नौसेना और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय विस्तार

8.9.1 चोल साम्राज्य की समुद्री शक्ति

चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी) ने प्राचीन विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली नौसेनाओं में से एक का निर्माण किया। राजराज चोल प्रथम (985-1014 ई.) और राजेंद्र चोल प्रथम (1014-1044 ई.) के काल में चोल नौसेना अपनी चरम-शक्ति पर थी:

चोल समुद्री उपलब्धि	विवरण
श्रीलंका-विजय (993 ई.)	राजराज चोल; श्रीलंका पर पूर्ण नियंत्रण
श्रीविजय अभियान (1025 ई.)	राजेंद्र चोल; सुमात्रा, मलेशिया, बर्मा तक — विश्व-इतिहास का एक अनूठा समुद्री अभियान
मालदीव और लक्षद्वीप	चोल नौसेना का नियंत्रण; व्यापारिक केंद्र

नगपट्टनम बंदरगाह	चोल नौसेना का मुख्यालय; चीन-व्यापार
चीन से संबंध	चोल दूत-मंडल चीन भेजे गए; व्यापार-संधियाँ
श्रेणी (Trade Guild)	'नानादेशी', 'मणिग्रामम्' – समुद्री व्यापार-संघ
नाविक-तकनीक	ध्रुव-तारे से दिशा-ज्ञान; मानसून का उपयोग; नक्षत्र-नेविगेशन

चोल-काल के एक तमिल शिलालेख में वर्णित है:

> कडल कोंड चोल मन्नन्
>
> (समुद्र को जीतने वाले चोल-राजा)
>
> – चोल शिलालेख – ताँजावुर

8.9.2 दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय सांस्कृतिक प्रसार

भारतीय समुद्री व्यापारी और नाविक केवल माल ही नहीं ले जाते थे – वे संस्कृति, धर्म, भाषा और कला का भी प्रसार करते थे। आज भी दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय सांस्कृतिक विरासत की गहरी छाप है:

देश	भारतीय प्रभाव	प्रमुख प्रमाण
इंडोनेशिया	हिंदू-बौद्ध धर्म; संस्कृत भाषा	बोरोबुदुर (बौद्ध), प्रम्बानन (हिंदू) – UNESCO
कम्बोडिया (कंपूचिया)	खमेर हिंदू राज्य; संस्कृत-शिलालेख	अंगकोर वाट – विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर
मलेशिया	हिंदू-बौद्ध संस्कृति	केडाह का 'लंगकसुका'; रामायण-महाभारत की लोक-परंपरा
थाईलैंड	'स्याम' = श्याम; थेरवाद बौद्ध	बैंकॉक का 'एमराल्ड बुद्धा'; रामायण-आधारित नृत्य
म्यांमार (बर्मा)	थेरवाद बौद्ध; पाली भाषा	ताम्रलिप्ति से बौद्ध-प्रचारक; 'स्वर्णभूमि'

श्रीलंका	बौद्ध धर्म; संस्कृत; महावंश	अशोक के पुत्र महेंद्र ने बौद्ध धर्म का प्रसार किया
फिलीपींस	हिंदू-मुस्लिम समन्वय	'माराग्टास' – प्राचीन भारतीय कानून-संग्रह
वियतनाम	चंपा हिंदू राज्य (192-1832 ई.)	माय सन मंदिर-स्थल; UNESCO

8.10 भारतीय नाविक-विज्ञान: जहाज-निर्माण और नेविगेशन

8.10.1 प्राचीन भारतीय जहाज-निर्माण

भारतीय जहाज-निर्माण की परंपरा अत्यंत प्राचीन और उन्नत थी। प्राचीन भारतीय जहाज यूरोपीय जहाजों से कहीं बड़े और अधिक समुद्र-योग्य थे:

- 'शतआरित्र' (Shata-arita): ऋग्वेद में 100 पतवारों वाले जहाज का उल्लेख। इसका अर्थ है जहाज अत्यंत बड़े और जटिल थे।
- 'धौम्यास्था' (Teak wood): सागौन की लकड़ी से जहाज-निर्माण – यह परंपरा आज भी केरल के बेयपोर में जीवित है।
- बेयपोर की 'ऊरु' नाव: आज भी बनाई जाती है; 400 वर्ष से अधिक पुरानी परंपरा।
- जहाजों का आकार: मार्कोपोलो के अनुसार भारतीय जहाज 4-5 मस्तूलों वाले और 600-700 यात्रियों को ले जाने में सक्षम थे।
- लाख और मोम से जलरोधक: जहाजों की लकड़ी को लाख और मोम से जलरोधक बनाया जाता था – यह एक विशेष भारतीय तकनीक थी।

8.10.2 भारतीय नेविगेशन: मानसून और तारों का विज्ञान

भारतीय नाविकों ने मानसून (हिंद महासागर की मौसमी वायु) का उपयोग व्यापार के लिए करने की कला सर्वप्रथम विकसित की। यह खोज उन्हें अरब और अफ्रीकी तटों तक पहुँचाती थी:

नेविगेशन तकनीक	विवरण
मानसून का उपयोग	ग्रीष्म-मानसून (SW) से भारत→अरब; शीतकालीन (NE) से वापसी
हिप्पलस की 'खोज' (?)	यूनानी नाविक हिप्पलस ने 45 ई.पू. में मानसून 'खोजा' – परंतु भारतीय नाविक पहले से जानते थे
ध्रुव-तारे से दिशा	रात को 'ध्रुव' तारे से उत्तर का निर्धारण; दिन को सूर्य से
तटीय चिह्न	नारियल के वृक्ष, पक्षियों की उड़ान, समुद्र के रंग से स्थान-निर्धारण
'काटी' या 'राश्ट्रमंडल'	भारतीय दिशा-निर्धारण यंत्र – एक प्रकार का मध्यकालीन Sextant
अगस्त्य-संहिता	दक्षिण-भारतीय नाविकों के लिए नौ-विद्या ग्रंथ
'समुद्र-विद्या'	नाविकों की विशेष शिक्षा-परंपरा; पीढ़ी-दर-पीढ़ी

8.11 अपनी प्रगति जाँचें – 4 (Check Your Progress – 4)

(अ) एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:

- □ भारतीय नाविकों ने मानसून का व्यापार के लिए किस प्रकार उपयोग किया?
- □ चोल साम्राज्य के 'श्रीविजय अभियान' (1025 ई.) का क्या महत्त्व था?
- □ अंगकोर वाट किस देश में है और यह भारतीय समुद्री प्रसार का प्रमाण कैसे है?
- □ 'बेयपोर की ऊरु नाव' की क्या विशेषता है?

(ब) तालिका पूर्ण कीजिए:

समुद्री अभियान	**चोल शासक**
श्रीलंका-विजय	_____
श्रीविजय अभियान	_____
मालदीव नियंत्रण	_____

8.12 समकालीन प्रासंगिकता: जनपद और समुद्री परंपरा आज

8.12.1 जनपद परंपरा और आधुनिक भारत

प्राचीन जनपदों की परंपरा आधुनिक भारत में अनेक रूपों में जीवंत है:

- 73वाँ संविधान संशोधन (1992): पंचायती राज – प्राचीन ग्राम-जनपद की आधुनिक अभिव्यक्ति।
- राज्यों का गठन: भारतीय संघ के राज्य अनेकांशों में प्राचीन जनपदों की भौगोलिक इकाइयों पर आधारित हैं।
- 'वज्जि' की विरासत: बिहार में 'वैशाली' जनपद आज भी है – विश्व के प्रथम गणतंत्र की धरती।
- लोकतांत्रिक चेतना: भारत में 'ग्राम-सभा' की परंपरा वज्जि संघ की 'सन्निपात' परंपरा की निरंतरता है।
- राज्यसभा और लोकसभा: ऋग्वेद की 'सभा' और 'समिति' के आधुनिक रूप।

8.12.2 भारतीय समुद्री परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्ति

भारत की समुद्री विरासत आज 'SAGARMALA' और 'Maritime India Vision 2030' के रूप में पुनर्जीवित हो रही है:

आधुनिक पहल	प्राचीन परंपरा से संबंध
SAGARMALA योजना	प्राचीन बंदरगाहों का आधुनिकीकरण; समुद्री कनेक्टिविटी
Maritime India Vision 2030	चोल नौसेना की विरासत; हिंद महासागर में नेतृत्व
'Project Mausam' (UNESCO)	मानसून आधारित भारतीय व्यापार-मार्गों की पुनर्खोज
QUAD और हिंद-प्रशांत नीति	प्राचीन भारतीय हिंद महासागर-नीति का विस्तार
नालंदा विश्वविद्यालय पुनर्निर्माण	समुद्री मार्ग से आए विदेशी विद्यार्थियों की परंपरा
Blue Economy नीति	प्राचीन भारतीय 'समुद्र' – आर्थिक समृद्धि का स्रोत
INS विक्रांत (नया)	स्वदेशी नौसेना-निर्माण; चोल परंपरा का सम्मान

8.12.3 NEP 2020 और भारतीय जनपद-समुद्री विरासत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत इन विषयों का शैक्षिक महत्त्व अत्यंत व्यापक है:

- राजनीतिक जागरूकता: प्राचीन जनपदों के अध्ययन से विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक चेतना का विकास।
- समुद्री गौरव: भारत की 7500 किमी लंबी तटरेखा और समुद्री विरासत का बोध।
- आर्थिक दृष्टि: 'ब्लू इकोनॉमी' की संभावनाओं को समझने के लिए प्राचीन व्यापार-परंपरा का ज्ञान।
- सांस्कृतिक संपर्क: दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय सांस्कृतिक प्रसार – 'एक्ट ईस्ट' नीति की पृष्ठभूमि।
- वैश्विक दृष्टि: हिंद महासागर में भारत की ऐतिहासिक और रणनीतिक भूमिका।

8.13 सारांश (Summary)

इस अध्याय में प्राचीन भारत के प्रमुख जनपदों और समुद्री वाणिज्य का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. जनपद का उद्गम: वैदिक काल के 'जन' से लेकर 'जनपद' और फिर 'महाजनपद' तक – यह भारत की राजनीतिक-विकास यात्रा है।
2. 16 महाजनपद: अंगुत्तरनिकाय में वर्णित 16 महाजनपद 600-300 ई.पू. के भारत की राजनीतिक संरचना थे – जिनमें राजतंत्र और गणतंत्र दोनों थे।
3. मगध का महत्त्व: पाटलिपुत्र केंद्रित मगध सर्वाधिक शक्तिशाली था जो मौर्य साम्राज्य की नींव बना।
4. वज्जि संघ: विश्व के प्रथम ज्ञात गणतंत्र के 7 स्वर्णिम नियम आधुनिक संसदीय लोकतंत्र के पूर्वगामी हैं।
5. लघु गणराज्य: शाक्य (बुद्ध का जन्म), कोलिय (यशोधरा), मोरिय (चंद्रगुप्त मौर्य का मूल) – ये सब इतिहास-निर्माता गणराज्य थे।
6. लोथल का डॉकयार्ड: 2400 ई.पू. का यह डॉकयार्ड भारतीय समुद्री परंपरा की 4500 वर्ष प्राचीन नींव है।
7. हिंद-रोम व्यापार: 50 मिलियन सेस्टर्शियस/वर्ष के व्यापार-अधिशेष के साथ भारत ने रोम का सोना खींचा – यह विश्व के प्रथम 'Trade Surplus' का उदाहरण है।
8. बंदरगाह-नेटवर्क: भृगुकच्छ, मुजिरिस (पश्चिम) और ताम्रलिप्ति, कावेरीपट्टनम (पूर्व) – दोनों तटों पर विश्व-स्तरीय बंदरगाह।
9. चोल नौसेना: 'श्रीविजय अभियान' (1025 ई.) भारतीय समुद्री शक्ति का सर्वोच्च बिंदु था – दक्षिण-पूर्व एशिया पर भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव का प्रमाण।

10.समकालीन प्रासंगिकता: SAGARMALA, Maritime India Vision 2030, QUAD – ये सब प्राचीन भारतीय समुद्री विरासत के आधुनिक विस्तार हैं।

8.14 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
जनपद	'जन' (लोग) + 'पद' (स्थान) – लोगों का राजनीतिक-भौगोलिक क्षेत्र; प्राचीन भारतीय राज्य-इकाई
महाजनपद	600-300 ई.पू. के 16 प्रमुख और शक्तिशाली जनपद
गण-संघ (Gana-sangha)	गणतांत्रिक राज्य; सामूहिक नेतृत्व; वज्जि संघ इसका श्रेष्ठ उदाहरण
सन्निपात	वज्जि संघ की संसद-सभा; समस्त सदस्यों की नियमित बैठक
अंगुत्तरनिकाय	पाली भाषा का बौद्ध ग्रंथ जिसमें 16 महाजनपदों का उल्लेख
हर्यंक वंश	मगध का प्रथम ऐतिहासिक राजवंश; बिम्बिसार और अजातशत्रु
लोथल	गुजरात का सिंधु-सभ्यता नगर (2400 ई.पू.); विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड
पेरीप्लस	'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' (60-100 ई.) – भारतीय बंदरगाहों का यूनानी विवरण
भृगुकच्छ (Bharuch)	गुजरात का प्राचीन बंदरगाह; रोम-भारत व्यापार का प्रमुख केंद्र
मुजिरिस	केरल का प्राचीन बंदरगाह; काली मिर्च-व्यापार; रोमन जहाजों का मुख्य केंद्र
ताम्रलिप्ति	पश्चिम बंगाल का प्राचीन बंदरगाह; दक्षिण-पूर्व एशिया व्यापार
श्रीविजय अभियान	राजेंद्र चोल प्रथम का सुमात्रा-अभियान (1025 ई.); समुद्री शक्ति का चरम
मानसून (Monsoon)	हिंद महासागर की मौसमी वायु जिसे भारतीय नाविकों ने सर्वप्रथम व्यापार में प्रयोग किया

नावाध्यक्ष	कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित जहाजों और नौसेना का अधीक्षक
SAGARMALA	भारत सरकार की बंदरगाह-विकास योजना; प्राचीन समुद्री परंपरा का आधुनिक रूप
Project Mausam	UNESCO की परियोजना; भारतीय मानसून-आधारित व्यापार-मार्गों की पुनर्खोज
'सप्तसिंधव'	सात नदियों की भूमि (ऋग्वेद में); सिंधु-सभ्यता का उद्गम-क्षेत्र
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम का केंद्र

8.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

1. सोलह महाजनपदों का वर्गीकरण करते हुए राजतांत्रिक और गणतांत्रिक जनपदों की तुलना कीजिए। वज्जि संघ की शासन-व्यवस्था का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. मगध महाजनपद के उत्थान के कारणों का विश्लेषण कीजिए। इसके प्रमुख शासकों और उनके योगदान का वर्णन कीजिए।
3. प्राचीन भारत में समुद्री वाणिज्य का विकास-क्रम समझाइए। लोथल से चोल नौसेना तक की यात्रा का विवेचन कीजिए।
4. हिंद-रोम व्यापार की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। भारत के प्रमुख पश्चिमी बंदरगाहों और उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

1. वज्जि संघ के सात स्वर्णिम नियमों का उल्लेख कीजिए।
2. शाक्य गणराज्य का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व बताइए।
3. 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' ग्रंथ में भारत के विषय में क्या जानकारी मिलती है?
4. भारतीय नाविकों ने मानसून का उपयोग किस प्रकार किया?
5. चोल साम्राज्य के 'श्रीविजय अभियान' का महत्त्व बताइए।
6. भारत के पूर्वी तट के तीन प्रमुख प्राचीन बंदरगाहों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

1. महाजनपदों का उल्लेख किस ग्रंथ में मिलता है? (अ) ऋग्वेद (ब) अंगुत्तरनिकाय (स) महाभारत (द) अर्थशास्त्र
2. वज्जि संघ की राजधानी कौन-सी थी? (अ) पाटलिपुत्र (ब) राजगृह (स) वैशाली (द) श्रावस्ती
3. विश्व का प्राचीनतम ज्ञात डॉकयार्ड कहाँ मिला? (अ) धोलावीरा (ब) हड़प्पा (स) लोथल (द) मोहनजोदड़ो
4. 'पेरीप्लस' किस भाषा में लिखा गया था? (अ) लैटिन (ब) संस्कृत (स) यूनानी (द) पाली

5. चोल साम्राज्य का 'श्रीविजय अभियान' किसने किया? (अ) राजराज चोल (ब) राजेंद्र चोल (स) कुलोत्तुंग (द) विक्रम चोल
6. भारत-रोम व्यापार में रोम से भारत आने वाली मुख्य वस्तु क्या थी? (अ) काली मिर्च (ब) मलमल (स) सोना-चाँदी (द) हाथी-दाँत
7. शाक्य गणराज्य की राजधानी कहाँ थी? (अ) श्रावस्ती (ब) कपिलवस्तु (स) वाराणसी (द) राजगृह

8.16 अपनी प्रगति जाँचें – उत्तर (Answers to Check Your Progress)

8.4 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

1. महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तरनिकाय' में मिलता है।
2. वज्जि संघ में कुल 8 सदस्य-राज्य थे जिनमें 'लिच्छवि' सर्वप्रमुख था।
3. गांधार की राजधानी 'तक्षशिला' थी जो 'तक्षशिला विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध थी।
4. अवंति की दो राजधानियाँ 'उज्जैन' और 'माहिष्मती' थीं।

(ब) सही/गलत:

1. गलत (✗) – काशी (वाराणसी) एक स्वतंत्र महाजनपद था, मगध की राजधानी नहीं।
2. सही (✓) – मल्ल महाजनपद एक गणतांत्रिक राज्य था (राजधानी: कुशीनगर)।
3. गलत (✗) – अश्मक दक्षिण भारत (गोदावरी तट) का एकमात्र महाजनपद था।
4. सही (✓) – शूरसेन की राजधानी मथुरा थी जो कृष्ण से संबंधित है।

8.6 के उत्तर:

1. शाक्य गणराज्य: इसी गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम का जन्म (563 ई.पू.) हुआ जो बाद में गौतम बुद्ध बने – यही इसका विश्व-ऐतिहासिक महत्त्व है।
2. वज्जि के तीन नियम: (1) नियमित सभाएँ करना, (2) एकमत से निर्णय लेना, (3) वृद्धों का आदर करना।
3. मगध के पाँच चरण: हर्यंक (बिम्बिसार) → अजातशत्रु → शिशुनाग → नंद → मौर्य (चंद्रगुप्त)।
4. कोलिय और बुद्ध: बुद्ध की पत्नी यशोधरा कोलिय गणराज्य की थीं; शाक्य और कोलिय पड़ोसी थे।

8.8 के उत्तर:

1. 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' एक यूनानी नाविक द्वारा लगभग 60-100 ई. में लिखा गया।
2. लोथल में मिला डॉकयार्ड लगभग 2400 ई.पू. का है और गुजरात में स्थित है।
3. रोमन लेखक 'प्लिनी द एल्डर' ने भारत से 50 मिलियन सेस्टर्शियस/वर्ष के व्यय का उल्लेख किया।
4. ताम्रलिप्ति बंदरगाह वर्तमान 'पश्चिम बंगाल' राज्य में स्थित है।

सही मिलान:

बंदरगाह	सही तट/क्षेत्र
मुजिरिस	पश्चिमी तट (केरल) – सही
ताम्रलिप्ति	पूर्वी तट (पश्चिम बंगाल) – सही
भृगुकच्छ	पश्चिमी तट (गुजरात) – सही
कावेरीपट्टनम	पूर्वी तट (तमिलनाडु) – सही
नागपट्टनम	पूर्वी तट (तमिलनाडु) – सही

8.11 के उत्तर:

5. मानसून का उपयोग: ग्रीष्मकालीन SW मानसून से भारत→अरब यात्रा और शीतकालीन NE मानसून से वापसी – यह प्राकृतिक वायु-चक्र भारतीय नाविकों की सर्वश्रेष्ठ खोज थी।
6. श्रीविजय अभियान: यह भारतीय इतिहास का सर्वप्रथम और सर्वाधिक दूरस्थ समुद्री सैन्य अभियान था जिसने सुमात्रा, मलेशिया, बर्मा पर नियंत्रण स्थापित किया।
7. अंगकोर वाट: यह कम्बोडिया में है – विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर। यह भारतीय समुद्री प्रसार का प्रमाण है – भारतीय व्यापारी और ब्राह्मण यहाँ आए और हिंदू संस्कृति फैली।
8. बेयपोर की ऊरु नाव: केरल के बेयपोर में 400 वर्ष से अधिक पुरानी परंपरा से सागौन की लकड़ी से हाथ से बनाई जाती है – प्राचीन भारतीय जहाज-निर्माण की जीवित विरासत।

तालिका (पूर्ण):

समुद्री अभियान	चोल शासक
श्रीलंका-विजय	राजराज चोल प्रथम
श्रीविजय अभियान	राजेंद्र चोल प्रथम
मालदीव नियंत्रण	राजेंद्र चोल प्रथम

वस्तुनिष्ठ उत्तर (8.15 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब) अंगुत्तरनिकाय
2	(स) वैशाली
3	(स) लोथल
4	(स) यूनानी
5	(ब) राजेंद्र चोल
6	(स) सोना-चाँदी
7	(ब) कपिलवस्तु

8.17 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ:

- अंगुत्तरनिकाय (पाली) – B.C. Law अनुवाद; Pali Text Society, London
- दीघनिकाय – महापरिनिब्बानसुत्त (T.W. Rhys Davids अनुवाद)
- कौटिल्य – अर्थशास्त्र – नावाध्यक्ष और जनपद-प्रबंधन प्रकरण

- पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (यूनानी; Wilfred Schoff अनुवाद, 1912)
- ऋग्वेद – समुद्र-सूक्त और जन-वर्णन
- महाभारत – सभापर्व, शांतिपर्व (जनपद-वर्णन)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- हेमचंद्र रायचौधरी – प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, कलकत्ता
- वाचस्पति गैरोला – भारतीय राजनीतिक चिंतन
- राधाकुमुद मुखर्जी – भारतीय जहाजरानी का इतिहास
- संजीव सान्याल – भारत के महासागर की कथा (हिंदी अनुवाद, Penguin)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- R.S. Sharma – Aspects of Political Ideas & Institutions in Ancient India, Motilal
- U.N. Ghoshal – A History of Indian Political Ideas, Oxford University Press
- K.M. Panikkar – India and the Indian Ocean, George Allen & Unwin, London
- Sanjeev Sanyal – The Ocean of Churn (History of Indian Ocean), Penguin
- Romila Thapar – A History of India (Vol. 1), Penguin Books
- Lionel Casson – The Periplus Maris Erythraei, Princeton University Press

ऑनलाइन संसाधन:

- https://sagarmala.gov.in – SAGARMALA परियोजना, भारत सरकार
- https://asi.nic.in – Archaeological Survey of India (लोथल जानकारी)
- https://www.ignca.gov.in – इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in – शोध-प्रबंध भंडार
- https://projectmausam.gov.in – Project Mausam – UNESCO / Ministry of Culture
- https://www.education.gov.in/nep – NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल